उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

मानविकी विद्याशाखा

कथा साहित्य (भाग एक)

तृतीय सेमेस्टर 601

सीमित वितरण हेतु पूर्व प्रकाशन प्रति

विशेषज्ञ समिति

प्रो.एच.पी.शुक्ल निदेशक, मानविकी विद्याशाखा, उत्तराखण्ड मुक्तविश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल	प्रो. सत्यकाम हिन्दी विभाग इग्नू, नई दिल्ली
प्रो.आर.सी.शर्मा , हिन्दी विभाग अलीगढ़ विश्वविद्यालय, अलीगढ़	
डा. राजेन्द्र कैड़ा असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल	डा. शशांक शुक्ला असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी, नैनीताल

पाठ्यक्रम समन्वयक, संयोजन एवं संपादन

डा. राजेन्द्र कैड़ा असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल	डा. शशांक शुक्ला असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल

इकाई लेखक	इकाई संख्या
डॉ. नन्द किशोर ढ़ौढ़ियाल पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटद्वार	1, 2, 3,
डॉ. प्रीति आर्या एस. एस. जे. परिषर, हिंदी विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय अल्मोड़ा	4, 5, 6
डॉ. सुनील पाण्डेय उप- संपादक, परमिता, त्रैमासिक शोध पत्रिका	7, 8

कापीराइट@उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

संस्करण: 2022
सीमित वितरण हेतु पूर्व प्रकाशन प्रति
प्रकाशकः उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी ,नैनीताल -263139
मुद्रक : प्रीमियर प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी ,नैनीताल -263139

ISBN - 978-93-84632-71-7

तृतीय सेमेस्टर 601

खण्ड 1 कथा साहित्य का विकास	पृष्ठ संख्या
इकाई 1 हिंदी गद्य का उद्भव एवं विकास	1-20
इकाई 2 हिंदी कहानी का उद्भव एवं विकास	21-37
इकाइ्र 3 हिंदी उपन्यास का उद्भव एवं विकास	38-53
कथा साहित्य का तात्विक विवेचन	पृष्ठसंख्या
इकाई 4 कहानी का स्वरूप, भेद व तत्व	54-70
इकाई 5 उपन्यास का स्वरूप, भेद व तत्व	71-84
इकाई 6 उपन्यास व कहानी में अंतर	85-91
खण्ड 3 हिंदी कहानी: पाठ एवं स्वरूप	पृष्ठ संख्या
इकाई 7 उसने कहा था: पाठ एवं विवेचन	92-101
इकाई 8 उसने कहा था: विश्लेषण और मूल्यांकन	102-113

इकाई1 - हिन्दी गद्य का उद्भव व विकास

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 गद्य साहित्य
1.4 हिन्दी गद्य की पृष्ठ भूमि
1.4.1 ब्रज भाषा में गद्य
1.4.2 खड़ी बोली में गद्य
1.5 हिन्दी गद्य का उद्भव व विकास
1.5.1 हिन्दी गद्य के उद्भव व विकास के कारण
1.5.2 प्रारम्भिक गद्य लेखन
1.5.3 अंग्रेजों की भाषा नीति
1.6 भारतेन्दु युग
1.7 द्विवेदी युग
1.8 प्रेमचन्द और उनके पश्चात्
1.9 सारांश
1.10 शब्दावली
1.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.12 उपयोगी पाठ्य सामग्री
1.13 निबंधात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

स्नातकोत्तर द्वितीय वर्ष के अन्तर्गत यह प्रथम इकाई है। इसमें हिन्दी गद्य के उद्भव विस्तार एवं विकास के विषय में चर्चा की गई है। हिन्दी साहित्य इतिहास के आधुनिक युग से पूर्व का साहित्य मुख्यतः कविता में है। इससे पूर्व गद्य की कुछ रचनाएँ अवश्य प्राप्त हुई हैं, लेकिन हिन्दी साहित्य परम्परा में उनका विशेष महत्व नहीं है गद्य का वास्तविक लेखन आधुनिक युग से हुआ, ऐसा क्यों हुआ तथा गद्य के विकास की स्थिति क्या रही, हम इस इकाई में इसी विषय पर विचार करेंगे।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई में हिन्दी गद्य के उद्भव व विकास पर प्रकाश डाला गया है। इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आपः

- गद्य एवं पद्य में अन्तर कर सकेंगे।
- हिन्दी गद्य के उद्भव व विकास के विषय में जान सकेंगे।
- ब्रज भाषा तथा खडी़ बोली के गद्य के सम्बन्ध में जानकारियाँ प्राप्त कर सकेंगे।
- अंग्रेजी शासन काल में भाषा सम्बन्धी विभिन्न दृष्टिकोणों को समझ सकेंगे।
- खडी़ बोली की प्रारम्भिक स्थितियों का उल्लेख कर सकेंगे।
- भारतेन्दु तथा द्विवेदी युग के गद्य साहित्य के उद्भव और विकास का उल्लेख कर सकेंगे।
- प्रेमचन्द एवं उनके पश्चात् के गद्य साहित्य के उद्भव व विकास पर संक्षेप में प्रकाश डाल सकेंगे।
- विभिन्न गद्यकारों के योगदान का उल्लेख कर सकेंगे।

1.3 गद्य साहित्य

आपने अब तक अनेक उपन्यास कहानी और निबन्ध पढ़े होंगे, किन्तु क्या कभी आपने विचार किया है कि साहित्य की इन विधाओं का विकास कैसे हुआ? इस इकाई के अन्तर्गत हम इस विषय पर चर्चा करेंगे कि गद्य का उद्भव और विकास कैसे हुआ ? आपने कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास, केशवदास आदि की रचनाएँ पढ़ी होंगी, इससे आपको अनुभव हुआ होगा कि कबीर, तुलसीदास, सूरदास और केशवदास की रचनाएँ उपन्यास और कहानी से भिन्न प्रकार की रचनाएँ हैं। साहित्य की भाषा में कबीर, तुलसीदास, आदि की रचनाओं को छन्दोबद्ध रचना या कविता कहा जाता है, जबकि उपन्यास, कहानी, निबन्ध आदि को गद्य । इस अन्तर को और अधिक स्पष्ट रूप में जानने के लिए आप कबीरदास की इन पंक्तियों को पढिए ।

बकरी पाती खात है, ताकी काढ़ी खाल,
जो बकरी को खात है, तिनको कौन हवाल।।

अब नीचे दी गई इन पंक्तियों की तुलना कबीरदास की उपरोक्त रचना से कीजिए। (निम्नलिखित पंक्तियाँ डॉ0 पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल के निबन्ध कबीर और गाँधी से उद्धृत की गई है।)

''यदि कबीर अपनी ही कविता के समान सीधी सादी भाषा में उल्लिखित आदर्श हैं तो गाँधी उसकी और भी सुबोध क्रियात्मक व्याख्या, यदि प्रत्येक व्यक्ति इस विशद व्याख्या की प्रतिलिपि बन सके तो जगत का कल्याण हो जाय।"

उपरोक्त दोनों उदाहरणों की तुलना करने पर आप स्पष्ट रूप से जान जायेंगे कि भाषा के इन दो प्रयोगों में क्या भिन्नता है? छन्दोबद्ध कविता में गेयता तथा लय होती है, जबकि गद्य में भाषा व्याकरण के अनुरूप होती है। आरम्भ में समस्त संसार के साहित्य में काव्य रचना का प्रमुख स्थान था। भारत में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य इसी काव्य कला के अनुपम

उदाहरण हैं। काव्य के अतिरिक्त नाटकों में काव्य भाषा का प्रयोग अधिक हुआ। प्रश्न यह कि आधुनिक युग से पहले गद्य की अपेक्षा कविता में ही रचना क्यों होती थी? उत्तर है कि कविता को गेयता, छन्दबद्धता और लय के कारण याद रखना सरल था। प्राचीन काल में मुद्रण कला का अभाव था, इसलिए पीढ़ी-दर-पीढ़ी साहित्य को मौखिक परम्परा से आगे बढ़ाने में कविता भाषा सहायक थी। प्राचीन काल में गद्य में भी साहित्य रचना होती थी लेकिन इन रचनाओं की संख्या सीमित थी। उस युग में भावों की अभिव्यक्ति के लिए जहाँ काव्य रचना की जाती थी वहाँ सैद्धान्तिक निरूपण के लिए गद्य का प्रयोग होता था। इसका सबसे अच्छा उदाहरण संस्कृत साहित्य का लक्षण ग्रन्थ '' काव्य प्रकाश'' है जिसमें भावों को प्रकट करने के लिए कविता का प्रयोग हुआ है तो सिद्धान्त निरूपण के लिए संस्कृत गद्य का।

अब आपके मन में रह रहकर यह प्रश्न उत्पन्न हो रहा होगा कि आधुनिक युग में कविता की प्रमुखता होने पर भी गद्य में लेखन क्यों आरम्भ हुआ। इसके क्या कारण थे? आदि काल में परस्पर विचार- विनिमय के लिए एक भिन्न प्रकार की भाषा का प्रयोग होता था। यह सामान्य बोल-चाल की भाषा थी, जो कि कविता भाषा से भिन्न थी। भाषा के इसी रूप को गद्य कहा गया था। भाषा का यह रूप जो उसकी व्याकरणिक संरचना के सबसे अधिक निकट हो, गद्य कहलाता है, जबकि पद्य में व्याकरणिक नियमों की नहीं छन्द, लय और भावों की प्रधानता होती है। गद्य लेखन पहले भी था लेकिन मुद्रण प्रणाली के अस्तित्व में आने के पश्चात् ही प्रचलन में आया। आज सभी पत्र पत्रिकाओं और पुस्तकों के लेखन में इस गद्य भाषा का प्रयोग हो रहा है।

1.4 हिन्दी गद्य की पृष्ठ भूमि

हिन्दी गद्य साहित्य का उद्भव और विकास कैसे हुआ? इस पर चर्चा करने के साथ-साथ ही हम अब यहाँ पर यह भी विचार करेंगे कि हिन्दी गद्य किस भाँति विकसित होकर वर्तमान स्वरूप को प्राप्त हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी से पूर्व हिन्दी भाषा में गद्य रचनाएँ अधिक नहीं थी। उस समय ब्रजभाषा साहित्य की भाषा थी। जिसमें भाव-विचार की अभिव्यक्ति के लिए कविता भाषा का ही प्रयोग होता था लेकिन बोलचाल की भाषा गद्य थी। ब्रजभाषा के बोल-चाल के इस रूप का प्रयोग गद्य रचनाओं में होता था। हिन्दी गद्य विकास की दृष्टि से इन रचनाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए इन प्रारम्भिक रचनाओं के इस रूप से परिचय होना भी अनिवार्य है।

1.4.1 ब्रजभाषा गद्य :-

जैसा कि आप जानते हैं कि विद्वानों की भाषा सामान्य जन की भाषा से भिन्न होती है। जिस समय ब्रजभाषा में कविता का सृजन हो रहा था, उसी समय जन सामान्य पारस्परिक बोल-चाल में ब्रजभाषा के गद्य रूप का प्रयोग करता था। लेकिन जब किसी संत महात्मा या कवि को अपने पंथ, सम्प्रदाय या मत के शुभ सन्देश सामान्य जनता तक पहुँचाने होते थे, वे अपनी

कविता भाषा को छोड़कर ब्रजभाषा की बोल चाल की भाषा का ही प्रयोग करते थे। उनकी यही बोल चाल की भाषा धीरे-धीरे साहित्य की गद्य भाषा भी बनी। इसके साथ ही अनेक काव्य ग्रन्थों को सामान्य जनता तक पहुँचाने के लिए विद्वानों ने टीकाएं भी लिखीं, ये टीकाएं भी गद्य भाषा में होती थीं। इस युग की गद्य- रचना का एक उदाहरण दृष्टव्य है।

"सो वह पुरूष सम्पूर्ण तीर्थ स्थान करि चुकौ, अरू सम्पूर्ण पृथ्वी ब्राहमननि को दे चुको, अरू सहस्र जज्ञ कटि चुकौ, अरू देवता सब पूजि चुकौ, पराधीन उपरान्ति बन्धन नहीं, सुआधीन उपरान्त मुकति नाहीं, चाहि उपरान्त पाप नाहीं, अचाहि उपरान्त पुति नाहीं", (हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास- बाबू गुलाब राय -पृष्ठ 110)

उपरोक्त रचना अंश 'गोरख-सार' का गद्यांश है, जिसे संवत् 1400 की रचना माना जाता है। इसके अतिरिक्त महाप्रभु बल्लभाचार्य के पुत्र गोसाई विट्ठलनाथ जी ने ब्रज भाषा गद्य में 'श्रृंगार मण्डन' लिखा, इनके बाद इनके पौत्र गोकुल नाथ ने ब्रजभाषा में चौरासी बैष्णव की वार्ता' तथा दो सौ बावन बैष्णवन की वार्ता'' लिखी, इनमें बैष्णव भक्तों की महिमा व्यक्त करने वाली कथाएं लिखी हैं। इन सबकी गद्य भाषा व्यस्थित एवं बोल चाल रूप में हैं। इस भाषा का एक उदाहरण प्रस्तुत है।

''सो श्री नंदगाम में रहा हतो, सो खंडन, ब्राहमण शास्त्र पढयों हतो, सो जितने पृथ्वी पर मत हैं सबको खण्डन करतो, ऐसो वाको नेम हतो। याही से सब लोगन ने वाको नाम खण्डन पाखो हतो,'' (हिन्दी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल)

इसी भाँति 1660 विक्रम संम्वत् के आस-पास भक्त नाभादास की ब्रजभाषा गद्य में लिखी 'अष्टयाम' नामक रचना प्रकाश में आयी, इसकी भाषा सामान्य बोलचाल की है। उस युग में ब्रजभाषा में गद्य की रचना कम ही होती थी। लेकिन इसका मुख्य कारण था। ब्रजभाषा में गद्य की क्षमता का विकास न हो पाना, क्योंकि ब्रजभाषा एक सीमित क्षेत्र में बोली जाती थी। इसलिए वह ब्रज मण्डल के बाहर सम्पर्क भाषा के रूप में विकसित नहीं हो पायी, जिससे इसमें गद्य का विकास उस तरह नहीं हो पाया जिस तरह से होना चाहिए था। इसी कारण खड़ी बोली ही गद्य भाषा को विकसित करने में अधिक सार्थक हुई।

1.4.2 खड़ी बोली में गद्य :-

ब्रजभाषा गद्य भाषा की परम्परा आगे न बढ़ाने के कारण खड़ी बोली में गद्य का विकास होने लगा, इसका सबसे बड़ा कारण था खड़ी बोली का जन साधारण की भाषा होना, ब्रजभाषा के पश्चात् इस भाषा में साहित्य का सृजन होने लगा, चूँकि खड़ी-बोली का क्षेत्रफल बड़ा था। इसलिए यह धीरे-धीरे पद्य और गद्य भाषा बनने लगी। फिर तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों ने भी खड़ी बोली के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

14वीं शताब्दी में खड़ी बोली दिल्ली के आस पास की भाषा थी। इसलिए मुगलकाल में यह शासन और जनता की सम्पर्क भाषा बनी। चूँकि मुगलों की मातृ भाषा फारसी थी, इसलिए जब यह खड़ी बोली के सम्पर्क में आयी तो इसकी शब्दावली खड़ी बोली में प्रवेश करने लगी और इससे फारसी मिश्रित खड़ी बोली का जन्म हुआ, शिक्षित लोग इस भाषा को

फारसी लिपि में लिखने लगे, तब इस नई शैली को हिन्दवी, रेख्ता और आगे चलकर उर्दू नाम दिया गया। कवियों ने इस भाषा में शायरी आरम्भ कर दी, चौदवीं शताब्दी में अमीर खुसरो ने खड़ी बोली में रची गई एक पहेली दृष्टव्य है-

एक थाल मोती से भरा, सबके ऊपर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाली फिरे, मोती उससे एक न गिरे।।

अमीर खुसरों के पश्चात् खड़ी-बोली का विकास दक्षिण राज्यों के रचनाकारों ने किया। दक्खिनी हिन्दी के रूप में वहाँ 14 वीं शताब्दी से 18 वीं शताब्दी तक अनेक ग्रन्थों की रचनाऐं हुई, जिनमें गद्य रचनाओं का भी मुख्य स्थान है। ख्वाजा बन्दा नवाज़ गैसू दराज (1322-1433) शाह मीराँ जी (-1496) बुरहानुद्दीन जानम (1544-1583) और मुल्ला वजही जैसे साहित्यकारों ने काव्य रचनाओं के साथ गद्य ग्रन्थ भी लिखे। मुल्ला वजही ने 1635 ई0 में अपने प्रसिद्ध गद्य-ग्रन्थ ''सब रस'' की रचना की जिसका आरम्भ इस प्रकार से होता है-

''नकल-एक शहर था। शहर का नाउं सीस्तान, इस सीस्तान के बादशाह का नाउं अक्ल, दीन और दुनिया का सारा काम उस तै चलता, उसके हुक्मवाज जरी कई नई हिलता........... वह चार लोकों में इज्जत पाए''। (दक्खिनी हिन्दीः विकास और इतिहास- डॉ0 परमानन्द पांचाल)।।

इसी दक्खिनी हिन्दी का एक रूप खड़ी बोली भी थी । यो तो यह खड़ी बोली प्रारम्भ में कबीर, खुसरो, कवि गंग और रहीमदास की कविता की भाषा बन चुकी थी, लेकिन गद्य भाषा के रूप में इसका प्रयोग अंग्रेज पादरी और अफसरों ने किया क्योंकि वे इस गद्य भाषा के माध्यम से जनता तक पहुँचता चाहते थे। सन् 1570 में मुगल बादशाह के दरबारी कवि गंग की प्रसिद्ध रचना ''चंद छन्द बरनन की महिमा'' में हिन्दी खडी़ बोली के जिस गद्य रूप के दर्शन होते हैं वह शिष्ट और परिष्कृत खडी़ बोली का गद्य है।

''इतना सुनके पातसाह जी श्री अकबर साह जी आध सेन सोना नरहा चारक को दिया। इनके डेढ़ सेर सोना हो गया, रास वचना पूरा भया, आम खास बारखास हुआ।'' (हिन्दी साहित्य का इतिहास - रामचन्द्र शुक्ल - पृष्ठ 281)

प्रस्तुत उदाहरण से ऐसा लगता है यह आज की शुद्ध परिमार्जित गद्य रचना है इसके पश्चात् खड़ी बोली ने साहित्य में अपना स्थान बना लिया और इससे तेजी से गद्य का विकास हुआा।

अभ्यास प्रश्न

आपने अब तक खडी़ बोली गद्य के प्रारम्भिक स्वरूप का परिचय प्राप्त किया। आपका ज्ञान जानने के लिए अब नीचे कुछ बोध प्रश्न दिये गए हैं। इनका उत्तर दीजिये। पाठ के अन्त में इन प्रश्नों के उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए, इससे आपको ज्ञात होगा कि आपने ठीक उत्तर दिये हैं या नहीं।

(1) प्राचीन काल में साहित्य की रचना कविता में होती थीं, नीचे दिये कारणों में तीन सही और एक गलत है, गलत कारण के सामने (×) का निशान लगायें।

1. कविता में गेयता होती है, इससे इसको याद रखना सरल है।
2. प्राचीन काल में मुद्रण की आधुनिक प्रणाली का विकास नहीं हुआ था।
3. कविता अभिव्यक्ति का सबसे अक्षम रूप है।
4. प्राचीन काल में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाश नहीं होता था।

(2) भक्त नाभादास की ''अष्टयाम'' की रचना निम्नलिखित विक्रम सम्वत् में हुई। सही विकल्प के सामक्ष (√) चिह्न लगाए।

1. विक्रम सम्वत् 14400 में ( )
2. विक्रम सम्वत् 1500 में ( )
3. विक्रम सम्वत् 1660 में ( )
4. किक्रम सम्वत् 1700 में ( )

(3) नीचे कुछ पुस्तकों के नाम दिये गए हैं। उनके रचनाकारों का नाम लिखिए।

1. श्रृंगार मण्डन ( )
2. चौरासी बैष्णव की वार्ता ( )
3. सब रस ( )
4. चंद छन्द बरनन की महिमा ( )

1.5 हिन्दी ग़द्य का उद्भव व विकास

खड़ी बोली गद्य का जो रूप वर्तमान में हमारे समक्ष है वह सहजता से विकसित नहीं हुआ, अपितु इसके इस रूप निर्माण में अनेक परिस्थितियों, संस्थाओं और व्यक्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही, जिनकी चर्चा हम यहाँ करने जा रहे हैं।

1.5.1 हिन्दी गद्य के उद्भव व विकास के कारण :-

भारत में अंग्रजी साम्राज्य की स्थापना से यहाँ परिवर्तनों की जो श्रृंखला प्रारम्भ हुई, इसका भारतीय जनजीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा; इनमें से कई परिवर्तनों का सीधा-सीधा सम्बन्ध हिन्दी गद्य विकास से भी है। इनका संक्षिप्त विवरण नीचे दिये जा रहा है। जैसा आप जानते हैं भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है। यहाँ हिन्दु, मुसलमान, ईसाई सभी परस्पर मिलकर इस देश के विकास में अपना योगदान देते हैं। दक्षिण भारत के केरल और पूर्वी भारत के छोटे-छोटे राज्यों में ईसाई धर्म को मानने वालों की संख्या काफी है। आज से कई सौ वर्ष पूर्व ईसाई धर्म प्रचारक इस देश में आये। जब भारत पर अंग्रेजों का साम्राज्य हुआ तो इन ईसाई धर्म प्रचारकों ने अपनी गतिविधियाँ तेज कर दी, इनकी इन्ही गतिविधियों ने हिन्दी गद्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। चूँकि उस युग में जन सामान्य की बोल चाल की भाषा हिंदी गद्य थी। इसलिए इन धर्म

प्रचारकों ने जनता में अपने धर्म का प्रचार करने के लिए छोटी-छोटी प्रचार पुस्तकों का निर्माण हिन्दी गद्य में किया। इसी क्रम में 'बाइबिल' का हिन्दी गद्यानुवाद प्रकाशित हुआ। जिससे हिंदी गद्य का काफी विकास हुआ।

नवीन आविष्कार- अंग्रेजों ने अपनी स्थति को और सुदृढ़ करने के लिए मुद्रण, यातायात और दूरसंचार के नये साधनों का प्रयोग किया। ईस्ट इंडिया कम्पनी ने सन् 1844 से सन् 1856 तक इस देश में रेल और तार के साधन जोड़ दिये थे। यातायात के तेज संसाधनों से पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। अनेक पुस्तक प्रकाशित हुई जिससे हिन्दी गद्य लेखन का भी तीव्रता से विकास हुआ।

शिक्षा का प्रसार- सन् 1835 में लार्ड मैकाले ने भारत में शिक्षा प्रसार के लिए अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को जन्म दिया। इससे पूर्व इस देश की शिक्षा फारसी और संस्कृत के माध्यम से दी जाती थी। लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति से जहाँ-जहाँ भी शिक्षा दी जाती थी, उन स्कूल कॉलेजों में हिन्दी, उर्दू पढ़ाने की विशेष व्यवस्था होती थी। सन् 1800 ई0 में स्थापित फोर्ट विलियम कॉलेज में सन् 1824 में हिन्दी पढ़ाने का विशेष प्रबन्ध हुआ। इससे पूर्व सन् 1823 में आगरा कॉलेज भी स्थापना हुई जिसमें हिन्दी शिक्षा का विशेष प्रबन्ध हुआ। इसने कॉलेजों में हिन्दी शिक्षा समुचित रूप से संचालित हो इसके लिए हिन्दी के अच्छे पाठ्यक्रम बनाये। इस शिक्षा विस्तार से भी हिन्दी गद्य का अच्छा विकास हुआ।

समाज सुधार आन्दोलन- 19 वीं शताब्दी समाज सुधार की शताब्दी थी। इस सदी में भारतीय समाज में व्याप्त बुराइयों को समाप्त करने के लिए अनके आन्दोलन हुए। चूँकि समाज सुधार के आन्दोलनों को जिन नेताओं ने संचालित किया उन्हें जनता तक अपनी बात पहुँचाने के लिए भाषा की आवश्यकता पड़ी। 'ब्रहम समाज' के संस्थापक राजा राममोहन राय ओर आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द ने अपने-अपने मतों को समाज तक पहुँचाने के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया वह हिन्दी भाषा थी। इसी से हिन्दी गद्य को एक नया रूप मिला।

पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन- मुद्रण की सुविधा से पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन होने लगा जिनके माध्यम से अनके गद्य लेखक लिखने लगे। 30 मई सन् 1826 ई0 में कलकत्ता से पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने 'हिन्दी' के प्रथम पत्र 'उदन्त-मार्तण्ड' का प्रकाशन प्रारम्भ किया। यह हिन्दी का साप्ताहिक पत्र था। हिन्दी के पाठकों की संख्या कम हाने के कारण यह 4 दिसम्बर सन् 1827 को बन्द हो गया। इस पत्र के माध्यम से भी हिन्दी गद्य का विकास हुआ। 9 मई सन् 1829 को कलकत्ता से हिन्दी के दूसरे पत्र 'बंगदूत' का प्रकाशन हुआ। इसी तरह कोलकाता से प्रजामित्र' सन् 1845 में 'बनारस' से 'बनारस अखबार, सन् 1846 में 'मार्तण्ड' जैसे समाचार पत्रों का प्रकाशन हुआ। इन सबकी गद्य भाषा हिन्दी थी। इस तरह 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध में हिन्दी पत्र पत्रिकाओं की बाढ़ सी आ गई। इन्ही पत्र पत्रिकाओं ने हिन्दी गद्य को और अधिक विकसित और परिमार्जित किया।

1.5.2 प्रारम्भिक गद्य लेखन :-

सन् 1803 ई0 में फोर्ट विलियम कालेज कलकत्ता के हिन्दी उर्दू प्राध्यापक जॉन गिलक्राइस्ट ने हिन्दी और उर्दू में पुस्तकें लिखवाने के लिए कई मुंशियों की नियुक्ति की । इन मुंशियों में 'नियाज' मुंशी इंशा अल्ला खाँ जैसे हिन्दी-उर्दू के विद्वान थे जिन्होंने हिन्दी गद्य को एकरूपता प्रदान की।

मुंशी सदासुखलाल नियाज- जन्म सं. 1803 मृत्यु सं. 1881 - दिल्ली निवासी मुंशी सदासुखलाल, फारसी के अच्छे कवि और लेखक थे। इन्होंने 'बिष्णु पुराण' के उपदेशात्मक प्रसंग को लेकर एक पुस्तक लिखीं इसके पश्चात् मुंशी जी ने श्रीमद्भागवत कथा के आधार पर 'सुख सागर' की रचना की जिसका गद्य व्यवस्थित और निखरा हुआ है। इनकी इस गद्य भाषा का एक उदाहरण निम्नवत् है-

''मैत्रेय जी ने कहा'' हे विदुर प्रचेता लोग साधु व बैष्णव की बड़ाई व परमेश्वर के मिलने के उपाय महादेव जी से सुनकर आनन्द पूर्वक बीच पढ़ने वाले स्रोतों को व करने ध्यान नारायण जी को लीन हुए। जब उनको इस हजार वर्ष हरि भजन करते बीत गए तब परमेश्वर ने प्रसन्न होकर दर्शन देके बड़े हर्ष से उन्हें वरदान दिया''(हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास- बाबू गुलाब राय - पृष्ठ 112)

मुंशी इंशा अल्ला खाँ- (जन्म सं0 1818- मृत्यु सं0 1857) मुर्शिदाबाद में जन्म लेने वाले मुंशी इंशा अल्ला खाँ उर्दू के बहुत अच्छे शायर थे। इन्होंने सम्वत् 1855 और सम्वत् 1860 के मध्य 'उदयभान चरित' या रानी केतकी की कहानी' लिखी। इनकी गद्य भाषा संस्कृत मिश्रित हिन्दी थी। इनकी गद्य भाषा का एक उदाहरण इस प्रकार है-

''कोई क्या कह सके, जितने घाट दोनों नदियों के थे। पक्के चाँदी के से होकर लोगों को हक्का-बक्का कर रहे थे। नवाड़े, बन्जरे, लचके, मोरपंखी, श्याम सुन्दर, राम सुन्दर और जितनी ढब की नावे थी। सुनहरी, रूपहरी, सजी-सजाई। कसी-कसाई सौ-सौ लचके खतियाँ फिरतियाँ थी''(हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास- बाबू गुलाब राय - पृष्ठ 114)

श्री लल्लू लाल जी:- (जन्म सं0 1820- मृत्यु सं0- 1882) आगरा निवासी लल्लू जी 'लाल' गुजराती ब्राहमण थे। फोर्ट विलियम कॉलेज में नियुक्ति के बाद इन्होंने सम्वत् 1860 में भागवत पुराण के दशम् स्कंध के आधार पर प्रेम सागर नामक ग्रन्थ का हिन्दी गद्य में सृजन किया। इसके अतिरिक्त इन्होंने ' वैताल पच्चीसी'' 'सिहासन बत्तीसी' ,'माधव विलास' तथा 'सभा विलास' नामक ग्रन्थ भी लिखे। इनकी गद्य भाषा का एक उदाहरण निम्नवत् है।

''महाराज इसी नीति से अनेक-अनेक प्रकार की बात कहते-कहते और सुनते-सुनते जब सब रात व्यतीत भई और चार घड़ी पिछली रही तब नन्दराय जी से उधौ जी ने कहा कि महाराज अब दधि मथनी की विरियाँ हुई, जो आकी आज्ञा पाऊँ तो युमना स्नान कर आऊँ'' (प्रेम सागर)

पंडित सदलामिश्र:- (जन्म सम्वत् 1825-मृत्यु सं. 1904) बिहार निवासी पंडित सदलमिश्र ने अपनी पुस्तक ''नासिकेतोपाख्यान'' फोर्ट विलियम कॉलेज में लिखी। इनकी भाषा लल्लू जी लाल; की तरह ही ब्रज भाषा के शब्दों से ओत प्रोत है। जिसको एक उदाहरण प्रस्तुत है-

''इस प्रकार नासिकेत मुनि यम की पुरी सहित नरक वर्णन कर फिर जौन-जौन कर्म किये से जो भोग होता ळै सो ऋषियों को सुनाने लगे कि गौ, ब्राहमण माता -पिता , मित्र, बालक, स्त्री, स्वामी, वृद्ध, गुरू, इनका जो बध करते हैं वे झूठी साक्षी भरते, झूठ ही कर्म में दिन रात लगे रहते हैं।" (नासिकेतोपाख्यान)

1.5.3 अंग्रेजों की भाषा नीति :-

अंगेजों के भारत आगमन से पूर्व यहाँ की राज भाषा फारसी थी। लार्ड मैकाले के प्रयत्नों से सन् 1835 में अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार हुआ। सन् 1836 तक अदालतों की भाषा फारसी थी लेकिन अंग्रजों ने अपनी भाषाई नीति के अन्तर्गत सन् 1836 में सयुक्त प्रान्त के सदर बोर्ड अदालतों की भाषा 'हिन्दी' कर दी, लेकिन इसके पश्चात् अंग्रेजों की ओर से हिन्दी के विकास के लिए कुछ और नहीं किया गया। ऐसे समय में राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' और राजा लक्ष्मणसिंह के द्वारा हिन्दी के विकास के लिए जो कार्य किये गए वे उल्लेखनीय है-

राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द- (जन्म सं. 1823- मृत्यु सं. 1895) राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्दी शिक्षा विभाग में निरीक्षक के पद पर थे। ये हिन्दी के प्रबल पक्षधर थे इसलिए ये इसे पाठ्यक्रम की भाषा बनाना चाहते थे। चूँकि उस समय साहित्य के पाठ्यक्रम के लिए कोई पुस्तकें नहीं थी इसलिए इन्होंने स्वयं कोर्स की पुस्तकें लिखी और इन्हें हिन्दी पाठ्यक्रमों में स्थान दिलाया। इन्ही के प्रयत्नों से शिक्षा जगत ने हिन्दी को कोर्स की भाषा बनाया। इस बाद उन्होंने बनारस से 'बनारस अखबार निकाला। इसीके द्वारा राजा शिवप्रसाद ''सितारे हिन्द'' ने हिन्दी का प्रचार प्रसार किया। ये विशुद्ध हिन्दी में लेख लिखते थे। राजा जी ने स्वयं हिन्दी कोर्स लिए पुस्तके ही नहीं लिखी अपितु पंडित श्री लाल और पंडित बंशीधर को भी इस कार्य के लिए प्रेरित किया। इसके अतिरिक्त इन्होंने 'वीरसिंह का वृतान्त' आलसियों का कोड़ा जैसी रचनाओं का सृजन भी किया। इनकी गद्य भाषा कितनी प्रभावशाली और सरल थी, इसका उदारहण ''राजा भोज का सपना'' का यह गद्यांश है।

''वह कौन सा मनुष्य है जिसने महाप्रतापी राजा भोज का नाम न सुना हो। उनकी महिमा और कीर्ति तो सारे जगत में व्याप्त रही है। बड़े-बड़े महिपाल उसका नाम सुनते ही काँप उठते और बड़े-बड़े भूपति उसके पाँव पर अपना सिर नवाते।''

राजा जी उर्दू के पक्षपाती भी थे। सन् 1864 में इन्होंने ''इतिहास तिमिर नाशक'' ग्रन्थ लिखा।

राजा लक्ष्मण सिंह (जन्म सम्वत् 1887- मृत्यु सम्वत् 1956) - आगरा निवासी राजा लक्ष्मणसिंह हिन्दी और उर्दू को दो भिन्न-भिन्न भाषाएँ स्वीकारते थे। फिर भी ये हिन्दी उर्दू शब्दावली प्रधान गद्य भाषा का प्रयोग करते थे। राजा लक्ष्मणसिंह ने कालिदास के 'मेघदूतम' अभिज्ञान शांकुन्तलम् और रघुवंश का हिन्दी अनुवाद किया। इन्होंने हिन्दी के गद्य विकास के लिए सन् 1841 में 'प्रजा हितैषी' पत्र भी सम्पादित और प्रकाशित किया। इनकी गद्य भाषा कितनी उत्कृष्ट कोटि की थी। प्रकाशित उदाहरण अभिज्ञान शाकुन्तलम् का यह अनुदित ग़द्य है-

अनसुया (हौले प्रियबंदा से) सखी मैं भी इसी सोच विचार में हूँ। अब इससे कुछ पूछूँगी। (प्रकट) महात्मा तुम्हारे मधुर वचनों के विश्वास में आकर मेरा जी यह पूछने को चाहता है क तुम किस राजवंश के भूषण हो और किस देश की प्रजा को विरह में व्याकुल छोड़ कर यहाँ पधारे हो? क्या कारण है? (हिन्दी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृष्ठ-300)

राजा शिवप्रसाद ‘सितारे हिन्द’ और राजा लक्ष्मण सिंह के अलावा कई अनेक प्रतिभाशाली लेखकों ने हिन्दी गद्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। जिन गद्य लेखकों ने अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद किये तथा कई पाठ्य पुस्तकें लिखी उनमें , श्री मथुरा प्रसाद मिश्र, श्री ब्रजवासी दास, श्री रामप्रसाद त्रिपाठी श्री शिवशंकर, श्री बिहारी लाल चौबे, श्री काशीनाथ खत्री, श्री रामप्रसाद दूबे आदि प्रमुख हैं। इसी अवधि में स्वामी दयान्द सरस्वती ने ‘‘सत्यार्थ प्रकाश’’ जैसे ग्रन्थ की हिन्दी गद्य में रचना करके हिन्दू धर्म की कुरीतियों को समाप्त किया। हिन्दी गद्य के विकास में जिन और लेखकों का नाम बड़े आदर से लिया जाता है उनमें से बाबू नवीन चन्द्र राय तथा श्री श्रद्धाराम फुल्नौरी हैं।

बाबू नवीन चन्द्र राय ने सन् 1863 और सन् 1880 के मध्य हिन्दी में विभिन्न बिषयों की पुस्तकें लिखी और लिखवाई, साथ ही ब्रहम समाज के सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार करने के लिए सन् 1867 में ज्ञानप्रदायिनी पत्रिका का प्रकाशन किया। इसी तरह श्री श्रृद्धानन्द फुल्लौरी ने ‘सत्यामृत प्रवाह’, ‘आत्म चिकित्सा’, तत्वदीपक, ‘धर्मरक्षा’, उपदेश संग्रह’ पुस्तकें लिखककर हिन्दी गद्य के विकास एक नयी दिशा प्रदान की।

अभ्यास प्रश्न

(4) हिन्दी गद्य विकास के कारण थे-

1. ईसाई धर्म प्रचारकों का योगदान ( )
2. मुद्रण प्रणाली का प्रारम्भ ( )
3. समाज सुधार आन्दोलन ( )
4. उपरोक्त सभी ( )

(5) ‘सत्यार्थ प्रकाशन’ की रचना की-

1. स्वामी विवेकानन्द ने ( )
2. राजा राय मोहन राय ने ( )
3. स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ( )
4. पंडित श्रद्धाराम फुल्लौरी ने ( )

(6) पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने कोलकाता से एक पत्र निकाला।

1. बंगदूत
2. मार्तण्ड
3. उदन्त मार्तण्ड

4. प्रजामित्र

(7) कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम् का हिन्दी में अनुवाद किया।

1. जान गिल क्राइस्ट ने ( )
2. राजा शिप्रसाद सितारे हिन्द ने ( )
3. राजा लक्ष्मण सिंह ने ( )
4. इंशा अल्ला खाँ ने ( )

(8) नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर हाँ या नहीं में दीजिये।

1. लल्लू लालजी फोर्ट विलियम कालेज से सम्बद्ध थे। हाँ/ नहीं
2. मुंशी सदासुख लाल ने ‘ प्रेमसागर’ की रचना की हाँ/ नहीं
3. पंडित सदलामिश्र ने ‘नासिकेतोपाख्यान की रचना की । हाँ/ नहीं
4. पंडित लक्ष्मण सिंस ने राजा भोज का सपना लिखा हाँ/ नहीं

लघु उत्तरीय प्रश्न :-

1. अंग्रेजों की भाषा नीति पर प्रकाश डालिये (मात्र तीन पंक्तियाँ)
2. हिन्दी गद्य के विकास में पत्र पत्रिकाओं की भूमिका पर प्रकाश डालिये (मात्र तीन पंक्तियों में)

1.6 भारतेन्दु युग (सन् 1868-1900)

19 वीं सदी के उत्तरार्द्ध तक हिन्दी गद्य का व्यापक प्रसार हुआ और इससे साहित्य रचना के पर्याप्त अवसर प्राप्त हुए। इसी अवधि में महान साहित्यकार भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने हिन्दी साहित्य संसार में प्रवेश किया। जिनके प्रयत्नों से हिन्दी गद्य को नयी दिशा प्राप्त हुई। भारतेन्दु हरिशचन्द्र का जन्म 2 सितम्बर सन् 1850 ई. को बनारस के एक धनी परिवार में हुआ। इनके साहित्य प्रेमी पिता श्री गोपाल चन्द्र ने नहुष वध नाटक तथा कुछ कविताऐं लिखी। पिता के इन्ही संस्कारों की छाप भारतेन्दु हरिशचन्द्र पर पड़ी इसलिए इन्होंने मात्र ग्यारह वर्ष की अवस्था में काव्य रचना प्रारम्भ कर दी। विभिन्न भाषाओं के जानकार भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने युवावस्था में कई नाटक और काव्यों के लेखन के अतिरिक्ति ‘कविवचन सुधा; हरिशचन्द्र मैगजीन’ तथा हरिशचन्द्र चन्द्रिका’ नामक पत्रिकाओं का भी सम्पादन किया। इन्ही पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी के अनेक गद्य लेखक प्रकाश में आये। भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने उस युग तक प्रयुक्त खड़ी बोली के गद्य को परिमार्जित किया। साथ ही भारतेन्दु जी ने गद्य के विभिन्न क्षेत्रों नाटक, निबन्ध, समालोचना आदि विधाओं में नयी परम्परा का सूत्रपात किया। 35 वर्ष की अल्पायु में हिन्दी साहित्य के लिए किये गए इनके कार्यों को हिन्दी गद्य विकास की दिशा में सर्वाकृष्ट कार्य स्वीकारा जाता है। ये अपनी भाषा के विकास के प्रबल पक्षधर थे। इनका यह मानना था।

'' निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा शान के, मिटत न हिय को शूल''।

भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने ''वैदिक हिंसा, हिंसा न भवति'', प्रेम योगिनी, विषस्य विषऔषधम्, श्री चन्द्रावली नाटिका, भारत दुर्दशा, नील देवी और अंधेर नगरी जैसे मौलिक नाटक लिखे। इनके अनुदित नाटक हैं- ''विद्यासुन्दर, पाखण्ड विडम्बन, मुद्राराक्षस, सत्य हरिशचन्द्र, कर्पूर मंजरी, दुर्लभ बुंध आदि। स्वयं लेखन के अतिरिक्त भारतेन्दु ने अपने समय के अनेक लेखकों को गद्य लेखन के लिए प्रेरित किया । इससे लेखकों की एक ऐसी मंडली बनी जिसने भारतेन्दु की इस परम्परा को आगे बढ़ाया। भारतेन्दु की इसी परम्परा को ओग बढ़ाने वाले लेखकों में थे- पंडित प्रतापनारायण मिश्र, पंडित बालकृष्ण भट्ट, पंडित बद्री नारायण चौधरी प्रेमधन, श्री जगन्नाथ दास 'रत्नाकर', श्री बालमुकुन्द गुप्त, श्रीनिवासदास, श्री राधाकृष्ण दास आदि। इन सभी लेखकों ने गद्य की निबन्ध, नाटक, उपन्यास, एकांकी आदि विधाओं पर लेखनी चलायी।

पं0 प्रताप नारायण मिश्र ने कलि कौतुक व रूकमणि परिणय, हठी हमीर और गौ संकट जैसे नाटकों का सृजन किया। इसके अतिरिक्त पेट, मुच्छ, दान, जुआ आदि विषयों पर निबन्ध लिखे। इसके अतिरिक्त ब्राहमण' पत्रिका का प्रकाशन कर हिन्दी गद्य विधा को आगे बढ़ाया। पंडित बालकृष्ण भट्ट इसी श्रखंला की दूसरी कड़ी थे, जिन्होंने सम्वत् 1934 में 'हिन्दी प्रदीप' मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया। इन्होंने विभिन्न विषयों पर निबन्ध प्रकाशित किये। पंडित भट्ट ने पदमावती, शिशुपाल वध, चन्द्रसेन', जैसे नाटक सौ अजान एक सुजान, नूतन ब्रहमचारी, जैसे उपन्यास और आँख, नाक, कान जैसे विषयों पर ललित निबन्ध लिखे। पंडित बद्रीनारायण चौधरी ने इसी युग में, 'आनन्द कांदविनी, मासिक और 'नीरद' जैसे साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया। भारत सौभाग्य' वीरांगना रहस्य जैसे नाटक लिखकर चौधरी जी ने हिन्दी गद्य विधा को एक नया रूप प्रदान किया। भारतेन्दु युग के जिन प्रतिष्ठित साहित्यकारों की रचनाओं की आज भी प्रशंसा की जाती है वे हैं, श्री बालमुकुद गुप्त , लाल श्रीनिवास दास, श्री राधाकृष्ण दास, श्री बालकुकुद गुप्त ने हिन्दी गद्य की निबन्ध विधा को अत्यधिक समृद्धि प्रदान की। इनकी शिवशम्भू के चिट्ठे प्रसिद्ध रचना है। लाल श्रीनिवास दास ने इसी अवधि में 'प्रह्लाद चरित्र, तप्ता संवरण, रणधीर प्रेम मोहनी, संयोगिता स्वयंवर जैसे नाटक और 'परीक्षा- गुरू जैसा उपन्यास लिखा। श्री राधाकृष्णदास इस युग के प्रसिद्ध नाटकार थे। जिन्होंने दुःखिनी बाला, 'महारानी पदमावती, महाराणा प्रताप' सतीप्रताप जैसे नाटक तो 'निस्सहाय हिन्दु' जैस उपन्यास की रचना की।
भारतेन्दु युग के इन रचनाकारों के साहित्य के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि इन्होंने हिन्दी गद्य के विकास के लिए नाटक, निबन्ध , उपन्यास, आदि सभी विधाओं में साहित्य की सर्जना की । राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण इन लेखकों ने मौलिक साहित्य के अतिरिक्त अनेक अनुवाद भी किये। भारतेन्दु युग में जहाँ हिन्दी गद्य साहित्य को एक नयी दिशा मिली। वहाँ भाषाई संस्कार भी मिला।

अभ्यास प्रश्न

(9) भारतेन्दु हरिशचन्द्र के पिता का नाम था-

1. पंडित प्रतापनारायण मिश्र
2. चौधरी ब्रदीनारायाण
3. श्री गोपाल चन्द्र
4. श्री राधा कृष्ण दास

(10) भारतेन्दु युग में निम्नलिखित विधा का विकास हुआ।

1. निबन्ध गद्य विधा का।
2. नाटक गद्य विधा का।
3. उपन्यास गद्य विधा का।
4. उपरोक्त समस्त गद्य विधाओं का।

(11) भारतेन्दु हरिचन्द्र ने हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि के लिए प्रकाशित की।

1. ब्राह्मण पत्रिका
2. कविवचन सुधा पत्रिका
3. हिन्दीप्रदीप पत्रिका
4. आनन्द कादंवनी

(12) नीचे दी गई रचनाओं के समक्ष उनके लेखकों के नाम लिखिए।

1. नीलदेवी -
2. हठी हमीर -
3. शिशुपाल वध -
4. संयोगिता स्वयंवर -

1.7 द्विवेदी युग (सन् 1900-1920)

पूर्व में हम यह चर्चा कर चुके हैं कि भारतेन्दु हरिचन्द्र जैसे प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति से प्रेरणा प्राप्त कर अनेक लेखकों ने हिन्दी गद्य को समृद्ध किया। इस मंडली ने हिन्दी साहित्य के अनेक अध्येता और हिन्दी गद्य विकास और प्रचार के लिए अनेक मौलिक और अनुदित ग्रन्थ तैयार किये। इतना सब कुछ होने पर भी इस युग के गद्य लेखकों की गद्य भाषा में कई त्रुटियाँ मिलती हैं। इन कमियों को दूर करने के लिए जिस प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार ने अपनी लेखनी उठाई उन्हें साहित्य संसार पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम से जानता है। इन्होंने अपनी साहित्यिक पत्रिका 'सरस्वती' के माध्यम से हिन्दी भाषा का परिमार्जन किया।

हिन्दी की प्रसिद्ध पत्रिका 'सरस्वती' का प्रकाशन इंडियन प्रेस इलाहाबाद द्वारा सन् 1900 से प्रारम्भ किया गया। इस पत्रिका ने सन् 1903 से सन् 1920 तक आचार्य महावीर

द्विवेदी के सम्पादकत्व में जितनी प्रतिष्ठा प्राप्त की उतनी अन्य सम्पादकों के सम्पादकत्व में नहीं। 'सरस्वती' पत्रिका ने उस समय राष्ट्रीय वाणी को दिशा देने के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश कर यह सिद्ध किया कि हिन्दी भाषा में भी कठिन से कठिन विषयों को प्रस्तुत करने की क्षमता है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा सम्पादित इस पत्रिका ने हिन्दी को गद्य की सभी विधाओं से सम्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। तथा इसमें व्याप्त अनगढ़पन और अराजकता को समाप्त कर इसे एक सुन्दर और सुगढ़ भाषा में प्रस्तुत किया।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1861 तथा मृत्यु 1938 में हुई थी। ये एक कवि होने के साथ-साथ एक निबन्धकार और समालोचक भी थे। इनका एक और सबसे बड़ा कार्य यह था कि इन्होंने 'सरस्वती' में प्रकाशन के लिए आने वाली रचनाओं की भाषा को सुधार कर उसे शुद्ध और एक रूप किया। आचार्य द्विवेदी की इच्छा थी कि खड़ी बोली हिन्दी अपना मानक रूप ग्रहण करें क्योकि इसके बिना किसी महान साहित्य की रचना करना सम्भव नहीं।

द्विवेदी जी ने उस युग की राष्ट्रीय चेतना और नव जागरण की भावना को पूर्ण आत्मसात किया। उन्होंने साहित्य के मध्य युगीन आदर्शों का विरोध तथा रीतिकालीन भाव बोधों और कलारूपों को अस्वीकार किया। इन्होंने अपने युग के साहित्यकारों से साहित्य को समाज से जोड़ने के लिए निवेदन किया। इन्होंने स्पष्ट घोषणा की कि किसी भी देश की उन्नति अगर देखनी हो तो उस देश के साहित्य को अवलोकन करना चाहिए। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' के माध्यम से प्रेमचन्द, मैथलीशरण गुप्त, माधव मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त, नाथूराम शर्मा, शंकर, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, श्री पद्मसिंह शर्मा और अयोध्या सिंह उपाध्याय ''हरिऔध' के साहित्य को समाज तक पहुँचाया।

द्विवेदी ने गद्य की विभिन्न विधाओं में साहित्य लिखा गया। इस युग में निबन्ध, नाटक , उपन्यास, कहानी, आलोचना जैसी गद्य विधाओं ने अपना स्वतन्त्र रूप, ग्रहण किया जिनके माध्यम से अनेक साहित्यकार और रचनाएँ प्रकाश में आयीं। इसी काल में कहानी, उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द, नाटक के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद, निबन्ध के क्षेत्र में बालमुकुन्द गुप्त, सरदार पूर्णसिंह, रामचन्द्र शुक्ल तथा आलोचना के क्षेत्र में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ऐतिहासिक कार्य किये। इसके साथ ही इस काल में जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण या यात्रा वृतान्त जैसी कई नयी गद्य विधाओं में भी लेखन कार्य प्रारम्भ हुआ।

नाटक - हिन्दी नाटकों का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिचन्द्र ने अनेक नाटक लिख कर किया। भारतेन्दु युग के प्रायः सभी लेखकों ने नाटक लिखे। इसी का प्रभाव द्विवेदी युग पर भी पड़ा और उस युग में भी कई नाटक लिखे गए। इस युग में अंग्रेजी, बंगला और संस्कृत के नाटक अनुदित होकर हिन्दी में आये। अनुदित नाटकों में बंगला नाटककार द्विजेन्द्रलाल राय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, गिरिश बाबू, विद्या विनोद, अंग्रजी नाटकार, शेक्सपियर, संस्कृत के नाटककार, कालिदास, भवभूति आदि नाटककारों के नाटकों के हिन्दी अनुवाद प्रकाश में आये। मौलिक नाट्य लेखन में पंडित किशोरीलाल गोस्वामी- चौपट चेपट, और मयंक मंजरी, अयोध्या प्रसाद उपाध्याय 'हरिऔध'-

रूक्मणी परिणय और प्रधुम्न विजय बाबू शिवनन्दन सहाय सुदमा नाटक, जैसे नाटक लिखे गए, ये सभी सामान्य नाटक थे जिनपर फारसी थियेटर का प्रभाव पड़ा, लेकिन साहित्यक दृष्टि से ये उच्चकोटि के नाटक नहीं थे। नाटाकों के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद ने उच्च कोटि का कार्य किया जो कि उच्चकोटि की साहित्यकता से ओत प्रोत हैं।

उपन्यास - उपन्यास आधुनिक युग का महाकाव्य कहलाता है। हिन्दी में जैसे ही गद्य का विकास हुआ, उपन्यास विधा भी अस्तित्व में आयी। भारतेन्दु युग से पूर्व श्रृद्धाराम फुल्लौरी ने 'भाग्यवती' उपन्यास लिखकर हिन्दी में उपन्यास विधा का प्रारम्भ किया। इसके बाद भारतेन्दु युग में लाला श्री निवासदास ने 'परीक्षा गुरू' उपन्यास की रचना की। भारतेन्दु युग में श्री राधाकृष्ण दास का 'निःसहाय हिन्दु' पंडित बालकृष्ण भट्ट का 'नूतन ब्रह्मचारी' (सन् 1892) श्री लज्जाराम शर्मा का 'स्वतन्त्र रमा और परतन्त्र लक्ष्मी' (सन् 1899) और धूर्त रसिकलाल, (सन् 1907) जैसे उपन्यास काफी लोकप्रिय हुए। द्विवेदी युग के उपन्यास कारों में सबसे समादृत श्री देवकीनन्दन खत्री हैं। जिन्होंने 'चन्द्रकान्ता' और चन्द्रकान्ता सन्नति' जैसे ऐयारी और तिलस्मी उपन्यासों के माध्यम से जिस गद्य भाषा का प्रयोग किया, वह उर्दू हिन्दी मिश्रित भाषा है। द्विवेदी युग में पंडित किशोरी लाल गोस्वामी ने करीब छोटे-छोटे 65 उपन्यास लिखे। साथ ही इन्होंने 'उपन्यास' नामक एक मासिक पत्र भी निकाला। इनके उपन्यासों में 'चपला' 'तारा' तरूण, तपस्विनी, रजिया वेग़म, लीलावती, लवंगलता आदि उपन्यास प्रसिद्ध हैं। इसी युग में 'हरिऔध' जी ने 'ठेठ हिन्दी का ठाठ', और अधखिला फूल, लज्जाराम मेहता ने हिन्दु धर्म, आदर्श दम्पत्ि ा, बिगड़े का सुधार,आदि उपन्यास लिखे।

कहानी - वैसे तो भारत में कहानी 'कथा' के रूप में आदिकाल से ही चली आ रही थी। किन्तु जिसे वर्तमान की कहानी कहा जाता है। उसका यह स्वरूप काफी नहीं है। वैसे तो समीक्षक मुंशी इंशा अल्ला खाँ की लिखी ''रानी केतकी की कहानी'' को हिन्दी की प्रथम कहानी के पद पर विभूषित करते हैं लेकिन इसमें वर्तमान की कहानी के स्वरूप का अभाव है। इसके पश्चात् राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द ने 'राजा भोज का सपना' की रचना की, लेकिन ये सभी कहानी लेखन के छोटे प्रयास थे। हिन्दी कहानी की रचना का प्रारम्भ बीसवीं शदी के प्रथम दशक में हुआ। जबकि हिन्दी के प्रसिद्ध कहानीकार मुंशी प्रेमचन्द और जयशंकर प्रसाद ने कहानी लिखना प्रारम्भ किया। सन् 1911 में प्रसाद जी की ग्राम कहानी प्रकाशित हुई तो सन् 1915 में चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की प्रसिद्ध कहानी ''उसने कहा था'' का प्रकाशन हुआ। सन 1915-16 से पूर्व मुंशी प्रेमचन्द ने उर्दू में कई कहानियाँ लिखी। इस तरह द्विवेदी युग में जिन कहानीकारों ने कहानियाँ लिख उनमें श्री विश्म्भर नाथ शर्मा, कौशिक, श्री सुदर्शन, श्री राधिका रमण प्रसाद सिंह, श्री जी.पी0 श्रीवास्तव, आचार्य चतुरसेन, आदि कहानीकार मुख्य हैं।

निबन्ध और समालोचना - निबन्ध और समालोचना हिन्दी गद्य की अभिन्न गद्य विधाएँ हैं। जिनका विकास भारतेन्दु युग से होने लगा था। भारतेन्दु युग के निबन्धों में जहाँ राष्ट्र और समाज के प्रति चिन्ता व्यक्त की गई, वहाँ इनमें तीखा व्यंग्य और विनोद भी दिखाई दिया। द्विवेदी युग के निबन्धकारों में श्री बालमुकुन्द गुप्त ने इसी शैली को अपनाकर अपने निबन्धों को चर्चित किया।

इनकी प्रसिद्ध रचना ''शिवशम्भू का चिट्ठा'' इसी शैली के निबन्धों से ओत-प्रोत कृति है। इनके अतिरिक्त, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, पंडित माधव मिश्र, सरदार पूर्णसिंह, बाबू श्याम सुन्दरदास, पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, बाबू गुलाब राय, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्विवेदी युग के ही निबन्धकार हैं। जिनकी निबन्ध भाषा और परिमार्जित है।

द्विवेदी युग में ही समालोचना का आरम्भ हुआ। वैसे इसका सूत्रपात भारतेन्दु काल में हो चुका था। इसकी सूचना इमें 'आनन्द कादंबिनी' से मिलती है। जिसमें कि लाला श्रीनिवास दास के नाटक 'संयोगिता स्वयंवर' की विशद आलोचना प्रकाशित हुई थी। किन्तु समालोचना का वास्तविक प्रारम्भ द्विवेदी युग से हुआ। इसी युग में आलोचना के सैद्धान्तिक पक्ष से सम्बन्धित कई लेख प्रकाशित हुए। वैसे भारत में समीक्षा की काई परम्परा नहीं थी यहाँ के विद्वान समीक्षा के नाम पर किसी भी कृति के गुण दोषों पर ही प्रकाश डालते थे लकिन द्विवेदी युग में ही इसका आरम्भ हुआ। इस युग की प्रथम समीक्षा कृति महावीर प्रसाद द्विवेदी की 'कालिदास की निरंकुशता' थी। जिसमें उन्होंने लाल सीताराम बी0ए0 के अनुवाद किये नाटकों के भाषा तथा भाव सम्बन्धी दोष बड़े विस्तार से प्रदर्शित किये। इस युग में आचार्य द्विवेदी के अतिरिक्त जिन अन्य लेखकों ने समीक्षा साहित्य को गतिप्रदान की उनमें मिश्र बन्धु, बाबू श्याम सुन्दर दास, पदम सिंह शर्मा, डॉ0 पीताम्बर दत्त बडथ्वाल, श्री कृष्ण विहारी मिश्र, बाबू गुलाब राय जैसे समीक्षक है। लेकिन समीक्षा के क्षेत्र में जो युगांतकारी कार्य आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किया उसे द्विवेदी युगीन कोई दूसरा समीक्षक नहीं कर सका।

अभ्यास प्रश्न

(13) हिन्दी भाषा और साहित्य को नई दिशा देने वाली पत्रिका 'सरस्वती' के सम्पादक थे।

1. बाबू गुलाबराय
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
3. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
4. बाबू श्याम सुन्दरदास

(14) द्विवेदी जी के साहित्य में निम्नलिखित चार प्रवृत्तियों में से एक सही नहीं है।

1. पद्य और गद्य की भाषागत एकता
2. राष्ट्रीय भावना और नवजागरण को प्रोत्साहन
3. रीतिकालीन भावबोध का समर्थन
4. समाज के अनुकूल साहित्य रचने की प्रेरणा

(15) नीचे कुछ रचनाओं के नाम दिये गए हैं। इनके रचनाकारों के नाम लिखिये।

1. ठेठ हिन्दी का ठाठ
2. ग्राम
3. तरूण तपस्विनी
4. प्रेमा

लघु उत्तरीय प्रश्न :-

3. भारतेन्दु युग और द्विवेदी युग के निबन्धों की दो भिन्नताएँ बताइए।
4. द्विवेदी युग के सन्दर्भ में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की भूमिका का विवेचन चार पंक्तियों में कीजिए।

1.8 प्रेमचन्द और उनके पश्चात्

द्विवेदी के पश्चात् जिन साहित्यकारों ने गद्य साहित्य को नयी दिशा प्रदान की, मुंशी प्रेमचन्द भी उनमें से एक हैं। मुंशी प्रेमचन्द ने यद्यपि लेखन का कार्य द्विवेदी युग से ही आरम्भ कर लिया था लेकिन इनकी रचनाओं में एक नवीनता के दर्शन होते हैं। इसीलिए इनकी उपन्यास और कहानी विधाओं से एक नये युग का प्रारम्भ होता है। प्रेमचन्द ने इस युग में कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध और जीवनियाँ लिखी। इनकी इन सभी विधाओं में समाज और दशा की वास्तविक स्थिति के दर्शन होते हैं। प्रेमचन्द ने अपने जीवन में लगभग 300 कहानियों की रचना की। इनकी ये सभी कहानियाँ मानसरोवर के आठ भागों में संकालित हैं। इनमें से ईदगाह, कफन, शंतरंज के खिलाड़ी, पंचपरमेश्वर, अलग्योझा, बड़े घर की बेटी, पूस की रात', नमक का दरोगा, ठाकुर का कुआँ, श्रेष्ठ कहानियाँ हैं।

उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द उपन्यास सम्राट कहलाते हैं। इस विधा में इन्होंने देश की सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। इनके रंगभूमि, कर्मभूमि, सेवासदन, गबन जैसे उपन्यास देश की इन्ही समस्याओं को उजागर करते हैं। प्रेमचन्द के इस युग में उपन्यास साहित्य को समृद्ध करने में जिन साहित्यकारों का योगदान रहा है उनमें जयशंकर प्रसाद, आचार्य चतुरसेन, विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक, बेचेन पाण्डेय, इलाचन्द्र जोशी, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', भगवती प्रसाद वाजपेयी, भगवती चरण वर्मा, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' जैनेन्द्र अज्ञेय, यशपाल, नागार्जुन, फणीश्वर नाथ रेणु, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, अमृतलाल नागर मुख्य हैं। इसी तरह प्रेमचन्द के समकालीन जिन कहानीकारों ने हिन्दी कहानी को एक नयी दिशा प्रदान की, उनमें उपरोक्त उपन्यासकारों के साथ-साथ अमृराय, मन्मथनाथ,गुप्त, रांगेय राघव, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, मार्कण्डेय, उषा प्रियवंदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोवती का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है।

प्रेमचन्द युग के नाटकों में जयशंकर प्रसाद के नाटय आदर्शवादी नाटक हैं,। इसलिए जयशंकर प्रसाद को इस युग का युग प्रवर्तक नाटककार माना जाता है। इनके ऐतिहासिक नाटकों में राष्ट्रीय चेतना और भारतीय संस्कृति की झलक सर्वत्र दिखायी देती है। कामना, जनमेजय का नाग यज्ञ, राजश्री, विशाखा, अजातशत्रु, स्कंदगुप्त, चन्द्र गुप्त और ध्रुवस्वामिनी इनके बड़े और महत्व वाले नाटक हैं। जयशंकर प्रसाद के अतिरिक्त इस युग के अन्य नाटककारों में प्रमुख हैं श्री जगदीश चन्द्र माथुर- कोणार्क, पहला राजा, शारदीय, मोहन राकेश- आषाढ़ का एक दिन, लहरों

के राजहंस, और आधे अधूरे, इनके अतिरिक्त हरिकृष्ण प्रेमी, उदयशंकर भट्ट, गोविन्द बल्लभ पन्त, लक्ष्मी नारायण मिश्र, सेठ गोविन्द दास, जगन्नाथ दास मिलिन्द, लक्ष्मी नारायण लाल, विष्णु प्रभाकर, ब्रजमोहन शाह, रमेश बक्षी, मुद्राराक्षस, इन्द्रजीत भाटिया भी उच्चकोटि के नाटककार हैं।

प्रेमचन्द युग में नाटकों के अतिरिक्त एकांकी भी लिखे गए। जिन्हें उपरोक्त नाटकारों के अतिरिक्त कुछ एकांकीकारों में डॉ0 रामकुमार वर्मा का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। पृथ्वीराज की आँखें, रेशमी टाई, कौमुदी महोत्सव, राजरानी सीता इनके प्रसिद्ध एकांकी हैं। प्रेमचन्द के युग में नाटक, उपन्यास, काहनी, एकांकी, के अतिरिक्त निबन्ध, आलोचना, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण आदि गद्य विधाओं की भी पर्याप्त प्रगति हुई। इस युग के निबन्धकारों में आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, बाबू गुलाब राय, वासुदेव शरण अग्रवाल सदगुरूशरण अवस्थी, शांतिप्रिय द्विवेदी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ0 नगेन्द्र, विद्यानिवास मिश्र, कुवेरनाथ राय, विष्णुकान्त शास्त्री, आदि निबन्धकार मुख्य हैं। प्रेमचन्द जी के युग में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने जिस समालोचना साहित्य का श्री गणेश किया उसी को आगे बढाने में आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी, डॉ0 नगेन्द्र, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ0 पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, डॉ0 देवराज, डॉ0 राम विलास शर्मा, शिवदान सिंह चौहान, नामवरसिंह, डॉ0 आनन्द प्रकाश दीक्षित की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

प्रेमचन्द और उनके बाद के साहित्य पर दृष्टि डालने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस युग के साहित्य पर युगीन परिस्थितियों का प्रभाव पड़ा। इस काल की रचनाओं में जहाँ लेखकों ने सामाजिक समस्याओं पर अपनी गहरी दृष्टि डाली वहाँ मनोवैज्ञानिक समस्याओं को भी साहित्य में स्थान दिया। इस युग के गद्य साहित्य में देश की राष्ट्रीय चेतना का प्रभाव भी पड़ा। यही नहीं अन्तराष्ट्रीय परिवर्तनों के प्रभाव से भी इस काल का साहित्य प्रभावित रहा। सन् 1947 में जब भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई और रूस में समाजवाद का उद्भव व उदय हुआ तो इस काल के गद्य साहित्य में प्रगतिवाद ने प्रवेश किया। इस काल के साहित्य पर पश्चिम की वैज्ञानिक प्रगति का भी प्रभाव पड़ा । इसी के फलस्वरूप गद्य की नयी-नयी विधाओं ने जन्म लिया। यात्रावृत्त, जीवनी, डायरी, आत्मकथा, रिपार्ताज जैसी नवीन गद्य विधाएँ इसी के परिणाम हैं।

अभ्यास प्रश्न

(16) निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

1. गोदान प्रेमचन्द का प्रसिद्ध .... है।
2. ‘आषाढ़ का एक दिन’ के लेखक हैं.......................।
3. ‘पृथ्वीराज की आँखें’.......................... का प्रसिद्ध एकांकी है।

(17) प्रेमचन्द और उनके बाद के किन्ही चार उपन्यासकारों के नाम लिखिए।

(18) हिन्दी निबन्ध के किन्ही तीन निबन्धकारों के नाम लिखिए।

1.9 सारांश

हिन्दी गद्य विकास की इस इकाई में आपने इन तथ्यों का अध्ययन किया :-

- गद्य और पद्य का अन्तर
- हिन्दी गद्य की पृष्ठ भूमि
- हिन्दी गद्य का विकास
- अंग्रेजी की भाषा नीति
- भारतेन्दु युगीन गद्य

1.10 शब्दावली

- सोद्देश्य - उद्देश्य के साथ
- प्राणयण - तन-मन से
- शून्यता - खालीपन
- परिणाम - फलतः
- उपदेशात्मकता- उपेदश देने की वृत्ति
- सृजान - निर्माण
- व्यक्त - प्रकट
- श्रृंखला - कड़ी, जंजीर, पंक्ति वद्धता
- साम्राज्य - शासन
- ओत प्रोत - परिपूर्ण

1.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

(1) 1. कविता में गेयता होती थी (सत्य)
2. (सत्य) 3. (असत्य) 4. (सत्य)

(2) (3) विक्रमी सम्वत् 1660

(3) 1. श्रृंगार मण्डल - गोसाई विठ्ठलनाथ
2. चौरासी बैष्णव की वार्ता - गोकुलनाथ
3. सब रस - मुल्ला वजही
4. चंद छन्द बरनन की महिमा - गंग कवि

(4) 4. उपरोक्त सभी

(5) 3. स्वामी दयानन्द ने।

(6)	3.	उदन्त मार्तण्ड	
(7)	3.	राजा लक्ष्मण सिंह	
(8)	1.	हाँ 2. नहीं 3. हाँ 4. नहीं	
(9)	3.		
(10)	4.		
(11)	2.		
(12)	1.	नील देवी-	भारतेन्दु हरिशचन्द्र
	2.	हठी हमीर-	पंडित बालकृष्ण भट्ट
	3.	शिशुपाल वध-	पंडित श्री निवासदास
	4.	संयोगिता स्वयंवर-	लाला श्री निवास दास
(13)	3. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी		
(14)	3. रीतिकालीन भाव बोध का समर्थन		
(15)	1.	अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	
	2.	जयशंकर प्रसाद	
	3.	पंडित किशोरी लाल गोस्वामी	
	4.	मुंशी प्रेमचन्द	
(16)	1.	गोदान प्रेमचन्द का प्रसिद्ध उपन्यास है।	
	2.	आषाढ़ का एक दिन के लेखक हैं- मोहन राकेश।	
	3.	पृथ्वीराज की आँखें डॉ0 राम कुमार वर्मा का प्रसिद्ध एकांकी है।	
(17)	1. जयशंकर प्रसाद		
	2. आचार्य चतुरसेन।		
	3. गुरूदत्त		
	4. यशपाल		
(18)	1, डॉ0 पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल		
	2, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल		
	3, पंडित बालकृष्ण भट्ट		

1.12 उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास।
2. राय, बाबू गुलाब, हिन्दी साहित्य का सुगम इतिहास।
3. मिश्र, लल्लूलाल, प्रेम सागर।

1.13 निबंधात्मक प्रश्न

1. हिन्दी गद्य के उदय की पृष्ठभूमि विवेचित कीजिए।
2. द्विवेदी युगीन गद्य की विशेषताएँ वर्णित कीजिए।

इकाई - 2 हिन्दी कहानी का उद्भव व विकास

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 हिन्दी कहानी का उद्भव

2.4 हिन्दी कहानी का विकास

2.4.1 प्रेमचन्द से पूर्व की कहानी

2.4.2 प्रेमचन्द युग की कहानी

2.4.3 प्रेमचन्दोत्तर युग की कहानी

2.5 सारांश

2.6 शब्दावली

2.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.8 संदर्भ ग्रंथ सूची

2.9 उपयोगी पाठ्य सामग्री

2.10 निबंधात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हिन्दी कहानी के उद्भव व विकास पर प्रकाश डाला गया है। आधुनिक हिन्दी कहानी के पूर्व भी भारत वर्ष में कहानी का अस्तित्व था, लेकिन अंग्रेजों के भारत आगमन के पश्चात् हिन्दी कहानी जिस रूप में आयी इसका यहाँ पर विस्तृत विवेचन किया गया है। यह विधा वर्तमान में पूर्ण रूप से गद्य की विधा है। जो समय-समय पर अनेक विचारों वादों और साहित्य आन्दोलनों से प्रभावित होती रही। इसकी इसी विकास यात्रा पर हम इस इकाई में गहनता से विचार करेंगे।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई में हिन्दी कहानी के उद्भव व विकास पर प्रकाश डाला गया है। इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप -

- हिन्दी गद्य की कहानी के विषय में जान सकेंगे।
- हिन्दी कहानी के उद्भव की कथा को समझ सकेंगे।

- हिन्दी कहानी के क्रमिक विकास को जान सकेंगे।
- प्रेमचन्द से पूर्व की कहानी और कहानीकारों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- प्रेमचन्द के युग की कहानी और कहानीकारों के विषय में पूर्व जानकारियाँ प्राप्त कर सकेंगे।
- प्रेमचन्द युग पश्चात की कहानी और कहानी की युग धारा को समझ सकेंगे।
- हिन्दी कहानी के विभिन्न कहानीकारों के विषय में जान सकेंगे।
- हिन्दी भाषा साहित्य की विभिन्न कहानियों के विषय में ज्ञान प्राप्त करेंगे।

2.3 हिन्दी काहानी का उद्भव

कहानी शब्द हमारे लिए अपरचित शब्द नहीं है, क्योंकि बचपन में हम जिसे कथा कहते थे, कहानी उसी कथा का साहित्यिक रूप है। इस कहानी को हमने कभी दादी-नानी के मुख से लोक कथा के रूप में सुना तो कभी पण्डित जी के मुख से धार्मिक कथा के रूप में, ये सभी राजा रानी की कहानियाँ, पशु पक्षियों की कहानियाँ, देवताओं और राक्षसों की कहानियाँ, चमत्कारों और जादूटोनों की कहानियाँ, भूत प्रेतों की कहानियाँ, मूर्ख और बुद्धिमानों की कहानियाँ वर्तमान की कहानियाँ का पुरातन स्वरूप थीं, जिन्हें लोग बड़े चाव से सुनते और सुनाते थे। इनके अतिरिक्त, पुराण, रामायण, महाभारत, पन्चतंत्र, बेताल पच्चीसी, जातक कथाएँ आदि कई प्राचीन ग्रन्थ इन कहानियों का आदि स्रोत रहे हैं। इन कहानियों को पढ़ने-सुनने से जहाँ जन सामान्य से लेकर विद्वानों का मनोरंजन होता था, वहाँ इनके माध्यम से अनके शिक्षाएँ तथा उद्धेश्य प्राप्त होते थे। इन कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि इन्हें एक ही साथ कई घंटों और दिनों तक सुना जा सकता है। जिन्हें बार-बार सुनने पर नीरसता की अपेक्षा और अधिक सरसता प्राप्त होती है। ये सभी कहानियाँ हमें परम्परा से प्राप्त हुई, इनमें अतिसंख्य कहानियाँ कल्पना पर आधारित होती हैं, लेकिन कहीं-कहीं इन कहानियों में ऐतिहासिक तथ्यों को भी उजागर किया जाता है। ये ही कहानियाँ वर्तमान कहानी का प्राचीन स्वरूप है।

प्राचीन कहानियाँ घटना प्रधान होती थी, जिस घटना के माध्यम से लेखक या वक्ता अपने उद्धेश्य की पूर्ति करते थे। इसके लिए वे कहानियों की घटनाओं को मनोइच्छित रूप देते थे। कहानी की रचना के लिए वे काल्पनिक, दैवीय, और चमत्कारी घटनाओं का आविष्कार करते थे। लेकिन वर्तमान की कहानी पुरातन कहानी से एकदम भिन्न है। क्योंकि आज का कहानीकार कहानी की घटना को मानव के यथार्थ जीवन से जोड़ता है, कहानी लिखते समय कहानीकार यह ध्यान रखता है कि जिस कहानी की वह रचना कर रहा है वह अस्वाभाविक न लगे। जिस चरित्र को वह प्रस्तुत कर रहा है, वह समाज के अन्दर क्रियाशील मानव की भाँति ही प्रतीत हो। वह उसके द्वारा ऐसे कार्य नहीं करा सकता जो मुनष्य के लिए असम्भव हो। पुरातन कहानियों के चरित्र ऐसे होते हैं जो असम्भव कार्य को कर देते है। लेकिन वर्तमान की कहानियों

के पात्र अपने समय और परिस्थितियों के अनुकूल क्रियाशील होते हैं। आज समाज में अनेक परिवर्तन हो रहे हैं जिसका प्रभाव साहित्य पर भी पड़ रहा है, इसीलिए इसी साहित्य के गद्य रूप कहानी में भी काफी बदलाव आ रहे हैं। वर्तमान की हिन्दी कहानी का उद्भव 18 वीं सदी से लेकर 19 वीं शदी के मध्य में हुआ। कुछ विद्वान हिन्दी कहानी के प्रारम्भ के अन्तर्सूत्र भारत की प्राचीन कथा परम्परा से जोड़ते है तो कुछ कहानी विधा को पाश्चात्य साहित्य की देन मानते हैं। कुछ साहित्यधर्मी हिन्दी कहानी का उद्भव स्रोत्र गुणाढ्य की वृहद कथा, कथा सरित सागर, पंचतंत्र कथाएँ, हिंतोपदेश जातक कथाओं से जोड़ते हैं तो कुछ विद्वान स्वामी गोकुल नाथ की चौरासी वैष्णवन की वार्ता को हिन्दी का प्रथम कहानी संग्रह मानते हैं, लेकिन ये कहानियाँ नही जीवनियाँ मात्र हैं।

2.4 हिन्दी कहानी का विकास

जैसा कि विद्वान स्वीकारते हैं कि खड़ी बोली हिन्दी में कहानी का आरम्भ उस समय हुआ जब अंग्रेजों के प्रभाव से गद्य लिखा गया। अंग्रेजों ने हिन्दी गद्य के विकास के लिय जिन लेखकों को तैयार किया उनकी आरम्भिक रचनाएँ एक तरह की कहानियाँ हैं। इन गद्य लेखकों में इंशा अल्ला खाँ एक ऐसे गद्यकार थे जिन्होंने ''रानी केतकी कहानी'' जैस कहानी का सृजन किया लेकिन वर्तमान के समालोचक इसे आधुनिक हिन्दी कहानी के स्वरूप और कथ्य से भिन्न मानते हैं। वर्तमान में कहानी के लिए जिन तत्वों को निर्धारित किया गया है, रानी केतकी की कहानी में वे सभी तत्व नहीं मिलते। वर्तमान की कहानी लेखन की प्रेरणा पूर्व में अंग्रेजी और बंगला में रची गई और हिन्दी में अनुदित कहानियों से मिली, क्योंकि 19 वीं शताब्दी में अंग्रेजी, रूसी, फ्रेंच आदि भाषाओं में कहानी का अच्छा विकास हो चुका था।

'नासिकेतो पाख्यान' तथा 'रानी केतकी' की कहानी को हिन्दी की प्रथम कहानी न मानने के पीछे उसमें कहानी तत्वों का अभाव है। इसके पश्चात् भारतेन्दु की 'एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न' तथा राधाचरण गोस्वामी की 'यमलोक की यात्रा' प्रकाश में आयी लेकिन विद्वानों ने इनमें भी कहानी कला के तत्वों के अभाव के दर्शन किये। वैसे हिन्दी कहानी का प्रारम्भ सन् 1900 में प्रकाशित होने वाली उस 'सरस्वती' पत्रिका से हुआ जिससे पंडित किशोरी लाल गोस्वामी को 'इन्दुमती' (1900ई0) को प्रकाशन हुआ था। हिन्दी कहानी के इस विकास पर गहरी दृष्टि डालने के लिए हमें हिन्दी कहानी के महान कहानी कार प्रेमचन्द को केन्द्र में ररखकर चर्चा करनी होगी ।

हिन्दी कहानी के विकास में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका उपन्यास सम्राट मुशी प्रेमचन्द ने निभायी। इस युग पुरूष ने अपनी कहानियों को विविध शैलियों के माध्यम से साहित्य संसार को सौंपा, इसलिए कहानी साहित्य संसार शिरोमणियों ने हिन्दी कहानी परम्परा में प्रेमचन्द का स्थान केन्द्रीय महत्व का स्वीकारा। मुशी प्रेमचन्द ने अपने जीवन काल में तीन सौ कहानियाँ लिखी, इन्होंने हिन्दी कहानी को वह श्रेष्ठता प्रदान की जिससे प्रेरणा प्राप्त कर हिन्दी के अन्य कहानिकारों

ने हिन्दी कहानी कोष की श्रीवृद्धि की, इसलिए हिन्दी कहानी के विकास के केन्द्र में मुंशी प्रेमचन्द को रखकर हम तीन चरणों में बाँटते हैं -

1. प्रेमचन्द से पूर्व की कहानी - सन् 1901 से 1914 ई0
2. प्रेमचन्द युग की कहानी (सन् 1914 से सन् 1936 ई0)
3. प्रेमचन्दोत्तर युग की कहानी (सन् 1936 से वर्तमान तक) प्रवृत्तियों की दृष्टि से इन चरणों को कई धाराओं में विभाजित किया जाता है जिनका विवेचन हम यहाँ निम्न प्रकार से करते हैं।

2.4.1 प्रेमचन्द युग से पूर्व की कहानी (सन् 1901 से सन् 1914 ई0) :-

जैसा कि विद्वान प्रेमचन्द पूर्व युग कहानी का समय सन् 1901 सन् 1914 तक मानते हैं। हिन्दी की प्रथम कहानी कौन है ? इस विषय में काफी विवाद है। हिन्दी गद्य की प्रारम्भिक अवधि में मुंशी इंशा अल्ला खाँ ने 'उदय भान चरित्र' या रानी केतकी की कहानी की रचना की थी। समय की दृष्टि से यह सबसे पुरानी कहलाती हैं परन्तु आधुनिक कहानी कला की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण रचना नही है।

आचार्य हजारी प्रसार द्विवेदी का विचार है कि- "यह मुस्लिम (फारसी) प्रभाव की अन्तिम कहानी है यद्यपि इसकी भाषा और शैली में आधुनिक कहानी कला का आभास मिल जाता है।" राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द की कहानी 'राजाभोज का सपना' भी ऐसी ही कहानी है, इसमें भी थोड़ा बहुत आधुनिकता का स्पर्श मिलता है। इन कहानियों के अतिरिक्त किशोरी लाल गोस्वामी की इन्दुमती, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की ' ग्यारह वर्ष का समय' बग महिला की 'दुलाई वाली' आदि कहानियाँ इसी कोटि की कहानियाँ हैं। इन कहानियों को हम प्रयोगशील कहानियाँ कह सकते हैं। जिनमें कहानी लेखकों ने विदेशी और बंगला कहानियों के प्रभाव में आकर हिन्दी भाषा में भी कहानी लिखने का भी प्रयास किया। कहानी कला को केन्द्र में रखकर वर्तमान के समालोचक अब माधव राव सप्रे की कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' को हिन्दी की प्रथम कहानी मानते हैं जिसका प्रकाशन सन् 1903 में हुआ था।

प्रेमचन्द युग से पूर्व की कहानियों की विशेषताऐं-

1. प्रेमचन्द पूर्व युग की आरम्भिक कहानियाँ पुराने स्वरूप की थी। जिनका कथानक अलौकिक चमत्कारों से युक्त होता था।
2. प्रेमचन्द पूर्व युग की आरम्भिक कहानियाँ प्रायः आदर्श-वादी होती थी जिनमें भावुकता के साथ किसी भारतीय आदर्श की कथा कही जाती थी।
3. प्रेमचन्द युग की कहानियाँ धीरे-धीरे यथार्थ की और उन्मुख हुई, लेकिन इस यथार्थ का रूप ऐसा नहीं था जैसा कि प्रेमचन्द की कहानियों में मिलता है।
4. भाषा की दृष्टि से इस युग की कहानियों की भाषा उतनी प्रौढ़ और परिमार्जित भाषा नहीं है जितनी प्रेमचन्द की कहानियों में है।
5. इस युग के कहानीकार प्रयोगधर्मी कहानी कार अधिक थे, इसलिए उस युग की कहानी प्रयोगधर्मी कहानियाँ अधिक है।

2.4.2 प्रेमचन्द युग की कहानी (सन् 1915 से 1936 तक) :-

हिन्दी कहानी का प्रेमचन्द युग का आरम्भ सन् 1915 ई0 से माना जाता है। मुशी प्रेमचन्द जिस अवधि में कहानियाँ लिख रहे थे उसी अवधि में कई कहानीकारों ने इस विधा को आगे बढ़ाने के लिए अपनी लेखनियाँ उठायी। जिनमें जयशंकर प्रसाद, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, सुदर्शन आदि मुख्य कहानीकार हैं। इसी युग में जिन अन्य कहानीकारों ने हिन्दी कहानी विधा को नई दिशा प्रदान की उनमें श्री विश्वम्भर नाथ शर्मा, 'कौशिक', आचार्य चतुर सेन शास्त्री, राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह, श्री शिव पूजन सहाय, श्री वृन्दावन लाल वर्मा, श्री गोपाल राम गहमरी, श्री रायकृष्ण दास, पदुम लाल पुन्नालाल वख्शी, रमाप्रसाद धिल्डियाल पहाड़ी पंडित ज्वाला प्रसाद शर्मा, श्री गंगाप्रसाद श्रीवास्तव आदि का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। अनके पत्र-पत्रिकाओं में इन कहानीकारों की कहानियाँ प्रकाशित हुईं, जिससे हिन्दी कहानी के लेखक ही नहीं पाठकों की संख्या में भी वृद्धि हुई, इस युग के जिन मुख्य कहानीकारों की साहित्य सेवा का आंकलन करने के लिए साहित्य के इतिहासकारों ने इन्हें विशेष रूप से सम्मान दिया वे इस प्रकार हैं-

पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी - हिन्दी के श्रेष्ठ कहानीकारों में प्रेमचन्द युगीन कहानीकार पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी को का नाम भी बड़े समादर से लिया जाता है। यदि आधुनिक कहानी कला की दृष्टि से किसी कहानी को हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ कहानी कहा जाय तो वह है – **उसने कहा था**: यह कहानी यथार्थवादी कहानी है जो एक आदर्श को प्रस्तुत करती है। गुलेरी जी ने इसके अतिरिक्त सुखमय जीवन और बुद्धू का कांटा दो कहानियाँ और लिखी।

जयशंकर प्रसाद - प्रेमचन्द युम में ही जयशंकर प्रसाद ने हिन्दी में कई कहानियाँ लिखी लेकिन इनकी कहानियाँ प्रेमचन्द की कहानी शैली से बिल्कुल भिन्न कहानियाँ हैं। एक राष्ट्रवादी साहित्यकार होने के कारण इनकी कहानियों में राष्ट्रीय भावना और सांस्कृतिक चेतना का प्रभाव परिलक्षित होता है। प्रसाद जी ने आधिकांश ऐतिहासिक कहानियाँ लिखी हैं, जिनकी भाषा संस्कृत निष्ठ, भाव प्रधान, अलंकारिक और काव्यात्मक है। यही नहीं इनकी कहानियों में नाट्य शैली के भी दर्शन होते हैं, इनकी कहानियों में आकाश दीप, पुरस्कार, ममता, इन्द्रजाल, छाया, आँधी, दासी जैसी कहानियाँ आदर्शवादी कहानियाँ हैं तो मधुवा, और गुंडा जैसी कहानियाँ यथार्थवादी कहानी।

मुंशी प्रेमचन्द - मुंशी प्रेमचन्द हिन्दी कहानी संसार के लिए वरदान बनकर आये, इनकी हिन्दी की पहली कहानी पंच परमेश्वर सन् 1915 में प्रकाशित हुई। 'पंच परमेश्वर' प्रेमचन्द जी की एक आदर्शवादी कहानी है जिसमें मनुष्य के अन्दर छिपे दैवत्व के गुणों को उजागार किया गया है। लेकिन इनकी बाद की कहानी यथार्थवादी कहानियाँ हैं जिनमें ग्रामीण और शहरी पददलितों के जीवन में घटने वाली घटनाओं को कहानियों के माध्यम से सार्वजनिक किया गया है। इस सम्बन्ध में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं -

प्रेमचन्द, शताब्दियों से पददलित, अपमानित और उपेक्षित कृषकों की आवाज थे, पर्दे में कैद, पद-पद लांछित और असहाय नारी जाति की महिमा के जवरदस्त वकील थे। गरीबों और बेबसों के महत्व के प्रचारक थे। (हिन्दी साहित्यः उद्भव और विकास पृष्ठ- 266)

प्रेमचन्द ने अपने युग की सामाजिक बुरी दशा को अपने उपन्यास तथा कहानियों का विषय बनाया। अपने इस कथा साहित्य के माध्यम से प्रेमचन्द जी ने स्पष्ट किया था कि हमारे सामाजिक कष्टों के दो ही कारण हैं- एक धार्मिक अंधविश्वास और सामाजिक रूढ़ीवादिता और दूसरा आर्थिक शोषण और राजनीतिक पराधीनता, इनका सारा कथा साहित्य इसी पर केन्द्रीत है। इनकी आरम्भिक कहानियाँ आर्दशवादी कहानियाँ हैं लेकिन धीरे-धीरे इन्होंने यथार्थ से नाता जोड़ा। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों के पात्र गरीब, बेबस और दबे-कुचले लोगों को बनाया। इन सबके अन्दर गुप्त मानवतावाद को एक नया प्रकाश दिया, प्रेमचन्द ने जहाँ अपनी कहानियों के माध्यम से समाज में व्याप्त रूढ़ीवाद और कुरीतियाँ के दमन के उपाय सुझाए वहाँ राजनैतिक पराधीनता और आर्थिक शोषण के प्रति विद्रोही आवाज उठायी। प्रेमचन्द की कुछ प्रसिद्ध कहानियाँ इनके इसी भावों को प्रदर्शित करती है।

इनमें मुख्य हैं- 'कफन', पूस की रात, शतरंज के खिलाड़ी, दूध का दाम, ठाकुर का कुआँ, नशा, बड़े भाई साहब, सवा सेर गेहूँ, अलाग्योझा, नमक का दरोगा, पंचपरमेश्वर, ईदगाह, बूढ़ी काकी, ईदगाह आदि। इनमें से कुछ यथार्थवादी कहानियाँ हैं तो कुछ आदर्शवादी कहानियाँ।

भाषा की दृष्टि से मुंशी प्रेमचन्द की भाषा तत्कालीन समाज की बोल चाल की भाषा है। जिसे हम लोक भाषा का अनुपम उदाहरण कह सकते हैं। हिन्दी उर्दू शब्दों की यह मिश्रित भाषा वर्तमान में भी उतनी ग्राह्य और भाव बोधक है जितनी इनके लिखते समय में थी।

विश्वम्भर नाथ शर्मा - प्रेमचन्द के समान ही विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक की कहानियाँ में आदर्श और यथार्थ का समन्वय दिखाई देता है। इनकी कहानियाँ भी घटना प्रधान और वर्णात्मक है। ताई, 'रक्षावधन', 'माता का हृदय', कृतज्ञता आदि कहानियों में जहाँ मानवीय भावों की सक्ष्म व्यंजना हुई है। वहाँ आदर्श के नये रूप के दर्शन होते हैं। श्री काशिक ने अपने जीवनकाल में तीन सौ कहानियाँ लिखी हैं, 'मणिमाला', 'चित्रशाला', कल्लौल, कला-मन्दिर, इनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह है।

श्री सुदर्शन - प्रेमचन्द युगीन कहानिकारों में श्री सुदर्शन का नाम भी बड़े आदर से लिया जाता है। इन्होंने भी प्रेमचन्द की भाँति अनेक घटना प्रधान कहानियाँ लिखी, इनकी इन कहानियों के पात्र सामान्य कोटि के मजदूर, किसान आदि पात्र हैं जिनका सम्बन्ध ग्रामों और नगरों के सामान्य मध्यमवर्ती मोहल्लों से है। इनकी अनेक कहानियाँ मानवीय संवदनाओं की मार्मिक अभिव्यक्ति देती है। इनकी कई लोक प्रिय कहानियाँ हैं- जिनमें 'हार की जीत', सलबम, आशीर्वाद, न्याय मंत्री, एथेन्स का सत्यार्थी , कवि का प्रार्याश्चित, आदि लोकप्रिय कहानियाँ हैं। इनके सभी कहानियाँ पनघट, सुदर्शन सुधा, तीर्थ यात्रा आदि कहानी-संग्रहों में संग्रहित है।

बाबू गलाब राय के शब्दों में - प्रेमचन्द, कौशिक और सुदर्शन, हिन्दी- कहानी साहित्य के प्रेमचन्द स्कूल के वृहद्त्रयी कहलाते हैं- (हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास-बाबू गुलाब राय-पृष्ठ- 157)

प्रेमचन्द के कथा शिल्प और कथ्य को लेकर कहानी लिखने वालों में- वृन्दावनलाल शर्मा- (शरणागत कटा-फटा झंडा, कलाकार का दण्ड जैनावदी वेगम, शेरशाह का न्याय, आदि) आचार्य चतुरसेन की दुखिया में कासे कहू सजनी, सफेद कौआ, सिंहगढ़ विजय, आदि। गोविन्द बल्लभ पंत सियाराम शरण गुप्त (बैल की बिक्री) भगवती प्रसाद वाजपेयी, मिठाई वाला, निंदियालागी, खाल, वोतल, मैना, ट्रेन पर, हार जीत आदि) रामवृक्ष बेनीपुरी, उषादेवी मित्रा आदि अनेक कहानीकारों की रचनाएं बहुत प्रसिद्ध हुई

प्रेमचन्द युगीन कहानियों की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- ये परिमार्जित भाखा वाली कहानियाँ हैं।
- ये आदर्श और यथार्थ वादी कहानियाँ हैं।
- ये मानवीय सम्बन्धों का उद्घाटन करने वाली कहानियाँ हैं।
- ये ग्राम्यजीवन पर प्रकाश डालने वाली कहानियाँ हैं।
- ये राष्ट्रवादी और देश प्रेम से ओतप्रोत कहानियाँ हैं।
- ये राजनैतिक पराधीनता और आर्थिक शोषण में विरूद्ध आवाज उठाने वाली कहानियाँ हैं।
- ये समाज में व्याप्त रूढ़ीवादी, कुरीतियों और अशिक्षा को दर्शाने वाली कहानियाँ हैं।

2.4.3 प्रेमचन्दोत्तर युग की कहानी :-

प्रेमचन्द के पश्चात् हिन्दी कहानी का विकास और तीव्रता से हुआ। प्रेमचन्द और जयशंकर प्रसाद के पश्चात् नये युग में हिन्दी कहानी की दो प्रमुख शाखाएँ उभरकर आयी। इनमें एक शाखा का सम्बन्ध प्रेमचन्द के यथार्थवादी परम्परा से था, ओर दूसरी शाखा का सम्बन्ध 'जयशंकर प्रसाद की भाववादी मनोवैज्ञानिक परम्परा से। इसलिए इन्हें इतिहासकारों ने प्रगतिवादी और मनोवैज्ञानिक कहानियों का नाम दिया,

प्रगतिवादी कहानी - हिन्दी की प्रगतिवादी कहानी को यथार्थवादी और समाजिक कहानी भी कहा जाता है। सन् 1936 में जब प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई इसके पश्चात् अनेक कहानी लेखक इससे जुड़े जिन्होंने अनेक यथार्थवादी कहानियाँ लिखी। साहित्य समीक्षकों ने इन्हीं कहानियों को प्रगतिशील कहानियों का नाम दिया, इन कहानिकारों में यशपाल, उपेन्द्रनाथ अश्क, रामप्रसाद थिल्डियाल पहाडी, पाण्डेय वेचन शर्मा उग्र, विष्णु प्रभाकर, अमृतलाल नागर, आदि कहानीकार मुख्य हैं। इन सभी कहानीकारों ने प्रेमचन्द की तरह ही धार्मिक अंधविश्वासों, सामाजिक कुरीतियों, आर्थिक शोषण तथा राजनैतिक पराधीनता ने निर्धन वर्ग को अपनी

कहानियों का विषय बनाया। इन कहानीकारों ने निर्धन वर्ग को अपनी कहानियों के केन्द्र में रखा, इनकी कहानियाँ कहानी तत्वों की कसौटी पर खरी उतरती है। इन कहानियों के शीर्षक, कथानक, कथोपकथन, चरित्र चित्रण, पात्र, उद्देश्य, देशकाल-वातावरण तथा भाषा-शैली जैसे तत्व इनकी कहानियों में प्रमुखता से उभरे हैं. ये जब कभी पात्रों का चरित्र-चित्रण करते हैं तो इनकी दृष्टि व्यक्ति के अन्तर्मन के बजाय उसके सामाजिक व्यवहार पर अधिक स्थिर होती है। इन कहानियों के मुख्य कहानीकारों की रचनाएँ इस प्रकार हैं -

यशपाल - इस अवधि में मार्क्सवादी यशपाल हिन्दी कहानी के क्षेत्र में उतरे। इन्होंने सामाजिक जीवन के यथार्थ को लेकर उसकी मार्क्सवादी व्याख्या की। यशपाल की रचनाओं पर फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव दृष्टिगत होता है। इनकी कहानियों में मध्यम वर्गीय जीवन की विसंगतियों का मार्मिक चित्रण मिलता है। साथ ही निम्नवर्गीय शोषितों की व्यथा, अभाव और जीवन संघर्ष के भी दर्शन होते हैं। इनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं। महाराजा का इलाज, परदा, उत्तराधिकारी, आदमी का बच्चा, परलोक, कर्मफल, पतिव्रता, प्रतिष्ठा का बोझ ज्ञानदान, धर्मरक्षा, काला आदमी, चार आना, फूलों का कुरता आदि। पिजड़े की उड़ान, फूलों का कुर्ता, धर्मयुद्ध, सच बोलने की भूल, आदि आपके कहानी संग्रह हैं।

उपेन्द्र नाथ अश्क - उपेन्द्रनाथ 'अश्क' मानवतावादी दृष्टिकोण और मनोविश्लेषण चरित्र- युक्त कहानी लिखने वाले कहानीकार हैं। समाज की विषमताओं, मध्यमवर्गीय जीवन की विसंगतियों, निम्न वर्गीय अभावग्रस्त जीवन- संकटों का मार्मिक अंकन वाली इनकी कहानियाँ कथा- शिल्प की दृष्टि से सफल कहानियाँ हैं। इनकी प्रसिद्ध कहानियों में डाची, आकाश चारी, नासूर, अंकुर, खाली डिब्बा, एक उदासीन शाम आदि कहानियाँ प्रसिद्ध कहनियाँ हैं। इन्होंने अपने जीवनकाल में दो सौ से अधिक कहानियाँ लिखी। बैगन का पैाधा , झेलम के सात पुल छीटे आदि कहानी - संग्रह इनके इन्हीं कहानियों के प्रसिद्ध संग्रह है।

रमाप्रसाद घिल्डियाल पहाड़ी - रामप्रसाद घिल्डियाल पहाड़ी ने मनोवैज्ञानिक कहानियों के साथ-साथ प्रगतिवादी कहानियाँ लिखी, इनकी कहानियों में कहीं-कहीं उन्मुक्त प्रेम की छटा के भी दर्शन होते हैं। 'राजरानी' हिरन की आँखें, तमाशा, मोर्चा आदि इनकी लोकप्रिय कहानियाँ हैं।

पाण्डेय वेचन शर्मा 'उग्र'- पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' ने इस काल में प्रेमचन्द और जयशंकर प्रसाद से भिन्न एक अलग रास्ता बनाया, उस समय की राजनीति और समाज की विकृतियों को अपनी रचनाओं का विषय बनाने वाले उग्र जी ने अंग्रजी संघर्ष के विरूद्ध चल रहे क्रान्तिकारी संघर्ष को लेकर कई कहानियाँ लिखी। 'उसकी माँ', 'देशभक्त' जैसी कहानी इनकी इसी कोटि की कहानियाँ हैं। 'दोजख की आग', इन्द्रधनुष आदि आपके कहानी-संग्रह हैं।

बिष्णु प्रभाकर - बिष्णु प्रभाकर एक सुधारवादी लेखक हैं। इन्होंने वर्तमान समय की समाजिक व्यवस्था तथा व्यक्ति एवं परिवार के सम्बन्धों को लेकर कहानियों की रचना की। इस कहानीकार ने वर्तमान सामाजिक एवं शासन व्यवस्था में व्यक्ति- जीवन के संकट को बड़े मार्मिक ढ़ग से प्रस्तुत किया है, इनकी ''धरती अब भी घूम रही है'' लोकप्रिय कहानी है, रहमान का बेटा,

ठेका, जज का फैसला' गृहस्थी मेरा बेटा, अभाव आदि कहानियाँ बिष्णु प्रभाकर की उत्तम कोटि की कहानियाँ हैं।

अमृतलाल नागर - अमृतलाल नागर ने आज के जीवन के आर्थिक संकट, विपन्नता, पारिवारिक सम्बन्धों का तनाव आदि विषयों को अपनी कहानियों की सामग्री बनाया। दो आस्थाएँ, गरीब की हाय, निर्धन कयामत का दिन, गोरख धन्धा आदि कहानियाँ इनकी महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं।

मनोवैज्ञानिक कहानियाँ - मुंशी प्रेमचन्द पश्चात् हिन्दी कहानी संसार में कुछ ऐसे कहानिकार भी आये जिन्होंने मानवमन को केन्द्र में रखा। इन कहानीकारों ने सामाजिक समस्याओं की अपेक्षा आदमी की वैयक्तिक पीड़ाओं और मानसिक अन्तर्द्वन्द्व को अधिक महत्व दिया। इन्होंने मानव के अवचेतन मन की क्रियाओं और उनकी मानसिक ग्रन्थियों को अपनी कहानियों का विषय बनाया मानव के अन्तर्द्वन्द्व को केन्द्र में रखने के कारण इन कहानीकारों की कहानियों में मनोवैज्ञानिक सत्य और चरित्र की वैयक्तिक विशिष्टता विशेष रूप से व्यक्त हुई है। इन कहानिकारों में, जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय, भगवती चरण वर्मा, चन्द्र गुप्त विद्यालंकार, आदि कहानीकार मुख्य हैं।

जैनेन्द्र कुमार - प्रेमचन्द और जयशंकर प्रसाद के यथार्थ और आदर्श की दिशा से बिल्कुल हटकर मानव मन के चितेरे के रूप में जिन अन्य कहानीकारों ने हिन्दी कहानी संसार में प्रवेश किया उनमें जैनेन्द्रकुमार का प्रमुख स्थान है। इनका ध्यान समाज के विस्तार की अपेक्षा व्यक्ति की मानसिक गुत्थियों, सामाजिक परिवेश, के दबाब और प्रतिबद्धता के कारण होने वाली वैयक्तिक समस्याओं की ओर अधिक गया। परिवार एवं समाज में नारी-पुरूषों के सम्बन्धों तथा उनसे उत्पन्न उलझनों का विश्लेषण करने वाले इनकी कहानी जहाँ लोक प्रिय और सर्वग्राह्य हुई हैं वहाँ इन कहानियों ने समाज के चिन्तकों को जीवन के अनके पहलुओं पर चिन्तन करने के लिए भी बाध्य किया हैं इनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं- पत्नी, खेल, चोर, पाजेब, जाह्नवी, समाप्ति, एक रात, नीलम देश की राजकन्या , जय संधि, मास्टर जी आदि, जैनेन्द्र कुमार के आठ कहानी संग्रहों में इनकी सभी कहानियाँ संग्रहित हैं।

अज्ञेय - 'अज्ञेय' एक ऐसे कहानीकार हैं जिन्होंने मानव के मानसिक अन्तर्द्वन्द्वों और गूढ़ रहस्यों को परखने का यत्न किया। इसलिए इनकी कहानियों में एक विशेष प्रकार की 'चिन्तन शीलता तथा तटस्थ बैदिकता के दर्शन होते हैं। विषय की दृष्टि से जैसी विविधता अज्ञेय जी की कहानियों मिलती है वह विविधता इस युग के अन्य कहानिकारों की कहानियों में कम मिलती हैं। इनकी प्रसिद्ध कहानियों में रोज, गैग्रीन, कोठरी की बात छोड़ा हुआ रास्ता, पगोड़ा वृक्ष, पुरूष का भाग्य' आदि कहानियाँ हैं। इन कहानियों के अतिरिक्त अज्ञेय जी ने स्वतन्त्रता आन्दोलन सम्बन्धी घटनाओं तथा पौराणिक और ऐतिहासिक सन्दर्भों पर भी कहानियाँ लिखी हैं। विपथगा, शरणार्थी, परम्परा, अमर वल्लरी, कोठरी की बात आदि आपके कहानी संग्रह है।

इलाचन्द्र जोशी - इलाचन्द्र जोशी फ्राइड के मनोविश्लेषण सिद्धान्त को साथ लेकर चलने वाले लेखक हैं। इनकी कहानियों में मध्यमवर्गीय समाज के व्यक्तियों का विश्लेषण मिलता है। इनकी

प्रमुख कहानियाँ हैं - चरणों की दासी, रोगी, परित्यक्ता, जारज, अनाश्रित, होली, धन का अभिशाप, प्रतिव्रता या पिशाची, एकाकी, मैं, मेरी डायरी के दो नीरस पृष्ठ आदि।

स्वातंत्योत्तर हिन्दी कहानी - स्वतन्त्रता के पश्चात् हिन्दी कहानी के क्षेत्र में बड़े परिवर्तन आये। स्वतंत्रता पश्चात् लिखी गई हिन्दी कहानी में आधुनिक जीवन की विविध समस्याओं का यथार्थ चित्रण हुआ। इन समस्याओं में निम्नवर्गीय व्यक्ति के द्वारा अपने विकास के लिए किये जाने वाले यत्नों से पैदा हुए अवरोध और संकटों से लेकर उच्चवर्गीय व्यक्तियों के जीवन में उपस्थित विसंगति, कुण्ठा आदि की बातें शामिल है। नगरीय जीवन में व्यक्ति का अकेलापन, नौकरीपेशा नारी के अनके पक्षीय सम्बन्ध और उससे उत्पन्न होने वाली कठिनाइयाँ, शिक्षितों की बेरोजगारी की समस्या, राजनैतिक गिरावट, परिवारों के टूटने आदि कई विषयों पर कहानियाँ लिखी गई है। शिल्प की दृष्टि से इन कहानियों में कई प्रयोग किये गए हैं। इस समय के कहानीकारों में, मोहन राकेश राजेन्द्र यादव, निर्मल वर्मा, कमलेश्वर, मार्कण्डेय, अमर कान्त मन्नू भण्डारी, फणीश्वर नाथ रेणु, कमल जोशी, उषा प्रियंवदा शिवप्रसाद सिंह, रघुवीर सहाय, रामकुमार भ्रमर, विजय चौहान, धर्मवीर भारती, भीष्म साहनी, लक्ष्मी नारायण लाल, हिमांशु जोशी, हरिशंकर परसाई, महीपसिंह, श्रीकान्त वर्मा, कृष्ण वलेदव वैद, ज्ञानरंजन, सुरेश सिन्हा, गिरिराज किशोर, भीमसेन त्यागी, धर्मेन्द्र गुप्त, इब्राहिम शरीफ, विश्वेश्वर, महेन्द्र भल्ला, रवीन्द्र कालिया, काशीनाथ सिंह, प्रबोध कुमार, प्रयाग शुक्ल गोविन्द्र मिश्र विजय मोहन सिंह आदि है। (हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास-बाबू गुलाब राय- पृष्ठ- 165)

नयी कहानी - नयी कहानी सन् 1950 और सन् 1953 के पश्चात् अस्तित्व में आयी। वास्तव में 'नयी कहानी' लेखक साहित्य के क्षेत्र में एक आन्दोलन था। इस आन्दोलन से हिन्दी जगत में काफी तर्क वितर्क सामने आये, जिसके फलस्वरूप 'नयी कहानी' अपने स्वरूप, कथ्य ओर उद्धेश्य की दृष्टि से पूर्ववर्ती कहानियों से विशिष्ट है। 'स्वतन्त्रता के पश्चात् भारतीय जन जीवन में अनेक परिवर्तन आये जिसका यथार्थ प्रतिबिम्ब 'नई कहानी' में देखने को मिलता हैं।

कमलेश्वर की 'राजा निरबंसिया', 'मुर्दो की दुनिया', तीन दिन पहले की बात, चार घर, मोहन राकेश की - 'मलबे का मालिक', राजेन्द्र यादय की 'जहाँ लक्ष्मी कैद हैं,' अमरकान्त की 'डिप्टी कलक्टरी' आदि कहानियों में समकालीन यर्थाथ बखूबी व्यक्त हुआ है।

पुराने विश्वासों और मूल्यों को त्यागना तथा नवीन मूल्यों की खोज करना आधुनिकता है। आधुनिकता का यह लक्षण हमारे दैनिक जीवन की क्रियाओं से लकर चिन्तन मनन को भी प्रभावित कर रहा है। यह आधुनिकता मात्र नगरों और कस्बों तक ही सीमित नहीं है अपितु इसने धीरे-धीरे ग्रामों को भी अपने आँचल में समेट लिया है। आज का कहानी कार भी जिससे वंचित नहीं है। इसलिए उसकी कहानी भी आधुनिकता की पक्षधर हो गई है। शिल्प की दृष्टि से 'नयी कहानी' की अपनी विशिष्टता है। कहानी की भाषा, पात्र, घटना आदि में दिन प्रति दिन नये परिनवर्तन आ रहे हैं। इस कहानी में नये प्रकार के बिम्ब विधान, नयी भाषा शैली, नये उपमान और नये मुहावरे आदि में विशेषता परिलक्षित होती है। भाषा में अलंकारिता का अभाव तथा बोल चाल की परिपूर्णता होती है। वर्तमान में कहानी दो वातावरणों को केन्द्र में रखकर लिखी

जा रही है। प्रथम ग्रामीण वातावरण और द्वितीय नगरीय परिवेश। ग्रामीण वातावरण को केन्द्र में रखकर लिखी गई कहानी आंचलिक कहानी कहलाती है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' की 'तीसरी कसम' 'ठुमरी, 'लाल पान की बेगम, ' रसप्रिया' शैलेश मटियानी की 'प्रेतमुक्ति' माता' 'भस्मासुर', दो मुखों का एक सूर्य, शिवप्रसाद सिंह की 'नीच जात' धरा, मुरदा सराय, अँधेरा हँस्ता है, मार्कण्डेय की 'हंसा जाई अकेला' 'भूदान', शेखर जोशी की 'तर्पण', राजेन्द्र अवस्थी की 'अमरबेल', लक्ष्मीनारायण लाल की 'माघ मेले का ठाकुर', रामदरश मिश्र की 'एक आँख एक जिन्दगी' आदि कहानियाँ आंचलिक कहानियाँ हैं।

नगरीय परिवेश को केन्द्र में रखकर लिखी गई कहानियों में नगरो की कृत्रिम जीवन प्रणाली, परिवार और समाज के अन्दर व्यक्तियों के नयी पद्धति के अन्तः सम्बन्ध, स्त्री-पुरूष सम्बन्धों में तनाव, व्यक्ति का अकेलापन, जीवन मूल्यों का विघटन इत्यादि का वर्णन विस्तार से हुआ है। निर्मल वर्मा के 'पराये शहर में' 'अन्तर' 'परिन्दे', 'लवर्स', 'लन्दन की रात', मोहन राकेश की 'वासना की छाया', 'काला रोजगार', मिस्टर भाटिया 'मलवे का मालिक', राजेन्द्र यादव की 'जहाँ लक्ष्मी कैद है', एक कमजोर लड़की का कहानी', 'टूटना', कृष्ण बलेदव वैद की ' अजनबी', 'बीच का दरवाजा,' 'भगवान के नाम सिफारिश की चिठ्टी', 'मन्नू भण्डारी की 'वापसी', 'मछलियाँ', 'गीत का चुम्बन', भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत', 'खून का रिश्ता', रघुवीर सहाय की प्रेमिका', 'मेरे और नंगी औरत के बीच', 'सेब', रमेश बक्षी की 'आया गीता गा रही थी', 'अलग-अलग कोण', 'राजकुमार की लौ पर रही हथेली', 'सेलर', श्रीकान्त वर्मा की 'शव यात्रा', 'दूसरे के पैर', महीपसिंह की 'काला बाय, गोरा बाय', आदि कहानियाँ नगरीय परिवेश की कहानियाँ हैं।

छोटे-छोटे कस्बों के व्यक्तियों की मनोवृत्ति और उपेक्षित जन जीवन का चित्रण करने वाली कहानियोंमें कमलेश्वर की 'मुरदों की दुनिया', 'तीन दिन पहले की बात', 'चार घर', धर्मवीर भारती की 'सार्वत्री न0 दो', 'धुआँ', 'कुलटा', गुलकी बन्नों, 'अगला अवतार', 'कृष्णा सोवती की', यारों के यार,' अमरकान्त की 'जिन्दगी और जोंक' 'डिप्टी कलेक्टरी' 'दोपहर का भोजन' विष्णु प्रभाकर की 'धरती अब धम रही है', मनहर चौहान की 'घर धुसरा', रामकुमार भ्रमर की 'गिरस्तिन', हिमांशु जोशी की 'एक बूँद पानी' अभाव, हृदयेश की 'सभाएँ' 'डेकोरेशन पीस'' कहानियाँ काफी लोकप्रिय हुई।

ग्रामीण अंचल, नगरीय परिवेश और कस्बों के जन जीवन पर लिखी कहानियों के अतिरिक्त वर्तमान समाज की विकृतियों, व्यक्तियों के ढोंग, आरोपित प्रतिष्ठा, भ्रष्टाचार आदि पर व्यंग्य तथा उपहार करती हुई अनेक, कहानियाँ लिखी गई, इन कहानियों में हरिशंकर परसाई की निठल्ले की डायरी, 'सड़क बन हरी है', 'पोस्टर एकता', शरद जोशी की 'रोटी और घण्टी का सम्बन्ध', 'बेकरी बोध' प्रमुख है।

वर्तमान में इन कहानियों की संख्या में वृद्धि करने वाले अन्य कहानीकारों में, गंगा प्रसाद विमल, दूघनाथ सिंह, राजकमल चौधरी, गिरिराज किशोर, सुरेश सिंन्हा ज्ञानरंजन, धर्मेन्द्र

गुप्त, इब्राहिम शरीफ, विश्वेश्वर, भीमसेन त्यागी, अमर कान्त, रतीलाल शाहनी, कुष्ण बलदेव वैद, विपिन अग्रवाल आदि है।

कहानी की इस जीवन यात्रा में साठ के बाद की कहानी में अनके आन्दोलन चलाये गए, जिनमें 'सामन्तर कहानी', 'सचेतन कहानी', 'अकहानी आदि साहित्य आन्दोलन मुख्य हैं। इन आन्दोलनों पर फ्रान्स-जर्मनी में प्रचलित आन्दोलनों का प्रभाव था। इन आन्दोलनों से कमलेश्वर , गंगाप्रसाद विमल, महीपसिंह, रवीन्द्र कालिया, ज्ञानरंजन आदि कथाकार प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े रहे। हिन्दी कहानी के विकास में मात्र इन आन्दोलनों की महत्वपूर्ण भूमिका नहीं रही अपितु 'कहानी', नई कहानियाँ ' कल्पना', सारिका' संचेतना, कहानियाँ आदि कहानी पत्रिकाओं ने भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अभ्यास प्रश्न

(1) हिन्दी की प्राचीन कहानियाँ हैं- एक पर सही का चिहन लगायें-

1. राजा-रानी की कहानियाँ ( )
2. देवताओं और राक्षसों की कहानियाँ ( )
3. पशुपक्षियों की कहानियाँ ( )
4. उपरोक्त सभी की कहानियाँ ( )

(2) प्राचीन कहानियाँ-

1. यथार्थवादी कहानियाँ हैं,
2. वैज्ञानिक कहानियाँ हैं,
3. काल्पनिक कहानियाँ हैं,
4. कहानी तत्वों के आधार पर लिखी कहानियाँ हैं,

(3) हिन्दी की प्रथम कहानी है-

1. नासिकेतोपाख्यान
2. रानी केतकी की कहानी
3. इन्दुमती
4. अद्भुत अपूर्व स्वप्न

(4) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें -

1. 'चौरासी बैष्णवन की वार्ता,.................... की रचना हैं
2. वर्तमान कहानी लेखन की प्रेरणा पूर्व में .... कहानियाँ से मिली।

अभ्यास प्रश्न

(5) हिन्दी कहानी के विकास के केन्द्र में मुंशी प्रेमचन्द को रखकर बाँटा गया है।

1. चार चरणों में ( )
2. तीन चरणों में ( )
3. पाँच चरणों में ( )
4. दो चरणो में ( )

(6) राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द की कहानी हैं-
1. इन्दुमती ( )
2. ग्यारह वर्ष का समय ( )
3. राजा भोज का सपना ( )
4. दुलाई वाली ( )

(7) सही क्रम में लिखिए

1. कहानीकार	कहानी
2. न्द्रधर शर्मा गुलेरी	पुरस्कार
3. मुंशी प्रेमचन्द	रक्षा बन्धन
4. जयशंकर प्रसाद	पंच परमेश्वर
5. विश्वम्भर नाथ शर्मा	उसने कहा था

(8) प्रेमचन्द युगीत कहानियों की तीन विशेषताऐं लिखिए।
(9) कहानीकार यशपाल की कहानियाँ पर प्रभाव है।
1. मार्क्सवाद का
2. गाँधी वाद का
3. मानवतावाद का
4. व्यक्तिवाद का

(10) श्री रमाप्रसाद घिल्डियाल पहाड़ी की तीन कहानियों के नाम लिखिए।

अभ्यास प्रश्न

1- प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी की तीन प्रमुख प्रवृत्तियाँ लिखिए।
2- नई कहानी के चार कहानीकारों के नाम लिखिए।

2.5 सारांश

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप जान चुके हैं कि -

- कथा साहित्य की दो प्रमुख विधाएँ उपन्यास और कहानी हैं।

- कहानी का आदि स्वरूप क्या है?
- कहानी का उद्भव कैसे हुआ ?
- कहानी का क्रमिक विकास कैसे हुआ?
- कहानी साहित्य के विकास में प्रेमचन्द का क्या योगदान रहा है?
- कहानी कारों का संक्षिप्त परिचय और उनकी कहानियाँ।

2.6 शब्दावली

- पुरातन - प्राचीन, पुरानी
- अविष्कार - खोज, निर्माण
- अन्तर्सूत्र - अन्दर के सम्बन्ध
- सम्राट - राजा
- अलौकिक - जो सांसारिक न हो
- परिमार्जित - शुद्ध
- संस्कृततिष्ठ - तत्सम शब्दावली से परिपूर्ण
- पराधीनता - गुलामी
- ग्राह्य - ग्रहण करने योग्य
- अंकन - आँकना, गणना, वर्णन,
- वैयक्तिक - व्यक्ति सम्बन्धी
- ह्रासोन्मुख - पतन की ओर जाने वाले

2.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1 – उत्तर

(1) 4. उपरोक्त सभी की कहानियाँ

(2) 3. काल्पनिक कहानियाँ हैं।

(3) 2. रानी केतकी की कहानी

(4) रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. चौरासी बैष्णवन की वार्ताः स्वामी गोकुल नाथ की रचना है।
2. वर्तमान कहानी लेखन की प्रेरण पूर्व में अंग्रजी और बंगला में रची गई और हिन्दी में अनुदित कहानियों से मिली।

(5) हिन्दी कहानी के विकास के केन्द्र में मुंशी प्रेमचन्द को रखकर बाँटा गया है।

2- तीन चरणों में

(6) (3) राजा भोज का सपना

(7)

कहानीकार	**कहानी**
चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	उसने कहा था।
मुंशी प्रेमचन्द	पंच परमेश्वर
जयशंकर प्रसाद	पुरस्कार
विश्वम्भर नाथ शर्मा	रक्षा बन्धन

(8) प्रेमचन्द युगीन कहानियों की तीन विशेषताऐं।

1. परिमार्जित भाषा वाली कहानियाँ हैं।
2. ये आदर्श और यथार्थवादी कहानियाँ हैं।
3. ये मानवीय सम्बन्धों को उद्घाटित करने वाली कहानियाँ हैं।

(9) कहानीकार यशपाल की कहानियों पर प्रभाव हैं

1. मार्क्सवाद का

(10) श्री रमा प्रसाद घिल्डियाल 'पहाड़ी' की तीन कहानियाँ हैं।

1. राजरानी
2. हिरन की आँखें
3. तमाशा

अभ्यास प्रश्न 2

(1) प्रेमचन्दोत्तर कहानी की तीन विशेषताऐं

1. मनोवैज्ञानिक कहानियाँ
2. मध्यम वर्गीय हासोन्मुख समाज के व्यक्तियों का विश्लेषण करने वाली कहानियाँ।
3. प्रगतिशील कहानियाँ

(2) नई कहानी के चार कहानीकारों के नाम-

1. कमलेश्वर
2. मोहन राकेश
3. राजेन्द्र यादव
4. अमरकान्त

2.8 संदर्भ ग्रंथ सूची

1- द्विवेदी, आचार्य हजारी प्रसाद, साहित्य सहचर।

2- द्विवेदी, आचार्य हजारी प्रसाद,हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास, राजकमल प्रकाशन।

3- राय, बाबू गुलाब, हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास।

2.9 उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा।

2.10 निबंधात्मक प्रश्न

1. प्रेमचंद युगीन काहानियों की विशेषताएँ वर्णित कीजिए।
2. आधुनिक कहानियों में व्यक्त समाजिक परिवेश का उद्घाटन कीजिए।

इकाई 3 - हिन्दी उपन्यास का उद्भव व विकास

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 हिन्दी उपन्यास का उद्भव

3.4 हिन्दी उपन्यास का विकास

3.4.1 प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास

3.4.2 प्रेमचन्द युगीन हिन्दी उपन्यास

3.4.3 प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास

3.5 सारांश

3.6 शब्दावली

3.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.8 उपयोगी पाठ्य सामग्री

3.9 निबंधात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

उपन्यास के उद्भव और विकास के विषय में जानने से पूर्व यह जानना आवश्यक हैं कि उपन्यास क्या है ? इसके कौन-कौन से तत्व हैं ? और उपन्यास कितने प्रकार के होते हैं ? साथ ही आपको यह जानना भी आवश्यक होगा कि हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास कैसे हुआ ? तथा इसके विकास में किन-किन उपन्यासकारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही ?

आपने 'हिन्दी गद्य का विकास' पढ़ते हुए देखा होगा कि हिन्दी गद्य का विकास किस तरह हुआ और किस तरह इस गद्य से हिन्दी की नई नई विधाओं का जन्म हुआ। हिन्दी कहानी के समान ही हिन्दी उपन्यास का इतिहास भी प्राचीन नहीं है। इस विधा का आरम्भ बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में हुआ। वैसे तो भारतेन्दु युग को ही हिन्दी उपन्यास को जन्म देने का श्रेय जाता है लेकिन इस युग से पूर्व 1877 में श्रृद्धाराम फुल्लौरी ने भाग्यवती उपन्यास लिखकर हिन्दी उपन्यास विधा का आरम्भ कर दिया था। हिन्दी साहित्य के इतिहास मे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लाला श्री विवास दास के ''परीक्षा गुरू'' (1882) उपन्यास को हिन्दी के मौलिक उपन्यास की मान्यता प्रदान की। उन्होंने यह स्वीकार किया कि यही हिन्दी का प्रथम उपन्यास है। इसके पश्चात् हिन्दी भाषा में अनेक तिलिस्मी जासूसी और ऐयारी उपन्यासों को सृजन हुआ, लेकिन मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यासों से इस विधा को नया आयाम मिला। इस इकाई में हम

तिलिस्मी, ऐयारी और जासूसी उपन्यासों से हटकर उन उपन्यासों के विषय में पढ़ेगे जो विशुद्ध रूप से हिन्दी उपन्यास स्वीकार किये जाते हैं।

उपन्यास शब्द उप+न्यास दो शब्दों के मेल से बिना है। जिसके 'उप' उपसर्ग का अर्थ होता है सामने निकट या समीप, और 'न्यास' का अर्थ है , धरोहर और रखना, इस आधार पर उपन्यास का अर्थ है एक लेखक अपने जीवन एवं समाज के आस पास जो कुछ भी देखता हो उसे अपने भाव विचार से कल्पना द्वारा सजा सँवार कर जिस विधा के माध्यम से हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है वही 'उपन्यास' है। दूसरे शब्दों में जो साहित्यिक विधा जिसे पढ़कर यह आभास हो कि इसमें वर्णित घटना हमारे निकट की नहीं अपितु हमारी है 'उपन्यास' कहलाती है।

उपन्यास आधुनिक जीवन के सत्य को निकटता से समझने और उसे काल्पनिक रूप प्रदान करने वाली विधा है। यद्यपि उपन्यास की कथा काल्पनिक होती है किन्तु वह जीवन के यथार्थ का स्पर्श करती है। इसके पात्र समाज से जुड़े व्यक्ति होते हैं। इसकी घटनाएँ हमारे मध्य की होती है जिनमें एक तर्किक संगति होती है।

उपन्यास का जन्म पश्चिमी साहित्य से हुआ। पश्चिम के साहित्यकारों ने इस नयी विधा को जन्म दिया। समय-समय पर इसमें अनके परिवर्तन होते रहे। इसे सोद्देश्य लिखा जाता रहा और यह साहित्य की कहानी विधा का व्यापक रूप बन गया। पश्चिम से ही इसने भारतीय साहित्य में प्रवेश किया और आज यह हिन्दी साहित्य की प्रमुख विधाओं में से एक है। उपन्यास साहित्य के आचार्यों ने उपन्यास के निम्नलिखित तत्व निर्धारित किये हैं।

1. शीर्षक
2. कथावस्तु- कथानक
3. कथोपकथन-संवाद योजना
4. पात्र और चरित्र चित्रण
5. देशकाल और वातावरण
6. भाषा और शैली
7. उद्देश्य

इन्हीं तत्वों के आधार पर उपन्यास की समीक्षा की जाती है। इन्हीं तत्वों को केन्द्र में रखकर उपन्यास विधा के आचार्यों ने उपन्यास के अनेक भेद किये हैं जिन्हें आपकी जानकारी के लिए संक्षेप में यहाँ दिया जा रहा है।

1. कथावस्तु के आधार पर उपन्यास

(अ) बिषयवस्तु की दृष्टि से ऐतिहासिक उपन्यास, परिवारिक उपन्यास, सामाजिक उपन्यास और पौराणिक उपन्यास।

(ब) वर्णन शैली की दृष्टि से- घटना प्रधान उपन्यास एवं भाव प्रधान उपन्यास।

2. चरित्र चित्रण पर आधारित उपन्यास

3. देशकाल और वातावरण पर आधारित उपन्यास
4. भाषा शैली पर आधारित उपन्यास
5. उद्देश्य पर आधारित उपन्यास।

उपन्यास विधा पर की गई इस शास्त्रीय चर्चा के पश्चात् अब हम आपको हिन्दी उपन्यास के उद्भव से परिचित कराऐंगे।

3.2 उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम में अब तक आप हिन्दी गद्य का उद्भव एवं विकास, तथा हिन्दी कहानी का उद्भव एवं विकास का अध्ययन कर चुके हैं। आशा है इन पाठों से आप हिन्दी गद्य का उद्भव एवं विकास तथा हिन्दी कहानी का उद्भव एवं विकास को समझ गए होंगे। इन इकाईयों को पढ़ने के पश्चात् आप गद्य और कहानी विधाओं की विशेषताओं से भी परिचित हो गए होंगे। यह इकाई हिन्दी उपन्यास से सम्बन्धित है। इस इकाई में हम आपको हिन्दी उपन्यास के स्वरूप और इसके उद्भव व विकास के विषय में समझायेंगे।

इस इकाई के अध्ययनोपरान्त आप -

- उपन्यास के स्वरूप को समझ सकेंगे।
- हिन्दी उपन्यास के उद्भव को जान पायेंगे।
- हिन्दी उपन्यास के विकास के विभिन्न चरणों के विषय में बता सकेंगे।
- हिन्दी उपन्यास के विकास में किन-किन लेखकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसके क्रमिक इतिहास को प्रस्तुत कर सकेंगे।

3.3 हिन्दी उपन्यास का उद्भव

अब तक आपने उपन्यास के स्वरूप के विषय में जानकारी प्राप्त की । इन जानकारियों से आपके मन में यह प्रश्न अवश्य उत्पन्न हो रहे होंगे कि क्या हिन्दी उपन्यास में समयानुकूल अनेक परिवर्तन हुए होंगे? आपके मन में इस प्रश्न का उभरना स्वाभाविक है। लेकिन इसका उत्तर जानने से पूर्व हमें हिन्दी उपन्यास के उद्भव के विषय में जानना भी आवश्यक हो जाता है। जैसा आपको ज्ञात होगा कि हिन्दी कहानियों के अध्ययन करते समय आपको हम पूर्व भी यह जानकारी दे चुके है कि भारत में कथा साहित्य की परम्परा प्राचीन काल से ही रही है। रामायण, महाभारत, उपनिषद् आदि ग्रन्थ अनेक कथा कहानियों से भरे पड़े हैं लेकिन हिन्दी साहित्य में जिस कहानी को हम आज पढ़ते या सुनते हैं उसके बीज पश्चिमी साहित्य से भारतीय साहित्य में आये। इसीलिए वर्तमान के हिन्दी उपन्यास भी कहानी विधा की भाँति ही पश्चिमी साहित्य की देन है। तभी तो हिन्दी उपन्यास का इतिहास भी कहानी साहित्य के इतिहास की भाँति बहुत प्राचीन नहीं है। जैसा हिन्दी साहित्य के इतिहासकार स्वीकार करते हैं कि हिन्दी साहित्य की इस

विधा का जन्म भारतेन्दु युग में हुआ। पहले तो बंगला उपन्यासों के अनुवाद द्वारा हिन्दी उपन्यास साहित्य की नींव रखी गई और इसके पश्चात् भारतेन्दु युग में अनेक उपन्यासकारों ने अपनी लेखनी से हिन्दी उपन्यास की शून्यता को समाप्त किया।

3.4 हिन्दी उपन्यास का विकास

जैसा कि हम पूर्व भी आपको बतला चुके हैं कि भारतेन्दु युग में जिस प्रकार अन्य गद्य विधाओं का जन्म हुआ उसी प्रकार हिन्दी उपन्यास भी अस्तित्व में आया। उस समय के शीर्ष साहित्यकार भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने अनेक साहित्यकारों को इस विधा पर लेखनी चलाने के लिए प्रोत्साहित किया। इसी के परिणाम स्वरूप लाल श्री निवासदास ने 'परीक्षा गुरू' नामक वह उपन्यास लिखा जिसे हिन्दी का पहला उपन्यास स्वीकार किया जाता है। इनके पश्चात् अनेक लेखकों ने इस विधा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। मुंशी प्रेमचन्द इसी उपन्यास विधा को आगे बढाने में प्राणप्रण से जुट गए इसीलिए हिन्दी उपन्यास के इतिहासकारों ने मुंशी प्रेमचन्द को केन्द्र में रखकर हिन्दी उपन्यास के विकास क्रम पर अपनी लेखकी चलायी।
इन्होंने हिन्दी के उपन्यास साहित्य का इतिहास लिखते समय इसे तीन चरणों में विभक्त किया।

1. प्रेमचन्द पूर्व युग के हिन्दी उपन्यास।
2. प्रेमचन्द युग के हिन्दी उपन्यास।
3. प्रेमचन्दोत्तर युग के हिन्दी उपन्यास।

3.4.1 प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास :-

हिन्दी का प्रथम उपन्यास किसे स्वीकार करे? विद्वानों में इस बात पर पर्याप्त मतभेद है। लेकिन यह सत्य है कि प्रेमचन्द पूर्व युग में उपन्यास लेखन की परम्परा प्रारम्भ हो गई थी। कुछ विद्वान रानी केतकी की कहानी को हिन्दी का प्रथम उपन्यास स्वीकारते हैं। लेकिन इसके लेखक इंशा अल्ला खाँ ने इसके शीर्षक पर 'कहानी' शब्द जोड़कर इसके उपन्यास होने की सम्भावना को समाप्त कर दिया। सन् 1872 में जब श्री श्रृद्धाराम फिल्लौरी ने 'भाग्यवती' नामक कृति की सर्जना की तो कुछ विद्वानों ने इसे हिन्दी का प्रथम उपन्यास स्वीकारा लेकिन इसमें औपन्यासिक तत्वों के अभाव ने इसे भी उपन्यासों की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास में **परीक्षा गुरू** को हिन्दी का प्रथम उपन्यास स्वीकार किया लेकिन आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भारतेन्दु के 'पूर्ण प्रकाश' और 'चन्द्रप्रभा' को हिन्दी का प्रथम उपन्यास मानकर आचार्य शुक्ल के द्वारा 'परीक्षा गुरू' को हिन्दी का प्रथम उपन्यास मानने पर प्रश्न चिह्न लगा दिया। आचार्य द्विवेदी भले उक्त दोनों उपन्यासों को हिन्दी के प्रथम उपन्यास स्वीकार करें लेकिन विद्वान इन दोनों उपन्यासों पर मराठी और बंगला की छाया मानते हैं।

यद्यपि प्रेमचन्द पूर्व युग के विद्वान बहुत समय तक लाला श्रीनिवासदास के उपन्यास 'परीक्षा गुरू' को हिन्दी के प्रथम उपन्यास के रूप में आदर देते रहे। लेकिन बाबू गुलाब राय जैसे

विद्वान इस पर हितोपदेश की छाया देखते हैं। जिसमें हितोपदेश की सी उपदेशात्मकता और बीच-बीच में श्लोंको की उपस्थिति इसे एक मौलिक उपन्यास की मान्यता से वंचित करती है। इस उपन्यास के अतिरिक्त इस युग में बाबू राधाकृष्णदास का निःसहाय हिन्दु' और पंडित बालकृष्ण भट्ट के 'नूतन ब्रह्मचारी तथा सौ अजान एक सुजान' जैसे उपन्यास चर्चित रहे। इसी श्रृंखला में हिन्दी के प्रसिद्ध कवि पंडित अयोध्यासिंह 'हरिऔध' उपाध्याय का वेनिस का बाँका तथा ठेठ हिन्दी का ठाट' पंडित गोपालदास बरैया का 'सुशीला', लज्जाराम मेहता का धूर्त रसिकलाल, गोपाल राम गहमरी का 'सास पतोहू' तथा किशोरीलाल गोस्वामी का 'लबंग लता' काफी चर्चित उपन्यास रहे। ये उपन्यासकार अपने युग के चर्चित उपन्यासकार रहे हैं। इन उपन्यासकारों का संक्षिप्त परिचय और उनके द्वारा लिखे गए उपन्यासों का उल्लेख हम यहाँ पर इस प्रकार करेंगे।

1. **देवकी नन्दन खत्री** (सन् 1861-1913) - हिन्दी के प्रेमचन्द से पूर्व के उपन्यासकारों में देवकी नन्दन खत्री का नाम काफी चर्चित है। इनके सभी उपन्यासों में घटना-बाहुल्य तिलिस्म और ऐयारी की बातों पर जोर दिया गया है। इनके उपन्यास मौलिक उपन्यास हैं। हिन्दी भाषा में लिखे गए इनके उपन्यासों को पढ़ने के लिए उर्दू जानने वालों ने हिन्दी सीखी। इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं- चन्द्रकान्ता, चन्द्रकान्ता सन्तति, भूतनाथ (पहले छः भाग) काजल की कोठरी, कुसुम-कुमारी, नरेन्द्र मोहिनी 'गुप्त गोदना' वीरेन्द्रवीर आदि। इन उपन्यासों के कारण हिन्दी भाषा का विस्तार हुआ। और हिन्दी उपन्यास विधा लोकप्रिय हुई।
2. **गोपाल दास गहमरी -** श्री गोपालदास गहमरी ने हिन्दी में अनेक जासूसी उपन्यासों का अनुवाद किया। उन्होने अपने जीवन काल में एक जासूसी पत्रिका भी निकाली जिसका नाम था 'जासूस', इस पत्रिका में अनेक जासूसी उपन्यास और कहानियाँ प्रकाशित होती थी।
3. **किशोरी लाल गोस्वामी -** (सन् 1865-1932) श्री किशोरी लाल गोस्वामी साधारण जनता की अभिरूचि के उपन्यास लिखते थे। उन्होंने अपने जीवनकाल में 'लवंगलता', कुसुम कुमारी, अंगूठी का नगीना, लखनऊ की कब्र, चपला, तारा, प्राणदायिनी आदि साठ से अधिक उपन्यास लिखे। इनके उपन्यासों में साहित्यिकता अधिक है लकिन सामान्य पाठक की रूचि को उदार बनाने की विशेषता को न उभार सकने के कारण ये इनके उपन्यास मात्र बौद्धिक वर्ग की रूचि का परिष्कार करते हैं।
4. **बाबू ब्रजनन्दन सहाय -** बाबू ब्रजनन्दन सहाय ने अपने जीवन काल में 'सौन्दर्योपासक' आदर्श मित्र' जैसे चार उपन्यास लिखे। इनके उपन्यासों में घटना वैचित्रय और चरित्र-चित्रण की अपेक्षा भावावेश की मात्रा अधिक है।

इन उपन्यासकारों के अतिरिक्त उस युग में अनेक उपन्यासकारों ने ऐतिहासिक उपन्यास लिखकर हिन्दी उपन्यास विधा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, इनमें श्री गंगा प्रसाद गुप्त का 'पृथ्वीराज चौहान' और श्री श्याम सुन्दर वैद्य का 'पंजाब पतन' जैसे उपन्यास

काफी चर्चित रहे। प्रेमचन्द पूर्व युग के उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में आदर्शवाद के साथ भावुकता तथा भारतीय आदर्श को उभारते का प्रयत्न किया है।

3. 4.2 प्रेमचन्द युग के हिन्दी उपन्यास :-

हिन्दी उपन्यास के क्षत्र में 'प्रेमचन्द' के आगमन से एक नयी क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। इस युग के उपन्यासकारों ने जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करने का कार्य किया। इस युग का प्रारम्भ प्रेमचन्द के 'सेवा सदन' नामक इस उपन्यास से हुआ जिसे सन् 1918 में लिखा गया था। वैसे तो पूर्व में मुंशी प्रेमचन्द ने आदर्शवादी उपन्यास लिखे लेकिन बाद में ये यथार्थवादी उपन्यास लिखने लगे। इन्होंने अपने उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं को स्थान दिया। इस युग के प्रतिनिधि उपन्यासकार होने के कारण मुंशी प्रेमचन्द से प्रेरणा पाकर कई उपन्यासकार हिन्दी उपन्यास विधा को आगे बढ़ाने लगे। इनमें कुछ यथार्थवादी उपन्यासकार थे तो कुछ आदर्शवादी। इस युग के प्रतिनिधि उपन्यास कर निम्नलिखित थे -

1. **उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द** (सन्1881-1936) - हिन्दी में चरित्र प्रधान उपन्यास लिखने में मुंशी प्रेमचन्द की चर्चा सबसे पहले होती है । हिन्दी उपन्यास का क्रमबद्ध और वास्तविक विकास प्रेमचन्द के उपन्यास साहित्य से ही होता है। इससे पूर्व के उपन्यास या तो मराठी-बंगला और अंग्रजी के अनुदित उपन्यास थे या तिलिस्मी, एय्यारी और जासूसी उपन्यास। लेकिन प्रेमचन्द के उपन्यासों में इन सबसे हटकर जो सामाजिक परिदृश्य उत्पन्न हुए उनसे हिन्दी उपन्यास विधा को एक नई दिशा मिली। मुंशी प्रेमचन्द ने अपने जीवन काल में तीन प्रकार के उपन्यास लिखे। इनकी पहली श्रेणी में आने वाले उपन्यास 'प्रतिज्ञा' और 'वरदान' है जिन्हें इन्होंने प्रारम्भिक काल में लिखा। दूसरी श्रेणी के उपन्यास 'सेवा सदन', निर्मला और गबन, है। इस श्रेणी के उन्यासों में मुंशी प्रेमचन्द द्वारा सामाजिक समस्याओं को उभारा गया है। तीसरी श्रेणी के उपन्यास- प्रेमाश्रय, रंगभूमि , कायाकल्प कर्मभूमि और गोदान है। इस श्रेणी के उपन्यासों में उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द ने जीवन के एक अंश नहीं वरन् सम्पूर्ण जीवन को एक साथ देखा है। इनके ये सभी प्रकार के उपन्यास किसी एक वर्ग- विशेष तक सीमित नहीं वरन समाज के सभी वर्गों तक फैले हैं। प्रेमचन्द के इन उपन्यासों में कहीं तो दहेज प्रथा तथा वृद्धावस्था के विवाह से उत्पन्न शंका और अविश्वास के दुष्परिणाम उभरते हैं तो वहीं आभूषण की लालसा और उसके दुष्परिणामों सामने आते दिखायी देते हैं। 'सेवा सदन' और 'निर्मला इसके उदाहरण हैं। इसी तरह रंगभूमि, कायाकल्प और कर्मभूमि में भारत की तत्कालीन राजनीति की स्पष्ट छाप दिखायी देती हैं। इन उपन्यासों में अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध चल रहे महात्मा गाँधी के सत्याग्रह आन्दोलन और समाज सुधार की झलक स्थान-स्थान पर उभरती है। इन उपन्यासों की भाँति 'प्रेमाश्रय' जैसे उपन्यास तत्कालीन जमीदारी प्रथा और कृषक जीवन की झाँकी प्रस्तुत करता है। 'गोदान', प्रेमचन्द जी का सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यास हैं, जिसे

विद्वानों ने ग्राम्य जीवन के महाकाव्य की संज्ञा दी है। 'गोदान' को अगर हम प्रेमचन्द युगीन भारत की प्रतिनिधि कृति कह दें, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

2. **जयशंकर प्रसाद**(सन् 1881- 1933) - प्रेमचन्द युगीन उपन्यासों में जयशंकर प्रसाद का भी अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने मात्र उपन्यास ही नहीं कहानियाँ भी लिखी, लेकिन इनकी सभी कहानियाँ आदर्शवादी कहानियाँ हैं; जबकि उपन्यास यथार्थ के अत्यन्त संनिकट है। प्रसाद जी ने अपने जीवन काल में तीन उपन्यास लिखे। इन उपन्यासों में तितली और कंकाल पूरे और 'इरावती' अधूरा उपन्यास है। प्रसाद जी एक सुधारवादी उपन्यासकार थे इसलिए वे लोगों का ध्यान समाज में फैली बुराइयों की ओर आकृष्ट कर उनसे बचे रहने के लिए सजग करते थे। इनका 'कंकाल' नामक उपन्यास गोस्वामी के उपदेशों के माध्यम से हिन्दु संगठन और धार्मिक तथा सामाजिक आदेर्शों को स्थापित करने का प्रयत्न करता है। इसी संदर्भ में इनका तितली उपन्यास ग्रामीण जीवन की झाँकी और ग्रामीण समस्याओं को प्रस्तुत करता है। इरावती इनका ऐतिहासिक उपन्यास जो इनके आसामायिक निधन से अधूरा ही रह गया।
3. **पंण्डित विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक'** (सन् 1891-1945) - पंडित विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक' उपन्यासकार और कहानीकार दोनों ही थे। 'मिखारिणी', माँ, और संघर्ष, इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं, तो मणिमाला और 'चित्रशाला' इनके प्रसिद्ध कहानी-संग्रह। 'माँ' आपका सफलतम उपन्यास है।
4. **सुदर्शन** (सन् 1869-1967) - श्री 'सुदर्शन' का पूरा नाम पंडित बदरीनाथ भट्ट था। ये पहले उर्दू में लिखते थे और बाद में हिन्दी कथा साहित्य में अवतीर्ण हुए। इनके 'अमर अभिलाषा' और 'भागवन्ती' अन्यन्त लोकप्रिय उपन्यास है। इनके उपन्यास और कहानियों में व्यक्तिगत और परिवारिक जीवन-समस्याओं का चित्रण मिलता है। ये भी प्रेमचन्द की भाँति आदर्शोन्मुख यथार्थवादी थे।
5. **वृन्दावन लाल वर्मा (सन् 1891-1969)** - श्री वृन्दावन लाल वर्मा ऐतिहासिक उपन्यास कार है। इन्होंने अपने जीवन काल में, 'गढ़-कुण्डार' विरादा की पद्मिनी, मृग नयनी, माधवजी सिन्धिया, महारानी दुर्गावती, रामगढ़ की रानी, मुसाहिबजू, ललित विक्रम और अहिल्याबाई जैसे ऐतिहासिक उपन्यास लिखे तो कुण्डली चक्र, सोना और संग्राम, कभी न कभी, टूटे काँटे, अमर बेल, कचनार जैसे उपन्यास भी हैं जिनमें प्रेम के साथ साथ अनके सामाजिक समस्याओं पर भी खुलकर लिखा गया है। 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' इनका प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास है जिसे लोकप्रियता में किसी अन्य उपन्यास से कम नहीं आँका जा सकता।
6. **मुंशी प्रताप नारायाण श्रीवास्तव -** शहरी जीवन पर अपनी लेखनी चलाने वाले मुंशी प्रताप नारायण भी प्रेमचन्द युगीन उपन्याकारों के मध्य सदैव समादृत रहे हैं। इन्होंने अपने जीवन काल में, विदा, विकास, और विलय, नाम तीन उपन्यास लिखे।

मुंशी प्रताप नारायण श्रीवास्तव ने इन तीनों उपन्यासों में एक विशेष सीमा में रहकर स्त्री स्वतन्त्रता का पक्ष लिया।

7. **चण्डी प्रसाद हृदयेश -** श्री हृदयेश एक सफल कहानी कार और उपन्यास रहे हैं। इनके मंगल- प्रभात 'और 'मनोरमा' नामक दो उपन्यास हैं। कवित्व शैली में रची गई इनकी कृतियों में 'नन्दन निकुंज' और ''वनमाला''नामक दो कहानी संग्रह भी हैं। आपकी कथा शैली की तुलना अधिकांश विद्वान संस्कृत के गद्यकार बाण भट्ट की कथा शैली से करते हैं।
8. **पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'**(सन् 1900-1967) - पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' प्रेमचन्द युगीन उपन्यासकारों के मध्य में अपनी एक विशिष्ट शैली के लिए काफी चर्चित रहे। 'चन्द हसीनों के खतूत' दिल्ली का दलाल, बुधुआ की बेटी, शराबी, जीजीजी, घण्टा, फागुन के दिन चार आदि आपके महत्वपूर्ण किन्तु चटपटे उपन्यास हैं। आपने महात्मा ईसा नामक एक नाटक और 'अपनी खबर' नामक आत्म कथा लिखी जो काफी चर्चित रही।
9. **जैनेन्द्र कुमार** (सन् 1905-1988) - जैनेन्द्र कुमार द्वारा उपन्यास के क्षेत्र में नयी शैली का सूत्रपात किया गया। इनके उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक चित्रण की एक विशेष शैली दिखायी पड़ती है। तपोभूमि, परख, सुनीता, सुखदा, त्यागपत्र, कल्याणी, मुक्तिबोध, विवरण, व्यतीत, 'जयवर्धन', अनाम स्वामी, आदि आपके अनेक उपन्यास हैं। उपन्यासों के अतिरिक्त आपके वातायन, एक रात, दो चिड़ियाँ और नीलम देश की राजकन्या जैसे कहानी संग्रह भी प्रकाशित हुए। आने हिन्दी साहित्य को लगभग एक दर्जन उपन्यासों, दस से अधिक कथा-संकलनों, चिन्तनपरक निबन्धों तथा दार्शानिक लेखों से समृद्ध किया। स्त्री पुरूष सम्बन्धों, प्रेम विवाह और काम-प्रसंगों के सम्बन्ध में आपके विचारों को लेकर काफी विवाद भी हुआ। जैनेन्द्र जी को 'भारत का गोर्की' माना जाता हैं। आपकी कई रचनाओं को पुरस्कृत भी किया गया।
10. **शिवपूजन सहाय** (सन् 1893-1963) - श्री शिवूजन सहाय प्रायः सामाजिक विषयों पर लेख लिखते थे। इन्होंने 'देहाती दुनियाँ', नामक एक आंचलिक उपन्यास लिखा।
11. **राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह** (सन् 1891-1966) - राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह ने अपने जीवन काल में 'राम-रहीम' नामक वह प्रसिद्ध उपन्यास लिखा जिसकी कथा शैली ने सहृदय पाठकों को इसकी और आकृष्ट किया। इसके अतिरिक्त आपने चुम्बन और चाँटा, पुरूष और नारी, तथा संस्कार जैसे उपन्यास लिखकर हिन्दी उपन्यास विधा को और समृद्ध किया।

प्रेमचन्द के युग मे हिन्दी उपन्यास विविध मुखी होकर निरन्तर विकास उन्नत शिखरों को स्पर्श करने लगा। इस युग में उपरोक्त उपन्यासकारों के अतिरिक्त महाप्राण निराला, राहुल सांकृत्यायन, चतुरसेन शास्त्री, यशपाल, भगवती चरण वर्मा, भागवती प्रसाद वाजपेयी आदि

लेखक-कवियों ने उपन्यास लेखन प्रारम्भ किया, लेकिन प्रेमचन्दोत्तर युग में ही इन्हें विशेष प्रसिद्धि मिली।

3. 4.3 प्रेमचन्दोत्तर युग के हिन्दी उपन्यास :-

जैसा आप जानते होंगे कि मुशी प्रेमचन्द को हिन्दी उपन्यास का प्रवर्तक कहा जाता है। इन्ही प्रेमचन्द के प्रभामण्डल से आकर्षित होकर कालान्तर में अनेक उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओं से हिन्दी उपन्यास संसार का भण्डार भरा। इन सभी उपन्यासकारों ने युगीन परिधि से हटकर हिन्दी उपन्यास को नई-नई दिशाओं की ओर अग्रसर किया। पूर्व में इन उपन्यासकारों पर गाँधीवाद का प्रभाव पड़ा। लेकिन बाद में कार्ल मार्क्स, फ्रायड आदि के प्रभाव स्वरूप इन्होंने प्रगतिवादी और मनोविश्लेषणवादी विचार धारा के अनुकूल उपन्यास लिखे। प्रेमचन्दोत्तर युग के प्रसिद्ध उपन्यासकार निम्नलिखित हैं -

1. **भगवती चरण वर्मा** (सन् 1903-1981) - भगवती चरण वर्मा प्रेमचन्दोत्तर युग के प्रतिनिधि उपन्यासकार है। सन् 1927 में इनके 'पतन' और सन् 1934 में 'चित्रलेखा' नामक उपन्यास प्रकाशित हुए। इनका 'चित्रलेखा' उपन्यास एक ऐसा उपन्यास है जिस पर दो बार फिल्में बनी। यह पाप-पुण्य की परिभाषा देने वाला उपन्यास बन गया। साहित्य जगत में जिसकी सर्वत्र धूम मच गई । इन उपन्यासों के अतिरिक्त वर्मा जी ने 'तीन वर्ष' 'आखिरी दाँव', टेढ़े-मेढ़े रास्ते, सामर्थ्य और सीमा, वह फिर नहीं आयी, सबहिं नचावत राम गोसाई, भूले बिसरे चित्र, रेखा, युवराज चुण्डा, प्रश्न और मरीचिका, सीधी-सच्ची बातें, चाणक्य आदि उपन्यासों में वर्मा जी ने सामाजिक सम्बन्धों और अन्तर्मन की परतों को खोलने में पूर्णत: सफलता पाई।
2. **आचार्य चतुरसेन शास्त्री** (सन् 1891-1961) - आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने हृदय की प्यास, हृदय की परख, गोली, सोमनाथ, वैशाली की नगरवधू, धर्मपुत्र, खग्रास , वयं रक्षाम:, आत्मदाह, मन्दिर की नर्तकी, आदि उपन्यास लिखकर प्रेमचन्दोत्तर युग के उपन्यास साहित्य को समृद्ध करने में जो भूमिका निभायी है इसकी जितनी प्रशंसा की जाय वह कम ही है। आचार्य जी ने अपने कथा साहित्य की अधिकतर सामग्री पुराण और इतिहास से उठायी है। तत्सम् शब्दावली से युक्त इनकी भाषा इस युग के अन्य उपन्यासकारों से भिन्न है।
3. **भगवती प्रसाद वाजपेयी** (सन् 1899-1973) - श्री भगवती प्रसाद वाजपेयी ने अपने जीवन काल में ''प्रेमपथ, प्यासा, कर्मपथ, चलते-चलते, निमन्त्रण, दो बहिने, परित्यक्ता, यथार्थ से आगे, गुप्तधन, विश्वास का बल, टूटा टी सेट, आदि उपन्यास लिखकर औपन्यासिक जगत में नई क्राँन्ति उत्पन्न की । आपने अपने उपन्यासों में व्यक्ति और समाज के सम्बन्धों और उसके अन्तर्जगत की व्याख्या और विश्लेषण को औपन्यासिक ताने-बाने में बुना है।
4. **यशपाल** (सन् 1903-1975) - श्री यशपाल का नाम प्रगतिवादी और यथार्थवादी कथाकारों में सबसे पहले आता है। 'दादा कामरेड,' देशद्रोही, मनुष्य के रूप, बारह

घण्टे, दिव्या, अमिता जैसे उपन्यास आपने सामाजिक परिप्रेक्ष्य और इतिहास को लेकर लिखे हैं। आपका 'झूठी सच' उपन्यास भागों में लिखा उपन्यास है।

5. **अज्ञेय** (सन् 1911-1987) - मनोवैज्ञानिक कथाकारों में 'अज्ञेय' का नाम विशेष उल्लेखनीय है। अज्ञेय के शेखर एक जीवनी (दो भाग) 'अपने-अपने अजनबी', नदी के द्वीप आदि प्रसिद्ध उपन्यास हैं।
6. **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी** (सन् 1907-1979) - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आलोचक और निबन्धकार होने के साथ साथ एक सफल उपन्यासकार भी थे। इन्होंने अपने जीवन काल में 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'चारूचन्द्रलेख', 'पुनर्नवा', और 'अनामदास का पोथा', जैसे आत्मकथ्य परक और विशिष्ट कथा शैली के उपन्यास लिखे।
7. **सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'** (सन् 1998-1961) - उपन्यास रचना में स्वछंदता दिखाने वाले सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने कविता के अतिरिक्त 'अप्सरा' अलका, 'प्रभावती', 'निरूपमा', 'चोटी की पकड़', और बिल्लेसुर बकरिहा', जैसे उपन्यास लिखे। इनके उपन्यासों में जहाँ अशिक्षित दलित वर्ग के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित होती है वहाँ सामाजिक रूढ़ियों एवं शोषकों के प्रति भी आक्रोश दिखायी देता है।
8. **इलाचन्द्र जोशी** (सन् 1902-1987) - मनोविश्लेषणत्मक उपन्यास लेखक श्री इलाचन्द्र जोशी ने अपने जीवन काल में 'घृणामयी', 'मुक्ति पथ,' जिप्सी, सन्यासी, ऋतुचक्र, सुबह के भूले, जहाज का पंछी, प्रेत और छाया तथा पर्दे की रानी जैसे प्रसिद्ध उपन्यास लिखे। 'जहाज का पंछी', जैसे उपन्यास इनका सबसे लोकप्रिय उपन्यास है।
9. **राहुल सांकृत्यायन** (सन् 1893-1963) - यात्रा साहित्य के संपोषक और इतिहास पर सूक्ष्मदृष्टि रखने वाले राहुल सांकृत्यायन ने हिन्दी उपन्यास साहित्य की समृद्धि के लिए 'सिंह सेनापति', 'जयौधेय', मुधर स्वप्न', 'विस्मृत यात्री', 'दिवोदास', जीने के लिए आदि उपन्यास लिखे, इनके ये उपन्यास मार्क्सवाद और बौद्ध सम्प्रदाय से प्रभावित हैं।
10. **रांगेय-राधव**(सन् 1922-1962) - इनका वास्तविक नाम तिरूमल्लै नम्बाकम वीर राधव था। इन्होंने तीस से अधिक उपन्यास लिखे। धरौंदा, सीधा-साधा रास्ता, विषाद मठ, हुजूर, काका, कब तक पुकारूँ, मुर्दो का टीला, आखिरी आवाज, प्रतिदान अँधेरे जुगुनू, आदि इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं।
11. **फणीश्वरनाथ 'रेणु'**(सन् 1921-1977) - आंचलिक उपन्यास लिखने में सिद्धहस्त फणीश्वरनाथ रेणु ने समाज में व्याप्त शोषण और दमन के विरूद्ध आवाज उठायी। इनका मैला आँचल उपन्यास काफी चर्चित हैं। इसके अतिरिक्त 'रेणु' जी ने 'परती परिकथा', दीर्घतपा, जुलूस और चौराहे जैसे उपन्यासों की रचना की।
12. **राधाकृष्ण** (1912-1971) - राँची में जन्मे राधाकृष्ण ने प्रेमचन्द के समय कथा साहित्य लिखकर काफी ख्याति अर्जित की 'फुटपाथ', सनसनाते सपने, रूपान्तर, सपने विकाऊ हैं, इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

13. **अमृतलाल नागर** (सन् 1916-1990) - प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासकारों में अमृतलाल नागर का विशेष स्थान हैं। इन्होंने अपने जीवनकाल में 'शतरंज की मोहरे' ,सहाग के नुपुर, बूँद और समुद्र, अमृत और बिष, सेठ बाँकेलाल, नाच्यो बहुत गोपाल, मानस का हंस, और खंजन-नयन, जैसे चर्चित उपन्यास लिखकर हिन्दी उपन्यास संसार की समृद्धि में बहुत बड़ा योगदान दिया।

14. **बिष्णु प्रभाकर** (सन् 1912) - गाँधीवादी विचारधारा के कथाकार श्री विष्णु प्रभाकर उपन्यासकार ही नहीं कहानीकार भी थे। इन्होंने अपने जीवन काल में 'स्वप्मयी', निशिकान्त', तट के बन्धन, और ढलती रात, जैसे प्रसिद्ध उपन्यास लिखे।

15. **नागार्जुन** (सन् 1911) - मार्क्सवाद में आस्था रखने वाले नागार्जुन ने ग्रामीण जीवन के चित्रकार थे। इन्होंने रातिनाथ की चाची, बलचमा, नई पौध, बाबा बटेसरनाथ, दुःखमोचन, वरूण के बेटे, कुम्भीपाक जैसे चर्चित उपन्यास लिखे।

16. **उप्रेन्द्रनाथ 'अश्क'** (सन् 1910-1996) - मध्यम वर्गीय व्यक्ति की घुटन, बेबसी, और यौनकुंठा जैसे बिषयों पर लेखनी चलाने वाले उपेन्द्रनाथ अश्क, नाटककार ही नहीं उपन्यासकार भी थे। सितारों के खेल, गिरती दीवारें, गर्मराख, बड़ी-बड़ी आँखें'' , पत्थर-अल-पत्थर, शहर में घूमता हुआ आईना, बाँधों न नाव इस ठाँव, आपकी प्रसिद्ध उपन्यास कृतियाँ हैं

17. **गुरूदत्त** (सन् 1919-1971) - राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक गुरूदत्त ने अपने उपन्यासों में संस्कृति तथा वैदिक विचारधारा को श्रेष्ठ दिखाया। पुष्यमित्र, विश्वासघात, उल्टी बही गंगा, इनके प्रसिद्ध उपन्यास है।

18. **डॉ0 देवराज** (सन् 1921) - मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी समाज का जीवन चित्रित करने वाले डॉ0 देवराज पथ की खोज, बाहर-भीतर, रोड़े और पत्थर, अजय की डायरी, दूसरा-सूत्र'' जैसे उपन्यास लिखकर हिन्दी की सतत् सेवा की ।

19. **मोहन राकेश** (सन् 1925-1972) - एक नाटकार के रूप में ख्याति प्राप्त करने वाले मोहन राकेश ने कई उपन्यास भी लिखे। 'अँधेरे बन्द कमरे', 'नीली रोशनी की बाहें, न जाने वाला कल, इनके महत्वपूर्ण उपन्यास हैं।

20. **भीष्म साहनी** (सन् 1915) - साम्यवाद से प्रभावित श्री भीष्म साहनी की मूल धारणा मानवतावादी रही है। इन्होंने अपने जीवनकाल में वसंती, तमस, झरोखे, कडियाँ जैसे उपन्यास लिखकर हिन्दी उपन्यास जगत को और अधिक समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

उपरोक्त उपन्याकारों के अतिरिक्त अन्य जिन उपन्यासकारों ने उपन्यास विधा पर लेखनी चलाकर इसे समृद्ध करने का बीड़ा उठाया उनमें प्रमुख उपन्यासकार है- कमलेश्वर-सुबह दोपहर शाम, राजेन्द्र यादव- 'उखड़े हुए लोग', राजेन्द्र अवस्थी- 'जंगल के फूल', हिमांशु जोशी-अरणय, रामवृक्ष बेनपुरी- 'पतितों के देश में, शिवप्रसाद सिंह - गली आगे मुड़ती हैं, रघुवीरशरण

मित्र- राख और दुल्हन, भैरव प्रसाद गुप्त- सती भैया का चौरा, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना- सोया हुआ जल, धर्मवीर भारती- गुनाहों का देवता, मोहन लाल महतो - वियोगी, महामंत्री आदि।

इन उपन्यासकारों में कुछ उपन्यासकार ऐसे भी हैं जिन्होंने आँचलिक उपन्यासों के सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। ये अन्य उपन्यासकार हैं- उदयशंकर भट्ट- सागर, लहरें और मनुष्य, देवेन्द्र सत्यार्थी- रथ के पहिये, ब्रह्मपुत्र, बलभद्र ठाकुर- आदित्यनाथ, देवताओं के देश में, नेपाल की बेटी, हिमांशु श्रीवास्तव - नदी फिर बह चली, रामदरश मिश्र- पानी के प्राचीर, शैलेश मटियानी- हौलदार, राजेन्द्र अवस्थी- जंगल के फूल, सूरज किरण की छाँह, मनहर चौहान- हिरना सावरी, श्याम परमार- मोरझल, राही मासूम रजा- आधा गाँव आदि।

स्वातन्त्रयोत्तर भारतीय जीवन के बदलते परिवेश में कुछ नये उपन्यासकार उभरकर आये जिन्होंने समाजिक संघर्ष, व्यक्ति और परिवार के सम्बन्ध, भ्रष्टाचार, आर्थिक शोषण, नैतिक मूल्यों का परिवर्तन, परम्परा और रूढिवाद के प्रति विद्रोह, आधुनिकता का आकर्षण जैसे विविध विषयों को अपने उपन्यासों के माध्यम से उभारा। इन उपन्यासकारों में- यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र- पथहीन, दिया जला दिया बुझा, गुनाहों की देवी, यज्ञदत्त शर्मा- इनसान, निर्माणपथ, महल और मकान, बदलती राहें, मन्नू भंडारी- आपका बंटी, उषा प्रियंवदा, पचपन खम्भे लाल दीवारें, शेष यात्रा, रूकेगी नहीं राधिका, रमेश वक्षी- अठारह सूरज के पौधे, महेन्द्र मल्ला- पत्नी के नोट्स, बदी उज्जमाँ - एक चूहे की मौत आदि उपन्यास बड़े लोकप्रिय और प्रख्यात हैं।

हिन्दी के प्रारम्भिक उपन्यास लेखन में भले पुरूष उपन्यासकारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही लेकिन बाद में धीरे-धीरे इस विधा को आगे बढ़ाने में महिलाएँ भी जुड़ने लगी। इन महिलाओं में उषा मित्रा के उपन्यास काफी चर्चित रहे। बाद में चन्द्रकिरण, कंचनलता सब्बरवाल, शिवानी जैसी प्रतिभा सम्पन्न लेखिकाओं ने उपन्यास विधा को अनेक विस्मरणीय रचनाएँ दी।

इसी श्रृखंला को बाद में मन्नू भण्डारी, चित्रा मुद्गल, मालती परूलकर, दीप्ति खण्डेलवाल, मालती जोशी, मृदुला गर्ग, नासिरा शर्मा, उषा प्रियंवदा कृष्णा अग्निहोती, ममता कालिया निरूपमा शास्त्री कृष्णा सोबती, रजनी पन्निकर, संतोष शैलजा, सूर्यवाला, सिम्मी हर्षिता , मैसेयी पुष्पा राजी सेठ कमल कुमार, स्नेह मोहनीश आदि महिलाओं ने आगे बढाया और बढ़ा रही है।

अभ्यास प्रश्न

(1) हिन्दी के वर्तमान उपन्यास का स्वरूप हमें प्राप्त हुआ है। सही का चिह्न लगाये-

1. भारतीय प्राचीन साहित्य से ( )
2. पाश्चात्य साहित्य से ( )
3. पूर्वी साहित्य से ( )
4. उत्तरी साहित्य से ( )

(2) हिन्दी उपन्यास के तत्व हैं- सही का चिह्न लगायें

1. कथानक
2. संवाद
3. उद्देश्य
4. उपरोक्त सभी

(3) हिन्दी उपन्यास समग्र स्वरूप हैं, सही पर चिह्न लगायें।

1. कविता का
2. नाटक का
3. कहानी का
4. एंकाकी का

(4) विद्वानों ने हिन्दी उपन्यास का इतिहास लिखते समय इसे निम्नलिखित काल खण्डों में बाँटा हैं, सही पर चिह्न लगायें

1. चार काल खण्डों में
2. छः काल खण्डों में
3. तीन काल खण्डों में
4. पाँच काल खण्डों में

(5) प्रेमचन्द पूर्व युग के किन्ही चार उपन्यास कारों के नाम लिखियें

(6) प्रेमचन्द पूर्व युग के उपन्यासों की दो विशेषताऐं बतलाइए।

(7) प्रेमचन्द पूर्व युग के चार उपन्यासकारों के नाम और प्रत्येक की एक-एक रचना का उल्लेख कीजिए।

उपन्यासकार	**उपन्यास**
1.	
2.	
3.	
4.	

(8) निम्नलिखित उपन्यासकारों के उपन्यासों की दो-दो विशेषताऐं लिखिये।

1. प्रेमचंद
2. जयशंकर प्रसाद

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रेमचन्द पूर्व युग के चार उपन्यासकारों के उपन्यासों का नाम लिखिये।
2. प्रेमचंदोत्तर उपन्यासकारों में से किन्ही पाँच उपन्यासकारों का जीवनकाल और उनकी दो उपन्यास रचनाओं के नाम लिखिए।

3. किन्ही पाँच महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का नामोल्लेख कीजिए।

3.6 सारांश

आपने इस इकाई को ध्यान से पढ़ा होगा। इससे आपको ज्ञात हुआ होगा कि उपन्यास विधा साहित्य की अत्यन्त लोकप्रिय विधा है। इस इकाई को पढने के पश्चात् आप -

- उपन्यास की परिभाषा बता सकेंगे।
- उपन्यास के तत्वों पर प्रकाश डाल सकेंगे।
- इससे आप यह भी समझ सकेंगे कि उपन्यास में केवल कल्पित कथा को ही स्थान नहीं दिया जाता अपितु जीवन के तथ्यों को भी स्थान दिया जाता है।
- हिन्दी उपन्यास के विकास को काल खण्डों के आधार पर भी समझ सकेंगे।
- प्रमुख उपन्यासकार तथा उनकी रचनाओं के विषय में भी जानकारी प्राप्त कर चुके होंगे। उपन्यास रचना में केवल पुरूषों का ही योगदान नहीं अपितु महिलाओं का भी योगदान है।

3.7 शब्दावली

1.	अध्ययनोपरान्त	-	पढ़ने के बाद
2.	तिलिस्मी	-	अद्भुत या अलौलिक व्यापार
3.	जासूसी	-	गुप्तचरी
4.	आयाम	-	विस्तार
5.	समयानुकूल	-	समय के अनुकूल
6.	प्राणपण	-	तन मन धन से
7.	सृजना	-	रचना, निर्माण
8.	ऐतिहासिक	-	इतिहास से संदर्भित
9.	प्रेमचन्दोत्तर	-	प्रेमचन्द के पश्चात्
10.	औपन्यासिक	-	उपन्यास के
11.	आत्मकथ्यपरक	-	आत्म कथा शैली में
12.	प्रोत्साहित	-	किसी काम के लिए उत्साह बढ़ाना

3.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

(1) 2. पाश्चात्य साहित्य से

(2) 4. उपरोक्त सभी

(3) 3. कहानी का

(4) 3. तीन काल खण्डों में,

(5) 1. जयशंकर प्रसाद

2. पंण्डित विश्वम्भर नाथ शर्मा

3. सुदर्शन

4. वृन्दालाल शर्मा

(6) 1. अनुदित उपन्यास

2. तिलिस्मी और जासूसी उपन्यास

(7)	**उपन्यासकार**	**उपन्यास**
1.	श्री निवासदास	'परीक्षा गुरू'
2.	पंडित बालकृष्ण भट्ट	'नूतन ब्रह्मचारी'
3.	देवकी नन्दन खत्री	'चन्द्रकांता'
4.	किशोरी लाल गोस्वामी	लवंगलता

(8) **प्रेमचंद**

1. यथार्थवादी उपन्यास

2. ग्रामीण जीवन की झाँकी

जयशंकर प्रसाद

1. यथार्थवादी उपन्यास

2. समाज के निर्माण और सुधार प्रवृत्ति वाले उपन्यास

लघु उत्तरीय

(1) प्रेमचन्द युग के उपन्यासकारों में चार उपन्यासकार थे

1.	बाबू राधाकृष्ण दास- इनका उपन्यास है-	'निःसहाय हिन्दु'
2.	बालकृष्ण भट्ट - इनका उपन्यास है-	'नूतन ब्रह्मचारी
3.	पंडित गोपालदास बरैया- इनका उपन्यास है-	'सुशीला'
4.	लज्जाराम मेहता- इनका उपन्यास है-	'धूर्त रसिक लाल'

(2) प्रेमचन्दोत्तर पाँच उपन्यासकार हैं-

1. भागवती चरण वर्मा

उपन्यास-1. चित्रलेखा

2. आखिरी दाँव

2. भागवती प्रसाद वाजपेयी

उपन्यास -1. प्रेमपथ

2. प्यासा

3. चतुरसेन शास्त्री

उपन्यास -1. वयं रक्षामः

2. आत्मदाह

4. यशपाल- जीवनकाल

उपन्यास -1. अमिता

2. दिव्या

5. अज्ञेय

उपन्यास -1. नदी के द्वीप

2. अपने-अपने अजनबी

(3) पाँच महिला उपन्यासकार हैं-

1. मन्नू भण्डारी
2. चित्रा मुद्गल
3. मालती जोशी
4. उषा प्रियंवदा
5. मैत्रेयी पुष्पा

3.9 उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. राय, बाबू गुलाब, हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास।

2. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा।

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. उपन्यास के तत्वों पर प्रकाश डालिए।
2. प्रेमचंद युगीन उपन्यासों की विशेषता बताइए।

इकाई 4 - कहानी का स्वरूप, भेद व तत्व

इकाई की रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 कहानी का स्वरूप

- **4.3.1 कहानी, लघुकथा, लम्बी कहानी**
- **4.3.2 अर्थ और परिभाषा**
- **4.3.3 कहानी की विशेषता**

4.4 कहानी के तत्व

- **4.4.1 कथानक**
- **4.4.2 पात्र-चरित्र-चित्रण**
- **4.4.3 कथोपकथन**
- **4.4.4 वातावरण**
- **4.4.5 भाषा शैली**
- **4.4.6 उद्देश्य**

4.5 कहानी के भेद

- **4.5.1 घटना प्रधान कहानी**
- **4.5.2 चरित्र प्रधान कहानी**
- **4.5.3 वातावरण प्रधान कहानी**
- **4.5.4 भाव प्रधान कहानी**
- **4.5.5 मनोविश्लेषणात्मक कहानी**
- **4.5.6 शैलीगत भेद**

4.6 सारांश

4.7 शब्दावली

4.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

4.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

4.10 निबंधात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

पाठ्यक्रम में चुनी गई कहानियों को पढ़ने से पूर्व आपको कहानी के स्वरूप, लक्षण, भेद और तत्वों को समझना आवश्यक है। कहानी, साहित्य की बहुत पुरानी विधा है और कथा सुनाने की परम्परा भारतीय साहित्य में प्राचीन काल से रही है। ऐसा माना जाता है कि पहले कथा लोक रंजन के लिए सुनाई जाती थी। कथाकार असाधारण घटनाओं, पशु-पक्षियों का मनुष्यों की तरह बोलना, परिलोक की कथा, राक्षसों का अत्याचार और जादूगरों के कारनामें कहानी का विषय बनाकर पाठक-श्रोताओं को चकित और मुग्ध करके कल्पनालोक की ओर ले जाते थे। लोक कथाओं के रूप में कहानी का यह रूप आज भी प्रचलित है।

प्राचीन काल से ही भारत में कथा की परम्परा उपनिषदों की रूपक कथाओं, गुणाढ्य की वृह्तकथा, कथासरित सागर, पंचतन्त्र की कथाओं, हितोपदेश जातक कथाओं, महाभारत के उपाख्यानों, दशकुमार चरित आदि ग्रन्थों में देखी जा सकती है; लेकिन आज 'कहानी' के रूप में जिस विधा की चर्चा हम करेगें वह परम्परागत कथाओं से एकदम अलग रूप में दिखाई देती है।

सर्वप्रथम हिन्दी-कथा-साहित्य (कहानी और उपन्यास) का जन्म द्विवेदी युग में सरस्वती (1900 ई0) पत्रिका के साथ हुआ था। क्योंकि इससे पूर्व भारतेन्दु युग में कहानियाँ भी कथात्मक शैली के निबन्धों के रूप में मिलती हैं। प्रारंभिक कहानीकारों में केवल तीन कहानीकारों का ही उल्लेख मिलता है। इनमें सैयद इंशा अल्ला खां ने 'रानी केतकी की कहानी', सदल मिश्र ने 'नासिकेतोपाख्यान' और राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द ने 'राजा भोज का सपना' कहानियों की रचना की। जिन्हें हिन्दी कहानियों का पूर्व-रूप कह सकते हैं परन्तु इनमें कहानी का सुव्यवस्थित रूप नहीं मिलता है। द्विवेदी युग में बंग महिला की 'दुलाईवाली' और रामचन्द्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय' कहानियाँ प्रकाश में आई। इसके बाद हिन्दी-कहानी को व्यवस्थित और सफल बनाने में प्रेमचन्द का योगदान अविस्मरणीय रहा। खड़ी बोली हिन्दी में कहानी के वर्तमान स्वरूप का आरम्भ तब हुआ जब पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव से बँग्ला में गद्य-लेखन प्रारम्भ हुआ; तत्पश्चात् हिन्दी ने इस विधा को अपनाया।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में जन्मी कहानी विधा ने एक लम्बे कालखण्ड में सफलतापूर्वक अपनी उपस्थिति समय-समय पर प्रभावी रूप में प्रदर्शित की है। स्वतन्त्रतापूर्व की हिन्दी कहानी प्रारंभ में जहाँ इतिवृतात्मक, उपदेशात्मक व मनोरंजन प्रधान थी, वहीं प्रेमचन्द के आगमन के साथ उसमें समाज के गंभीर व मार्मिक पक्षों का साक्षात्कार जनसाधारण के बीच करवाना प्रारंभ किया। स्वातंत्रयोत्तर काल में हिन्दी कहानी में आम व्यक्ति की कुंठा, निराशा, अवसाद व बेचैनी को चित्रित किया गया है। जिससे हिन्दी कहानी में 'नयी कहानी आन्दोलन' का उदय एक महत्वपूर्ण घटना माना गया। तत्पश्चात कहानी में 'सचेतन कहानी', 'जनवादी कहानी', 'सक्रिय कहानी', 'समानान्तर कहानी', 'अकहानी' जैसे कई अन्दोलन विविध रूपों में

उभर कर आये। इन आन्दोलनों के प्रभावी रूप से हिन्दी कहानी निरन्तर विकासोन्मुख होते चली गई।

इसके पश्चात आप कहानी के स्वरूप और तत्वों के माध्यम से कहानी विधा के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कर पायेंगे।

4.2 उद्देश्य

इस खण्ड में आप कथा-साहित्य का अध्ययन करेगें। इस इकाई में हम आपको कहानी के स्वरूप, भेद और तत्वों से परिचित कराएँगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- कहानी की रचनागत विशिष्टता को बता सकेंगे।
- कहानी के स्वरूप, अर्थ एवं परिभाषा को बता सकेंगे।
- कहानी के भेद बता पाएंगे।
- कहानी की विशेषता बता सकेंगे।
- कहानी के तत्वों का विश्लेषण कर सकेंगे।

4. 3 कहानी का स्वरूप

गद्य के भीतर कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबन्ध, यात्रावृत्त, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, समीक्षा आदि विधाएं आती हैं। इनमें से कहानी, उपन्यास और नाटक को हम कथा-साहित्य कहते हैं। कथा-साहित्य में किसी न किसी घटना क्रम के सन्दर्भ में प्रेम, ईर्ष्या, रहस्य, रोमांच, जिज्ञासा और मनोरंजन संबधी भाव मिले-जुले होते हैं। कहानी का सम्बन्ध सृष्टि के प्रारम्भ से ही जोड़ा जाता है। मानव ने जिस दिन से भाषा द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति आरम्भ की होगी सम्भवतः उसी दिन उसने कहानी कहना और सुनना आरम्भ कर दिया होगा।

प्रारम्भ में कहानी में व्यक्ति के अनुभव सीधे-सीधे कहे गए होंगे। यानि घटना या अनुभव को बॉटने की क्रिया ही कहानी बन गई होगी। वास्तव में दो लोगों के बीच भूख-प्यास, सुख-दुःख, भय-आशंका, प्रेम-ईर्ष्या, जीवन और सुरक्षा की भावना समान और सामान्यतः पायी जाती है। निश्चित ही दूसरों के साथ हुई घटना को सुनने और अपने अनुभवों को सुनाने की इच्छा आज भी हर एक मनुष्य मे एक समान रूप से पायी जाती है। इसी सुनने की इच्छा ने कहने अर्थात् कहानी का प्रारम्भिक रूप बनाया होगा। स्पष्ट है कि मनुष्य के ज्ञान के साथ-साथ कहानी का विकास भी निरन्तर होता रहा है। मनुष्य के विकास का जो क्रम रहा वही कहानी के विकास का भी रहा है। जिस प्रकार आज मनुष्य का जीवन सरल से अत्यन्त जटिलता की ओर बढ़ा, कहानी का रुप भी उसी अनुरूप जटिल हो गया है। आज का जीवन तर्क प्रधान, बुद्धि प्रधान है, इसलिए कहानियां भी बुद्धि प्रधान हो गई हैं।

कहानी का वर्तमान स्वरुप आधुनिक युग की देन है। भारत में कहानियां अपने अत्यन्त प्राचीनतम रुप में मिलती हैं। वेदों में हम भले ही कहानी के मूल रुप का आभास न पाएँ किन्तु उनमें कहानियों की व्यापक परम्परा रही है। महाभारत, बौद्ध साहित्य, पुराण, हितोपदेश, पंचतन्त्र आदि कहानियों के भण्डार हैं। पन्चतंत्र तो वास्तव में विश्व की कहानियों का स्रोत माना जाता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो आधुनिक कहानी का यह स्वरूप अंग्रेजी साहित्य से होते हुए बँगला के माध्यम से मिला है। अपने प्राचीन रूप में गल्प, कथा, आख्यायिका, लघु कथा नाम से जानी जाने वाली कहानी का स्वरूप वर्तमान कहानी से बिलकुल अलग है। आजकल प्रचलित कहानियाँ मुख्यतः तीन रूपों में दृष्टिगत होती हैं जिन्हें कहानी, लघुकथा एंव लम्बी कहानी के नाम से जाना जाता है।

4.3.1 कहानी, लघुकथा, लम्बी कहानी :-

हम ऊपर कहानी पर चर्चा कर चुके हैं। अब आपको कहानी के अन्य रूपों से अवगत कराते हैं। कहानी का दूसरा रूप है ‘लघुकथा’ और तीसरा ‘लम्बी कहानी’। आजकल इन रूपों में कई रचनाएँ प्रकाशित हो रही हैं और लोग इन्हें एक ही मानने की भूल करते हैं। वे सोचते है कि कहानी छोटी होकर ‘लघुकथा’ और आकार बड़ा होने पर ‘लम्बी कहानी’ हो जाती है, जबकि आकार मे औसत होने वाली कहानी ही कहानी है।

लघुकथा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए डॉ. पुष्पा बंसल ने कहा है “लघुकथा कहानी की सजातीय है, किन्तु व्यक्तित्व में इससे भिन्न। यह मात्र घटना हैं, परिवेश-निर्माण को पूर्णतया छोड़कर पात्र-चरित्र-चित्रण को भी पूर्णतया त्यागकर विशलेषण से अछूती रहकर, मात्र घटना (चरम सीमा) की प्रस्तुति ही लघुकथा हैं। लघुकथा में प्रेरणा बिन्दु का विस्तार नहीं होता है, केवल बिन्दु होता है। लघुकथा मनोरंजन नहीं करती मन पर आघात करती है। चेतना पर ठोकर मारती है और आँखों में उंगली डालकर यर्थाथ दिखाती है। लघुकथा में एक सुस्पष्ट नुकीला संवदेना-सूत्र प्रधान हो उठता है।" उक्त कथन के आलोक में कहा जा सकता है लघु कथा में एकता, संक्षिप्ता, तीखेपन, व्यंग्य और घटना सूत्र के तीव्र प्रभाव पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

दूसरी ओर जीवन की गहरी जटिलता ने ‘लम्बी कहानी’ को जन्म दिया। ‘लम्बाई’ पृष्ठ संख्या की नहीं, अपितु साहित्य के क्षेत्र में नई दृष्टि की सूचक है। यहीं नई दृष्टि ‘लंबी कहानी’ को कहानी से अलग करती है। घटना और परिवेश में, अंतर्द्वन्द्व में अर्थात् मनोभावों के चित्रण में विस्तार देकर चित्रित किया जाता है। इसीलिए घटना का इकहरापन होते हुए भी उसके एक से अधिक कोण स्पष्टता से उभर आते हैं और एक से अधिक पात्र उभर आते हैं। अर्थात् लम्बी कहानी में मुख्य पात्र के साथ-साथ घटना से जुड़े अन्य पात्र परिवेश की सम्पन्नता में स्थित होकर जीवन-सन्दर्भों की गहनता को विस्तार एवं आयाम प्रदान करते है। इसे संक्षेप में आप समझ सकते है। लम्बी कहानी में क्योंकि घटना और पात्रों के सन्दर्भ में ‘एकता’ या एक पक्ष का पालन नहीं होता, इसीलिए उसका आकार बढ़ जाता है किन्तु वह अपने कहानीपन को अक्षुण रखती हैं।

यद्यपि कहानी जीवन के यर्थाथ से प्रेरित होती है तब भी इसमें कल्पना की प्रधानता रहती है। इसमें रचनाकार अपनी बात सीधे न कहकर कथा के माध्यम से कहता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए हम आगे कहानी के अर्थ-परिभाषा उसके भेद और रचना तत्वों पर प्रकाश डालने का प्रयत्न करेंगे।

4. 3.2 अर्थ और परिभाषा :-

अर्थ - 'कहानी' शब्द अंग्रेजी के 'शॉर्ट स्टोरी' का समानार्थी है। कहानी का शाब्दिक अर्थ है- "कहना", इसी रूप में संस्कृत की 'कथ' धातु से कथा शब्द बना, जिसका अर्थ भी कहने के लिए प्रयुक्त होता है। कथ्य एक भाव है जिसे प्रकट करने के लिए कथाकार अपने मस्तिष्क में एक रूपरेखा बनाता है और उसे एक साँचे में ढाल कर प्रस्तुत करता है, वही 'कथा' कहलाती है। सामान्य बोलचाल की भाषा में 'कथा' और 'कहानी' शब्द एक पर्याय के रूप में जाने जाते रहे हैं; लेकिन आज कहानी कथा-साहित्य के एक आवश्यक अंग के रूप में प्रसिद्ध है। यद्यपि कहानी को किसी एक निश्चित परिभाषा या शब्दों में बाँधना कठिन कार्य है, फिर भी 'कहानी' को समझाने के लिए विद्वानों ने इसे परिभाषित करने का प्रयास किया है।

परिभाषा - हम पहले ही बता चुके हैं कि कहानी पश्चिम से आई विधा है। अतः सबसे पहले पश्चिमी विद्वानों की कतिपय परिभाषाओं को लिया जा सकता है। पाश्चात्य देशो में एडगर एलन पो आधुनिक कहानी के जन्मदाताओं में प्रमुख माने जाते हैं। उन्होंने कहानी को परिभाषित करते हुए कहा है कि, "छोटी कहानी एक ऐसा आख्यान है, जो इतना छोटा है कि एक बैठक में पढ़ा जा सके और पाठक पर एक ही प्रभाव उत्पन्न करने के उद्देश्यों से लिखा गया हो, वह स्वतः पूर्ण होती है।"

हडसन के अनुसार "लघु कहानी में केवल एक ही मूल भाव होता है। उस मूल भाव का विकास तार्किक निष्कर्षों के साथ लक्ष्य की एकनिष्ठता से सरल, स्वाभाविक गति से किया जाना चाहिए।" एलेरी ने कहानी की सक्रियता पर अधिक बल दिया है और कहा कि, "वह घुड़दौड़ के समान होती है। जिस प्रकार घुड़दौड़ का आदि और अंत महत्त्वपूर्ण होता है उसी प्रकार कहानी का आदि और अंत ही विशेष महत्त्व का होता है।"

इन परिभाषाओं पर यदि हम विचार करें तो पाते हैं कि कहानी में संक्षिप्तता और मूल भाव का ही महत्त्व होता है, जबकि कहानी के वास्तविक स्वरूप को ये पूर्ण नहीं करती। अतः यहाँ सर ह्यू बालपोल के विचार को समझना जरूरी हो जाता है। उन्होंने कहानी के विषय में थोड़ा विस्तार से बताया है। पोल के अनुसार, "छोटी कहानी एक कहानी होनी चाहिए, जिसमें घटनाओं, दुर्घटनाओं, तीव्र कार्य व्यापार और कौतूहल के माध्यम से चरम सीमा तक सन्तोषजनक पर्यवसान तक ले जाने वाले अप्रत्याशित विकास का विवरण हो।"

वस्तुतः ये परिभाषाएँ पश्चिम की साहित्यिक प्रवृत्तियों एवं विधा के अनुरूपों को उद्घाटित करती हैं। हिन्दी साहित्य में कहानी, बँगला कहानी साहित्य के माध्यम से आई। अतः कहानी में यहाँ का पुट भी शामिल हो गया। भारतीय समाज और संस्कृति का प्रभाव उसके स्वरूप में दिखाई देना स्वाभाविक था। यहाँ हिन्दी के विद्वानों का कहानी के सन्दर्भ में विचार

जानना आवश्यक है। अतः अब हम भारतीय विद्वानों के कहानी संबधी दृष्टिकोण पर विचार करते हैं। मुंशी प्रेमचन्द के अनुसार, "कहानी (गल्प) एक रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग या मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली तथा कथा-विन्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं।"

बाबू श्यामसुन्दर दास का मत है कि, "आख्यायिका एक निश्चित लक्ष्य या प्रभाव को लेकर नाटकीय आख्यान है।" बाबू गुलाबराय का विचार है कि, "छोटी कहानी एक स्वतः पूर्ण रचना है जिसमें एक तथ्य या प्रभाव को अग्रसर करने वाली व्यक्ति-केद्रित घटना या घटनाओं के आवश्यक, परन्तु कुछ-कुछ अप्रत्ययाशित ढंग से उत्थान-पतन और मोड़ के साथ पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालने वाला कौतूहलपूर्ण वर्णन हो।" इलाचन्द्र जोशी के अनुसार "जीवन का चक्र नाना परिस्थितियों के संघर्ष से उल्टा सीधा चलता रहता है। इस सुवृहत् चक्र की किसी विशेष परिस्थिति की स्वभाविक गति को प्रदर्शित करना ही कहानी की विशेषता है।'' जयशंकर प्रसाद कहानी को 'सौन्दर्य की झलक का रस' प्रदान करने वाली मानते हैं तो रायकृष्णदास कहानी को 'किसी न किसी सत्य का उद्घाटन' करने वाली तथा मनोरंजन करने वाली विधा कहते हैं। 'अज्ञेय' कहानी को 'जीवन की प्रतिच्छाया' मानते है तो जैनेन्द्र कुमार 'निरन्तर समाधान पाने की कोशिश करने वाली एक भूख' कहते हैं।

ये सभी परिभाषाएँ भले ही कहानी के स्वरूप को पूर्णतः स्पष्ट नहीं करती हैं, परन्तु उसके किसी न किसी पक्ष को जरूर प्रदर्शित करती हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि किसी भी साहित्य-विधा की कोई ऐसी परिभाषा देना मुश्किल है जो उसके सभी पक्षों का समावेश कर सके या उसके सभी रूपों का प्रतिनिधित्व कर सके। कहानी में साधारण से साधारण बातों का वर्णन हो सकता है, कोई भी साधारण घटना कैसे घटी, को कहानी का रुप दिया जा सकता है परन्तु कहानी अपने में पूर्ण और रोमांचक हो। जाहिर है कहानी मानव जीवन की घटनाओं और अनुभवों पर आधारित होती है जो समय के अनुरूप बदलते हैं ऐसे में कहानी की निश्चित परिभाषा से अधिक उसकी विशेषताओं को जानने का प्रयास करें।

4. 3.3 कहानी की विशेषताएँ :-

अब तक आप कहानी के स्वरूप, अर्थ और परिभाषा को पढ़ चुके हैं। उक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि कहानी में निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं-

1. कहानी एक कथात्मक संक्षिप्त गद्य रचना है, अर्थात कहानी आकार में छोटी होती है जिसमें कथातत्व की प्रधानता होती है।
2. कहानी में 'प्रभावान्विति' होती है अर्थात् कहानी में विषय के एकत्व के साथ ही प्रभावों की एकता का होना भी बहुत आवश्यक है।
3. कहानी ऐसी हो, जिसे बीस मिनट, एक घण्टा या एक बैठक में पढ़ा जा सके।
4. कौतूहल और मनोरंजन कहानी का आवश्यक गुण है।
5. कहानी में जीवन का यर्थाथ होता है, वह यर्थाथ जो कल्पित होते हुए भी सच्चा लगे।

6. कहानी में जीवन के एक तथ्य का, एक संवेदना अथवा एक स्थिति का प्रभावपूर्ण चित्रण होता है।
7. कहानी में तीव्रता और गति आवश्यक है जिस कारण विद्वानों ने उसे 100 गज की दौड़ कहा है। अर्थात कहानी आरम्भ हो और शीघ्र ही समाप्त भी हो जाए।
8. कहानी में एक मूल भावना का विस्तार आख्यानात्मक शैली में होता है।
9. कहानी में प्रेरणा बिन्दु का विस्तार होता।
10. कहानी की रूपरेखा पूर्णतः स्पष्ट और सन्तुलित होती है।
11. कहानी में मनुष्य के पूर्ण जीवन नहीं बल्कि उसके चरित्र का एक अंग चित्रित होता है, इसमें घटनाएँ व्यक्ति केन्द्रित होती हैं।
12. कहानी अपने आप में पूर्ण होती है।

उक्त विशेषताओं को आप ध्यान से बार-बार पढ़कर कहानी के मूल भाव और रचना-प्रक्रिया को समझ पायेंगे। इन सब लक्षणों या विशेषताओं को ध्यान में रखकर हम आसान शब्दों में कह सकते हैं कि--''कहानी कथातत्व प्रधान ऐसा खण्ड या प्रबन्धात्मक गद्य रूप है, जिसमें जीवन के किसी एक अंश, एक स्थिति या तथ्य का संवेदना के साथ स्वतः पूर्ण और प्रभावशाली चित्रण किया जाता है।" किसी भी कहानी पर विचार करने से पहले उसे पहचानना आवश्यक होता है। आगे के पाठों में हम इस पर और विस्तार से बात करेंगे।

अभ्यास प्रश्न

अब तब आपने इस इकाई में कहानी के स्वरूप, अर्थ, परिभाषा और उसकी विशेषताओं (लक्षण) का अध्ययन किया है। अब आप निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए और अपने उत्तर को इकाई के अन्त में दिये गए उत्तर से मिलाकर देखिए कि आपका उत्तर सही है या नहीं।

(1) (अ) नीचे कुछ कथन दिये गए हैं, वे सही है या गलत बताइए।

क) कहानी का सम्बन्ध गल्प से नहीं जोड़ा जाता है।

ख) जयशंकर प्रसाद के अनुसार कहानी 'सौन्दर्य की झलक का रस' प्रदान करती हैं।

ग) भारतीय समाज और संस्कृति का प्रभाव कहानी स्वरूप में दिखाई देना स्वाभाविक नहीं है।

घ) कहानी में प्रेरणा बिन्दु का विस्तार होता है।

ड़) ऐलरी आाधुनिक कहानी के जन्मदाताओं में प्रमुख हैं।

च) लघुकथा साहित्य के क्षेत्र में नई दृष्टि की सूचक है।

छ) भारतेन्दु युग में कहानियाँ भी कथात्मक शैली के निबन्धों के रूप में मिलती हैं।

(1) (ब) नीचे दी गई रचनाओं के रचनाकारों का नाम लिखिए।

(क) नासिकेतोपाख्यान

(ख) दुलाईवाली

(ग) रानी केतकी की कहानी

(घ) ग्यारह वर्ष का समय

(2) कहानी का अर्थ स्पष्ट कीजिए। (उत्तर तीन पंक्तियों में लिखिए)

....
....
....

(3) कहानी की परिभाषा तीन पंक्तियों में लिखिए।

....
....
....

(4) कहानी की प्रमुख पाँच विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(5) लघुकथा और लंबी कहानी में अन्तर बताइए। (उत्तर लगभग दस पंक्तियों में लिखिए)

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

4.4 कहानी के तत्व

अभी तक आपने कहानी की संरचना और उसकी विशेषताओं को समझा । किन्तु कहानी आज के युग में केवल मनोरंजन का ही माध्यम नहीं है अपितु जीवन मूल्यों की जानकारी, सामाजिक तानेबाने की समझ एंव कठिन परिस्थितियों से जूझने की सामर्थ्य भी हमें कहानी से प्राप्त होती है। मूल्यांकन की दृष्टि से कहानी के कुछ तत्व निर्धारित किये गए हैं। समीक्षकों ने कथा साहित्य के रूप में उपन्यास और कहानी को एक समान मानकर मापदण्ड की एक ही पद्धति अपनाई है, और उपन्यास की भाँति कहानी के भी छः तत्व माने हैं:

4.4.1 कथानक :-

कथानक का अर्थ है कहानी में प्रयोग की गई कथावस्तु या वह वस्तु जो कथा में विषय रूप में चुनी गई हो। कहानी में सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक आदि में से किसी एक विषय को लेकर घटना का विकास किया जाता है। कथानक में स्वाभाविकता लाने के लिए उसमें यथार्थ, कल्पना, मनोविज्ञान आदि का समावेश यथोचित रूप में किया जाता है। कथानक के विकास की चार स्थितियाँ मानी गई है- आरम्भ, विकास, चरमोत्कर्ष और अन्त।

कहानी का आरम्भ रोचक ढंग से होना चाहिए ताकि पाठक के मन में आगे की घटनाओं के लिए जिज्ञासा उत्पन्न हो सके। जिससे पाठक कहानी में इस कदर डूब जाये कि उसके मन में कहानी को शीघ्रातिशीघ्र समाप्त करने का लालच आ जाय। विकास अथवा आरोह में घटना क्रम में सहजता और पात्रों के स्वाभाविक मनः स्थिति का विकास दिखाया जाना चाहिए। जिससे पाठक को कथानक समझने में आसानी एंव संपूर्ण कथानक उसके मन-मस्तिष्क में एक चलचित्र की भाँति चलने लगे। तीसरी स्थिति चरमोत्कर्ष वह अवस्था है जहाँ पर कहानी की रोचकता में क्षणभर के लिए स्तब्धता आ जाती है। पाठक कहानी का अन्तिम फल जानने के लिए उत्तेजित हो उठता है एंव वह अनायास ही कयास लगाने लगता है। कहानी के अन्त में परिणाम निहित रहता है, जिससे पाठक को सकून की अनुभूति प्राप्त होती है। अतः कहानी का उद्देश्य एंव कथानक स्पष्ट होना चाहिए। यह न तो विस्तृत होना चाहिए और न ही बिलकुल संक्षिप्त होना चाहिए।

हिमांशु जोशी की कहानी 'तरपन' का कथानक मधुली नामक विधवा स्त्री के घर से प्रारंभ होता है, जिसका पति की सरकारी सुरंग निर्माण के दौरान मृत्यु हो जाती है। उसकी तेरहवीं पर मृतक की आत्मा की शान्ति के लिये तरपन; तर्पणद्ध करने के लिये मधुली के पास धनाभाव होता है जिसके लिये वह दर दर भटकती है। अंततः वह कोसी के तट पर मिट्टी की गाय बना अपने पति का तर्पण स्वयं करती है।

कहानी का अन्त पाठक की समस्त जिज्ञासुओं को शान्त कर देता है परन्तु बदलते परिवेश एंव लेखन में आये बदलाव में आजकल कुछ कहानीकार परिणाम को अस्पष्ट रखकर पाठको को मनन की स्थिति में छोड़ देते हैं।

4. 4.2 पात्र एवं चरित्र-चित्रण :-

किसी भी कहानी में कथानक के बाद पात्रों का स्थान महत्वपूर्ण होता है। कहानी में पात्रों की कम संख्या अपेक्षित है। कथानक को पात्र ही गति देता है अन्यथा कथानक निरर्थक हो जाता है। कहानीकार कथानक के मुख्य भाव को पात्रों के माध्यम से ही प्रस्तुत करता है। कहानी में मुख्य रूप से तीन प्रकार के पात्र होते हैं- मुख्य पात्र, सहायक पात्र एंव गौण पात्र। कहानी वैसे तो मुख्य पात्रों के इर्द-गिर्द घुमती रहती है परन्तु सहायक एंव गौण पात्रों के माध्यम से लेखक कहानी में रोमांच, रहस्य एंव हास्य आदि भावों का पुट देता रहता है। पात्रों के सटीक चरित्र चित्रण से कहानी ज्यादा मोहक, प्रभावशाली एंव शिक्षाप्रद हो जाती है। कहानी के मुख्य पात्र

समाज के लिए प्रेरणा स्रोत एवं बच्चों के आदर्श बन जाते हैं, तथा वे जीवन में वैसा ही बनने का प्रयास करते हैं।

तरपन कहानी की मुख्य पात्र मधुली है और समस्त कथानक उसके आस पास ही घूमता है। इसके अतिरिक्त कहानी में उसका पति तुलसा, साहुकार कंसा, ब्राह्मण आदि सहायक पात्र हैं जो कहानी को गतिशीलता प्रदान करते हैं।

4. 4.3 कथोपकथन :-

कहानी में कथा विकास और चरित्र विकास के लिए कथोपकथन सहायक होते हैं। पात्रों के आपसी संवाद या वार्तालाप को कथोपकथन कहा जाता हैं। कहानी में कथोपकथन से एक ओर घटना-क्रम को बढ़ाया जाता है तो दूसरी ओर पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को दिखाया जाता है। संवाद में रोचकता, सजीवता और स्वाभाविकता का गुण आवश्यक होता है। इसके साथ ही संवाद की भाषा पात्रों के अनुकूल, परिवेश के अनुरूप, आकार में छोटे और प्रभावशाली होनी चाहिए। किसी भी कहानी में कथोपकथन उसकी अभिव्यक्ति एंव आम पाठक के बीच पैठ बनाने में सहायक होता है।

'तरपन' नामक कहानी में पात्रों के संवाद मन को छू लेतें हैं। एक जगह मधुली तर्पण करने हेतु आये पंडित से कहती है, "बामणज्यू गरूण पुराण की सामर्थ्य मेरी कहाँ, मेरे पास तो जौं तिल बहाने के पैसे भी नहीं हैं, गौ गा्रस के लिए आटा नहीं है और बच्चे तीन दिन से भूखे हैं।'' ये कथन मानव मन को उद्वेलित कर देतें हैं।

4. 4.4 वातावरण :-

कहानी को सहज और स्वाभाविक रूप प्रदान करने के लिए उसके वातावरण का विशेष महत्व होता है। वातावरण से तात्पर्य है कहानी में प्रयोग किये गए विषय-वस्तु के आस-पास का परिवेश अर्थात् देश और काल का वर्णन करना। इसमें कहानीकार सामाजिक कहानियों में अपने युग का और ऐतिहासिक-पौराणिक कहानियों में पुरातन युग के इतिहास, भूगोल, समाज आदि का चित्रण करते हैं। कहानी में घटना, स्थान, पात्र, पात्रों की भाषा-वेशभूषा इत्यादि देश और काल के अनुसार ही की जाती है। कहानी जब दृश्य एंव श्रव्य माध्यम से समाज के सामने आती है तो उस देश, काल, परिस्थिति, भाषा-शैली, पहनावा तथा रहन-सहन से सभी परिचित हो जाते हैं। उदाहरणस्वरूप वर्तमान में अधिकांश धारावाहिकों में राजस्थान का चित्रण किया जा रहा है, इससे पूरा देश वहाँ की संस्कृति से परिचित हो रहा है। साथ ही बाल विवाह जैसी कुप्रथा के प्रति जागरूकता बढ़ने लगी है।

4. 4.5 भाषा-शैली :-

यहाँ आप कहानी में शैलीगत तत्त्व को जानने से पहले शैली के शाब्दिक अर्थ को समझेंगे। शैली का अर्थ है कथन पद्धति। सामान्य अर्थ में कहें तो कहने का एक अंदाज यानि ढंग, तरीका जो उसे दूसरों से भिन्न दिखाये शैली है। भाषा शैली का सम्बन्ध कहानी के सभी तत्त्वों के साथ रहता है। कहानी की भाषा शैली सरल, सुबोध, सरस और धाराप्रवाह होनी

चाहिए। भाषा शैली में शब्द-चयन, सुसंगठित वाक्य-विन्यास, लक्षणा-व्यंजना आदि का प्रयोग उसकी महत्ता को बढ़ा देता है। कहानी की कई शैलियाँ है, जैसे कहानी में वर्णनात्मक, संवादात्मक, पात्रात्मक, आत्मकथात्मक और डायरी शैली में से किसी एक या एक से अधिक भाषा शैलियों को स्थान दिया जा सकता है।

कहानी की रचना में भाषा का अत्यंत महत्व होता है कहानी की भाषा सरल, स्पष्ट एंव सुग्राही होनी चाहिए। यदि भाषा अधिक क्लिष्ट होगी तो ना तो यह साधरण पाठक को लुभा पायेगी और ना यह कहानी के उद्देश्य को ग्रहण कर पायेगी। अतः कहानी में भाषा ऐसी हो जो सुग्राही, कथानक एंव पात्रों के अनुरूप हो और जिसका प्रभाव व्यापक एवं गहरा हो।

4. 4.6 उद्देश्य :-

प्रायः कहानी का उद्देश्य 'मनोरंजन' माना जाता है, पर विद्वानों के अनुसार कहानी किसी लक्ष्य-विशेष को लेकर चलती है और पाठक को भी वहाँ तक पहुँचा देती है। वस्तुतः कहानी का उद्देश्य यर्थाथ के सुरूचि पूर्ण वर्णन द्वारा उच्च आदर्शों का संदेश देना है। चूँकि कहानी में जीवन की जटिलताओं, दैनन्दिन कार्यकलापों एवं व्यस्तताओं को उद्घाटित किया जाता है। अतः कहानी अपनी संक्षिप्तता और संप्रेषणता के द्वारा मनुष्य को जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने में मदद करती है।

कहानी के छः तत्वों को ज्यो-का-त्यों स्वीकार नहीं किया जा सकता है। क्योंकि आजकल कई कहानियों में कथानक का वह स्वरूप नहीं मिलता जो समीक्षकों ने परम्परागत रूप में रखा है। कई कहानियों में संवाद होता ही नहीं है। इसी तरह केवल मनोरंजन के उद्देश्य से ही कई कहानियाँ नहीं लिखी जाती। अब तक कहानी की यात्रा अपने आरम्भ से लगातार परिवर्तनशील रही है। तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उपर्युक्त छः तत्व आज की कहानी के लिए सीमा रेखा नहीं बना सकते। अतः परम्परा से चली आ रही मूल्यांकन दृष्टि को तोड़ना होगा।

इन सब कठिनाइयों को देखते हुए कथाकार और समीक्षक 'बटरोही' ने कहानी के केवल दो तत्व बताए- (1) शाब्दिक जीवन प्रतिबिम्ब (2) उससे निःसृत होने वाली 'एक' एवं 'प्रत्यक्ष' (मानवीय) संवेदना। वे स्पष्ट करते हैं कि जीवन-प्रतिबिम्ब के अंग के रूप में पात्र और वातावरण आ जाते हैं, उनका आना अनिवार्य हो, ऐसी बात नहीं हैं। बहुत बार कहानीकार के अलावा कहानी में कोई दूसरा पात्र नहीं होता। इस विधा के दो निम्नलिखित रचना-तत्व हैं :
(अ) कथा-तत्व (ब) संरचना-तत्व।

'कथा-तत्व' से आशय परम्परागत रूप से चला आ रहा 'कथानक' नहीं हैं अपितु जीवन-जगत के प्रतिबिम्बों का कथन और उनका प्रत्यक्षीकरण। घटनाओं, क्रिया-व्यापारों और चरित्रों के माध्यम से किसी एक संवेदना को जगाने के लिए अपनाया गया कथा-परिवेश। 'संरचना-तत्व' इस कथन तत्व को या जीवन-जगत् के प्रतिबिम्बों को प्रभावशाली ढंग से विन्यासित करने वाले उपादन है, जिसे हम भाषा, सवांद और इनके द्वारा निर्मित वातावरण, शैली आदि के रूप में देख सकते हैं। वस्तुतः ये दोनों तत्व परस्पर घुले-मिले रहते है और कहानी

को प्रभावशाली बनाने में अपना योगदान देते हैं। संरचना-तत्व ही कहानी का 'रचनात्मक परिवेश' है, जिससे कहानीकार संवेदना का प्रभावपूर्ण चित्रण प्रस्तुत करता है।

अभ्यास प्रश्न

अब आप निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए और अपने उत्तर को इकाई के अन्त में दिये गए उत्तर से मिलाकर देखिए कि आपका उत्तर सही है या नहीं।

(6) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

क. कहानी के अन्त में .... निहित रहता है।

ख. विद्वानों के अनुसार कहानी किसी .... को लेकर चलती है और पाठक को भी वहाँ तक पहुँचा देती है।

ग. कथानक के विकास की............................. स्थितियाँ मानी गई है।

घ. शैली का अर्थ है............................ ।

(7) कहानी के तत्वों को बताइए।

(8) कथाकार और समीक्षक बटरोही द्वारा कहानी के तत्व को परिभाषित किजिए।

(9) 'कथा-तत्व' किसे कहते है?

4.5 कहानी के भेद

कहानी के बारे में ऊपर दिये गए परिचय से यह तो आप जान गए होंगे कि कहानी में कुछ ऐसे तत्व होते हैं, जो प्रायः सभी कहानियों में मिलेंगे। किन्तु यह भी सच है कि सभी तत्व समान रूप से नहीं होते। किसी में विषय वस्तु की प्रधानता होती है तो किसी में पात्र यानी चरित्रों को प्रधानता दी जाती है। कहीं वातावरण प्रमुख होता है तो कहीं भाव महत्वपूर्ण हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि कहानी में विभिन्न तत्वों की प्रधानता के कई रूप मिलते हैं। तत्वों के इन्ही रूपों के आधार पर कहानियों के कई भेद किये जा सकते हैं। अपनी विकास-यात्रा में हिन्दी कहानी अनेक स्वरूपों और शैलियों में व्यक्त हुई है। आगे हम कहानी के इन भेदों का अध्ययन करेंगे।

4.5.1 घटनाप्रधान कहानी :-

जिन कहानियों में क्रमशः अनेक घटनाओं को एक सूत्र में पिरोते हुए कथानक का विकास किया जाता है अथवा किसी दैवीय घटना और संयोग का विशेष सहारा लिया जाता है, उन्हें घटना प्रधान कहानी कहा जाता है। स्थूल आदर्शवादी कहानियाँ, जासूसी, रहस्यपूर्ण, तिलस्मी एवं अद्भुत् कहानियाँ प्रायः इसी प्रकार की होती हैं। इसमें सूक्ष्म भावों की अभिव्यंजना पर बल नहीं होता बल्कि मनोरंजन पर बल रहता है। ऐसी कहानियाँ कला की दृष्टि से प्रायः साधारण कोटि की मानी जाती हैं।

4. 5.2 चरित्र-प्रधान कहानी :-

जिन कहानियों में चरित्र-चित्रण की प्रधानता होती है वे चरित्र प्रधान कहानियों के वर्ग में आती हैं। चरित्र प्रधान कहानियों में लेखक का ध्यान पाठकों को घटनाओं के विस्तार में न उलझाकर कहानी के पात्रों के चरित्र-निरूपण की ओर रहता है। इन कहानियों का मुख्य धरातल मनोविज्ञान होता है। चरित्र-प्रधान कहानियाँ घटनाओं को छोड़कर पात्र के चरित्र और मनोवृत्ति अर्थात् मनुष्य के भीतर की भावनाओं, संवेदनाओं, विचारों एवं क्रिया-प्रतिक्रियाओं को बहुत ही सूक्ष्म ढंग से व्यक्त करती है। इनमें व्यक्ति के अन्तर्मन का चित्रण हुआ है। इस आधार पर हम कह सकते है कि चरित्र प्रधान कहानियों में पात्रों के माध्यम से व्यक्ति के भीतर पनप रही आत्म-पीड़ा, दया, खुशी, प्रेम, ईर्ष्या, संकोच, संघर्ष, सहानुभूति एवं महत्त्वाकांक्षा इत्यादि अत्यन्त सूक्ष्म भावों को व्यक्त किया जाता है। मूलतः इन कहानियों में पात्रों के मनोगत भावों और मानसिक संघर्षो को महत्व मिला हैं।

4. 5.3 वातावरण प्रधान कहानी :-

इन कहानियों में वातावरण अर्थात् परिवेश को महत्त्व दिया जाता है। क्योंकि कहानी केवल कल्पना न होकर जीवन परक है और जीवन हमेशा वातावरण से युक्त होता है। हमारे प्रतिदिन के कार्यो और व्यवहारों में किसी न किसी रूप से आस-पास का माहौल या परिवेश का प्रभाव होता है। विशेषतः ऐतिहासिक कहानियों में वातावरण अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि वहाँ किसी युग विशेष का, उस युग की संस्कृति, सभ्यता आदि का वर्णन करना होता है। प्राकृतिक परिवेश, संवाद, संगीत, भाषा आदि की सहायता से वातावरण को जीवंत बनाया जाता है। प्रेमचन्द की 'पूस की रात', 'गुल्ली-डण्डा' प्रसाद की 'बिसाती', 'बनजारा', 'देवरथ', 'आकाशदीप' में यह तत्व पूर्ण रूप से चरितार्थ हुआ है।

4. 5.4 भाव प्रधान कहानी :-

इससे पहले आपने चरित्र और वातावरण प्रधान कहानियों की विशेषताओं को पढ़ा है। भाव प्रधान कहानी प्रायः चरित्र और वातावरण को प्रमुखता देने वाली कहानियों की तरह ही होती है। यह कह सकते हैं कि इन दोनों प्रकार की कहानियों के बीच में भाव-प्रधान कहानियाँ आती है क्योंकि इनमें केवल किसी एक भाव या विचार को आधार बनाकर समूचा कथानक निर्मित होता है और उसी के आधार से समूची कहानी अपनी एक लय के साथ निर्मित होती है। ऐसी कहानियों में एक भावना को मुख्य रखकर पात्र और वातावरण को गौण रखा जाता है। जैसे जैनेन्द्र की 'नीलम देश का राजकन्या' 'अज्ञेय' की 'कोठरी की बात' और टैगोर की 'भूखा पत्थर' उल्लेखनीय है। भाव प्रधान कहानियाँ प्रायः प्रतीकवादी कहानियों का रूप धारण कर लेती है, क्योंकि ये कहानियाँ अपने भाव-चित्रों में प्रतीकों का सहारा लेकर मानसिक चित्रों और आन्तरिक सौन्दर्य के सत्य को 'साकार' रूप देने में सफल होती है।

4. 5.5 मनोविश्लेषणात्मक कहानी :-

हिन्दी में मनोविश्लेषणात्मक कहानियों का सफल आरम्भ जैनेन्द्र कुमार से हुआ। मनोवैज्ञानिक कहानियों के विकासक्रम में ही मनोविश्लेषणात्मक कहानियाँ आती हैं। इन

कहानियों में घटनाओं और कार्यों की अपेक्षा मानसिक ऊहापोह और मनोविश्लेषण को प्रमुखता दी जाती है। इन कहानियों में विद्रोह, पाप और अपराध के विश्लेषण हुए तथा पापी, विरोधी और अपराधी के प्रति करुणा, सहानुभूति और दया की भावना लायी गई तथा स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों पर मौलिक ढ़ग से विचार हुए। इन कहानियों में अपूर्व ढ़ग से और एक नये दृष्टिकोण से सामाजिक मूल्यों और प्रश्नों को देखा एंव परिभाषित किया गया। जैनेन्द की कहानी 'क्या हो', 'एक रात', 'ग्रामोफोन का रिकार्ड', इलाचन्द्र जोशी की 'मैं', 'अज्ञेय' की 'अमरवल्लरी', 'विपथगा', 'साँप', 'कोठरी की बात' इसी प्रकार की कहानियॉं हैं।

4. 5.6 शैलीगत भेद :-

शैली तत्व कहानी कला की वह रीति है जो इसके अन्य तत्वों का अपने विधान में उपयोग करती है। कहने का तात्पर्य यह है कि शैली के अन्तर्गत कहानी-कला निर्माण की विभिन्न प्रणालियाँ एवं अभिव्यक्ति के तत्व आते हैं जिसके प्रयोग से कहानीकार अपने भावों को मूर्त करता है। कहानियों के शैलीगत वर्गीकरण में वर्तमान युग में कहानी लेखन की अनेक शैलियाँ दिखाई दे रही है। यों तो अधिकतर कहानी वर्णनात्मक शैली में लिखी जाती है, किन्तु ऐतिहासिक, आत्मकथात्मक, संवादात्मक और पत्रात्मक शैली भी विकसित हैं। कुछ लेखकों ने अब डायरी शैली में भी कहानियाँ लिखी है। इसके अतिरिक्त रेखाचित्रों और संस्मरणों के रूप में भी कहानियों की रचना की जाती है।

ऐतिहासिक शैली - इसके अन्तर्गत कहानीकार तटस्थ होकर कथावाचक के रूप में कहानी की रचना करता है जो पूर्णताः वर्णन पर आधारित होती है। वर्णनात्मक शैली इसी के अन्तर्गत आती है। कहानी का सूत्रधार कहानीकार होता है और नायक 'वह' यानी अन्य पुरुष ही होता है। स्थान-स्थान पर बौद्धिक विवेचन, भावात्मक वर्णन और विश्लेषण आदि को भी स्थान मिलता है।

आत्मकथात्मक शैली - इस शैली में कहानीकार या कहानी का कोई पात्र 'मै' अर्थात् 'स्वयं' के आधार पर आत्मकथा के रूप में पूरी कहानी कहता है। इलाचन्द जोशी की 'दीवाली और होली', सुदर्शन की 'कवि की स्त्री' और 'अज्ञेय' की 'मंसो' इसी प्रकार की कहानी है।

पत्रात्मक शैली - कहानीकार जब पत्रों के माध्यम से कहानी की रचना करता है तो वह पत्रात्मक शैली कहलाती है। प्रभाव की दृष्टि से यह शैली अधिक प्रचलित और विकसित नहीं है।

डायरी शैली - यह शैली पत्र शैली के अधिक निकट है। इसमें डायरी के विभिन्न पृष्ठों द्वारा सम्पूर्ण कहानी कही जाती है। इस शैली में भूतकाल का चित्रण सजीवता से किया जाता है।

इनके अतिरिक्त कतिपय विद्वानों ने विषय की दृष्टि से कहानियों के अन्य भेद माने हैं जिनमें साहसिक, रोमांसिक, जासूसी, ऐतिहासिक और सामाजिक सम्मिलित हैं। अधिकाशंतः इन्हें घटनाप्रधान कहानियों की श्रेणी में रखते हैं।

अभ्यास प्रश्न

अब आप निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए और अपने उत्तर को इकाई के अन्त में दिये गए उत्तर से मिलाकर देखिए कि आपका उत्तर सही है या नहीं।

(10) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

क. जासूसी एवं तिलिस्म कहानियाँ .... हैं।

ख. जिन कहानियों में चरित्र-चित्रण की प्रधानता होती है वे ....कहानियाँ कहलाती हैं।

ग. विशेषतः ....कहानियों में वातावरण अधिक महत्वपूर्ण होता है।

घ. भाव प्रधान कहानियाँ प्रायः .... कहानियों का रूप धारण कर लेती है।

(11) निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए।

क) कहानी के शैलीगत भेद।

ख) भावप्रधान कहानी।

(12) कहानी के प्रमुख भेदों का वर्णन कीजिए। उत्तर लगभग दस पंक्तियों में लिखिए।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

4.6 सारांश

कहानी कथा साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है तथा यह अंग्रेजी में 'शार्ट स्टोरी', बंगला में गल्प और हिन्दी में कहानी के नाम से प्रचलित है। लघु कहानी और लम्बी कहानी कहानी के अन्य रूप हैं।

- इस इकाई को पढ़ने के बाद आप कहानी का अर्थ और परिभाषा बता सकते हैं।
- कहानी की विशेषता में प्रभावान्विति, कौतूहल, संक्षिप्तता इत्यादि आते हैं। अब आप कहानी में उन गुणों के महत्त्व का उल्लेख कर सकेंगे।
- कहानी के परम्परागत छः तत्त्व कथानक, पात्र या चरित्र-चित्रण, कथोपकथन या संवाद, देशकाल या वातावरण, भाषा शैली एंव उद्देश्य होते हैं।

- अब आप कहानी के विभिन्न भेदों की विशेषता भी बता सकते हैं। विषय वस्तु और शैलीगत रूप में हिन्दी कहानी के घटना प्रधान, चरित्र प्रधान, वातावरण प्रधान, भाव प्रधान, पत्रात्मक, डायरी शैली इत्यादि प्रकार के भेद होते हैं।

4.7 शब्दावली

- अविस्मरणीय - याद रखने योग्य
- विस्मरणीय - जो याद रखने योग्य नहीं हो, किन्तु ‘अ’ उपसर्ग से बनकर इसका अर्थ हुआ जिसे भुलाया न जा सके।
- गौण - द्वितीय वर्ग का अर्थात् जो मुख्य के बाद आये।
- संप्रेषणता - अपनी बात दूसरों तक पहुँचाना।
- तार्किक - सटीक बात कहना।
- पत्रात्मक - पत्र के रूप या आधार पर व्यक्त करना।
- कौतूहल - किसी नये या अज्ञात विषय को जानने-सुनने या देखने का उत्साह।
- संक्षिप्तता - थोड़े या कम शब्दों में अपनी बात कहना।
- आत्मकथात्मक - स्वयं की कथा कहना।
- संवादात्मक - दो लोगों के बीच बातचीत का रूप।

4.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

(1) (अ)

क) गलत ख) सही ग) गलत घ) सही

ड़) गलत च)गलत छ) सही

(1) (ब)

(क) सदल मिश्र (ख) बंग महिला

(ग) सैयद इंशा अल्ला खां (घ) रामचन्द्र शुक्ला।

(2) ‘कहानी’ शब्द अंग्रेजी के ‘शॉर्ट स्टोरी’ का समानार्थी है। कहानी का शाब्दिक अर्थ है- "कहना'', इसी रूप में संस्कृत की ‘कथ’ धातु से कथा शब्द बना, जिसका अर्थ भी कहने के लिए प्रयुक्त होता है।

(3) अपने उत्तर को 4.2.2 में दी गई परिभाषा से मिलाइए।

(4) अपने उत्तर को 4.2.3 में दी गई विशेषताओं से मिलाइए।

(5) अपने उत्तर को 4.2.1 में दी गई परिभाषा से मिलाइए।

(6) क) परिणाम ख) लक्ष्य विशेष ग) चार घ) कथन पद्धति

(7) (1) कथानक (2) पात्र अथवा चरित्र-चित्रण
(3) संवाद (4) वातावरण
(5) शैली एवं (6) उद्देश्य।

(8) अपने उत्तर को 4.3 में दी गई परिभाषा से मिलाइए।

(9) घटनाओं, क्रिया-व्यापारों और चरित्रों के माध्यम से किसी एक संवेदना को जगाने के लिए अपनाया गया कथा-परिवेश।

(10) क) घटना प्रधान ख) चरित्र प्रधान
ग) ऐतिहासिक घ) प्रतीकवादी

(11) अपने उत्तर को 4.4 में दिए गए भेद से मिलाइए।

(12) अपने उत्तर को 4.4 में दिए गए भेद से मिलाइए।

4.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

1- वर्मा, धीरेन्द्र, संपा0, हिन्दी साहित्य कोश (भाग 1) (2000) ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी।
2- ठाकुर, देवेश, (1977) हिन्दी कहानी का विकास, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।
3- मोहन, सविता, (1990) समकालीन कहानी कथ्य एवं शिल्प, ग्रन्थायन, अलीगढ़।
4- संपा0 बटरोही, हिन्दी कहानी नौ कदम, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा।
5- संपा0 हरिमोहन, (2002) ग्यारह कहानियाँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
6- शर्मा, राजनाथ, (1987, 20 संस्करण) साहित्यिक निबंघ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
7- गुप्त, सुरेशचन्द्र,''कहानी का स्वरूप'', आदर्श हिन्दी निबन्ध (1967) यंग मैन एण्ड कम्पनी, दिल्ली-6।
8- बटरोही, कहानीः रचना-प्रक्रिया और स्वरूप, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली।
9- टण्डन, नीरजा, ढैला निर्मला संपा0- कहानी सप्तक, (1995) श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा।
10-राय, बाबू गुलाब, (2007, 51 संस्करण) हिन्दी साहित्य का इतिहास, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।

4.10 निबंधात्मक प्रश्न

1. कहानी के तत्वों पर प्रकाश डालिए।
2. कहानी के प्रमुख भेदों को विस्तार से विवेचित कीजिए।

इकाई 5 - उपन्यास का स्वरूप, भेद व तत्व

इकाई की रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 उपन्यास का स्वरूप

5.3.1 अर्थ और परिभाषा

5.3.2 उपन्यास की विशेषता

5.4 उपन्यास के तत्व

5.4.1 कथावस्तु

5.4.2 पात्र अथवा चरित्र-चित्रण

5.4.3 संवाद

5.4.4 वातावरण

5.4.5 भाषा-शैली

5.4.6 उद्देश्य

5.5 उपन्यास के भेद

5.5.1 घटनाप्रधान उपन्यास

5.5.2 चरित्रप्रघान उपन्यास

5.5.3 ऐतिहासिक उपन्यास

5.5.4 सामाजिक उपन्यास

5.5.5 मनोवैज्ञानिक उपन्यास

5.5.6 आंचलिक उपन्यास

5.6 सारांश

5.7 शब्दावली

5.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

5.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची

5.10 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

पाठ्यक्रम के निर्धारित उपन्यास को पढ़ने से पूर्व आपको उपन्यास के स्वरूप, भेद और तत्वों से परिचित होना आवश्यक है। पिछली इकाई में आप कथा-साहित्य के रूपों से परिचित हो चुके हैं। कहानी की तरह उपन्यास भी वर्तमान साहित्य की सबसे सशक्त विधा है। यद्यपि यह सच है कि हिन्दी साहित्य में उपन्यास का आविर्भाव देर से (भारतेन्दु काल) और पश्चिम के आधार पर हुआ। प्रारम्भिक उपन्यासों में अपेक्षित परिपक्वता नहीं थी किन्तु बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में तथा इक्कीसवीं शदी के प्रारम्भिक दशक में उपन्यास ने पूर्णता हासिल कर ली।

इस लम्बी यात्रा में उपन्यास ने कई मोड़ लिए हैं। एक समय था जब पाठक केवल कल्पना लोक की भूल भुलैया वाले उपन्यास को पढ़कर सन्तुष्ट होता था परन्तु आज उपन्यास की घटनाएं और पात्र इतने वास्तविक होते हैं कि हम उनकी सजीवता और यर्थाथता अपने परिवेश में अनुभव ही नहीं करते हैं, वरन् उनको अपने आस-पास पाते हैं।

हिन्दी में मौलिक उपन्यासों की रचना आरम्भ होने से पहले बंगला-उपन्यासों के अनुवादों को लोकप्रियता मिल चुकी थी। हिन्दी के भारतेन्दु युगीन मौलिक उपन्यासों पर संस्कृत के कथा साहित्य, परवर्ती नाटक साहित्य, बंगला उपन्यासों के साथ-साथ ही पाश्चात्य उपन्यासों की छाप भी स्पष्ट दिखाई देती है। किन्तु प्रेमचन्द-पूर्व के उपन्यासकार पश्चिमी उपन्यासों की मूल छवियों से परिचित नहीं हो सके थे। उन्होंने उपन्यास को मनोरंजन अथवा समाज सुधार का साधन मान लिया था। इसीलिए तत्कालीन उपन्यास उपदेश प्रधान, कृत्रिम प्रसंगों, रोमानी और जासूसी-ऐयारी के किस्सों से परिपूर्ण हैं।

हिन्दी उपन्यास की आधुनिक विकास यात्रा का प्रारम्भ श्रीनिवास दास के उपन्यास 'परीक्षागुरू'(1882) से माना जाता है। यह विदेशी ढंग का पहला उपन्यास था लेकिन इसमें भारतीय परंपरा का सुदृढ़ आधार भी था। यह परम्परा आगे चलकर द्विवेदी युग में अधिक पुष्ट एवं विकसित हुई। इस युग के सामाजिक उपन्यासों में 'भाग्यवती' और 'परीक्षागुरु' के अतिरिक्त बालकृष्ण भट्ट की 'सौ अजान एक सुजान', राधाकृष्ण दास के 'निस्सहाय हिन्दू' लज्जाराम शर्मा के 'धूर्त रसिकलाल' इत्यादि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन सभी उपन्यासों का लक्ष्य समाज की कुरीतियों को सामने लाकर उनका विरोध करना और आदर्श परिवार एवं समाज की रचना का सन्देश देना है।

आधुनिक युगीन उपन्यासों में समष्टिवादी प्रवृत्तियों पर व्यक्तिवादी दृष्टिकोण हावी होने लगा। वस्तुतः अपने लचीले और बंधन-मुक्त रूप-विधान के कारण उपन्यास में मानव जीवन का सहज और विस्तृत चित्रण को महत्व दिया जाने लगा। आज के उपन्यासों में मुख्यतः मानवीय जीवन के रहस्यों, मानसिक संघर्षो एवं भावनाओं की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति होती है। आगे हम आपको उपन्यास के बारे में अधिक विस्तार से अध्ययन करेंगे।

5.2 उद्देश्य

इस खण्ड में आप कथा-साहित्य का अध्ययन कर रहे हैं। इस इकाई में हम आपको उपन्यास के स्वरूप, भेद और तत्वों से परिचित करायेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- उपन्यास की रचनागत विशिष्टता को बता सकेंगे।
- उपन्यास के स्वरूप, अर्थ एवं परिभाषा और विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- उपन्यास के तत्वों और भेद को समझ सकेंगे।
- साहित्य और समाज के सम्बन्ध को मजबूती देने में उपन्यास की महत्व बता सकेंगे।

5.3 उपन्यास का स्वरूप

उपन्यास का मुख्य स्रोत अति प्राचीन काल से चली आई रही कथा-कहानियॉं हैं। जिसका जन्म मनुष्य की कौतुहल वृत्ति एवं मनोरंजन वृत्ति को शान्त करने के लिए हुआ है। वर्तमान में यद्यपि बौद्धिकता ने मनुष्य की कौतूहल वृत्ति को कम किया है। अतः आज वे ही कथा-कहानियां समाज में प्रचलित है जिनके पीछे बौद्धिक धरातल है। उपन्यास मनुष्य के विकास के साथ-साथ विकसित होने वाली कथा परम्परा का एक सुगठित रूप है। मानव मन की अतल गहराई से लेकर उसकी समस्त सांसारिक दृष्यमान ऊँचाई, विस्तार एवं अन्य क्रिया कलाप उपन्यास के क्षेत्र में समाहित हैं।

वास्तविकता का प्रतिपादन नाटक और गीत भी करते हैं, परन्तु उपन्यास अधिक विस्तृत, गहन एवं पैना होता है। उपन्यास जीवन के लघुतम और साधारणतम् तथ्यों को भी पूर्ण स्वच्छन्दता तथा स्पटता के साथ प्रस्तुत करता है। उपन्यास मानव की सर्वतोन्मुखी स्वतन्त्रता की उद्धोषक विधा है। आज का जीवन गायन-नर्तन और सम्मोहन का नहीं है। अब अतीत की गौरव गाथा की अपना महत्त्व खो चुकी है। अतः उनसे अब लिपटे रहना और जीवन की प्रत्येक प्रेरणा उनमें देखना स्वयं को अन्धकार में रखने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। आज के जीवन के सूत्र है- यथार्थता, स्पष्टता, ध्रुवता, मांसलता, बौद्धिकता और स्तरीय निर्बन्धता। इन तत्वों के सार से ही उपन्यास का स्परूप् गठित हुआ है।

उपन्यास में प्रायः हमारा वह अति समीपी और आन्तरिक जीवन चित्रित होता हैं जो हमारा होते हुए भी प्रायः हमारा नहीं है। उपन्यास वर्तमान युग की लोकप्रिय साहित्यिक विधा है। आज की युग चेतना इतनी गुफित और असाधारण हो गई हैं, कि इसे साहित्य के किसी अन्य रूप में इतने आकर्षक और सहज रूप में प्रस्तुत करना दुष्कर है। उसे उपन्यास पूरी सम्भावना और सजीवता के साथ उपस्थित करता है। इसलिये अनेक विद्वानों ने उपन्यासों को आधुनिक युग का महाकाव्य कहा है।

5.3.1 उपन्यास का अर्थ और परिभाषा :-

अर्थ - उपन्यास शब्द उप-समीप तथा न्यास-थाती के योग से बना है, जिसका अर्थ है (मनुष्य के) निकट रखी वस्तु। अर्थात् वह वस्तु या कृति जिसको पढ़कर ऐसा लगे कि हमारी ही हैं, इसमें हमारे ही जीवन का प्रतिबिम्ब हैं, 'उपन्यास' है। 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग प्राचीन संस्कृत साहित्य में भी मिलता है। संस्कृत लक्षण ग्रन्थों में इस शब्द का प्रयोग नाटक की संधियों के उपभेद के लिए हुआ था। इसकी दो प्रकार से व्याख्या की गई है -"उपन्यासः प्रसादन"- अर्थात प्रसन्न करने को 'उपन्यास' कहते हैं। दूसरी व्याख्या के अनुसार -" उपपत्तिक्रतोहार्थ उपन्यासः संकीर्तितः"- अर्थात् किसी अर्थ को युक्तियुक्त रूप से उपस्थित करना 'उपन्यास' कहलाता हैं। किन्तु आज जिस अर्थ में ग्रहण किया जाता है, वह मूल 'उपन्यास' शब्द से पूर्णतः भिन्न हैं।

हिन्दी साहित्य में 'उपन्यास' नवीनतम् विधाओं में से एक है। अंग्रेजी में जिसे 'नॉवेल' कहते हैं। 'नॉवेल' शब्द नवीन और लघु गद्य कथा दोनों अर्थो में प्रयुक्त होता रहा, किन्तु अठारहवी शताब्दी के पश्चात् साहित्यिक विधा के रूप में प्रतिष्ठित हो गया। गुजराती में 'नवलकथा' मराठी में 'कादम्बरी' और बँगला के सदृश ही हिन्दी में यह विधा 'उपन्यास' नाम से प्रचलित है। इतालवी भाषा में 'नॉवेल' शब्द 'लघुकथा' के लिए प्रयुक्त होता है। जो नवीनतम् का द्योतन तो कराता ही है साथ ही इस तथ्य को भी घोषित करता है कि उसका सम्बन्ध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वर्तमान जीवन से है।

परिभाषा - हम पहले ही बता चुके हैं कि कहानी पश्चिम से आई विधा है। कहानी की भॉति आधुनिक उपन्यास भी पाश्चात्य साहित्य का कलेवर लेकर आया है। तो यहाँ भारतीय एवं पश्चिमी विद्वानों की कतिपय परिभाषाओं को लिया जा सकता है।

भारतीय विचारक - आधुनिक युग में जिस साहित्य विशेष के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है उसकी प्रकृति को स्पष्ट करने यह शब्द सर्वथा समर्थ है। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द के शब्दों में-''मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।''

हजारी प्रसाद द्विवेद्वी जी उपन्यास की परिभाषा देते हुए कहते हैं- "उपन्यास आधुनिक युग की देन है। नये उपन्यास केवल कथामात्र नही है यह आधुनिक वैयक्तितावादी दृष्टिकोण का परिणाम है। इसमें लेखक अपना एक निश्चित मत प्रकट करता है और कथा को इस प्रकार सजाता है कि पाठक अनायास ही उसके उद्देश्य को ग्रहण कर सकें और उससे प्रभावित हो सकें।"

डॉ श्याम सुन्दर दास के शब्दों में- "उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है।''

डॉ. भागीरथ मिश्र- "युग की गतिशील पृष्ठभूमि पर सहज शैली में स्वाभाविक जीवन की पूर्ण व्यापक झाँकी प्रस्तुत करने वाला गद्य मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा हैं।"

पाश्चात्य विचारक - उपन्यास के सन्दर्भ में किसी निर्ष्कष में पहुँचने से पूर्ण कतिपय पाश्चात्य विद्वानों की एतत् सम्बन्धी धारणा की प्रस्तुति नितान्त आवश्यक हैं।

राल्फ फॉक्स के अनुसार- "उपन्यास केवल काल्पनिक गद्य नहीं है, यह मानव जीवन का गद्य हैं।'' फीलि्डंग के अनुसार- '' उपन्यास एक मनोरंजन पूर्ण गद्य महाकाव्य है।''

बेकर ने कहा है कि "उपन्यास वह रचना है जिसमें किसी कल्पित गद्य कथा के द्वारा मानव जीवन की व्याख्या की गई हो।''

प्रिस्टले का मत- "उपन्यास गद्य में लिखी कथा है जिसमें प्रधानतः काल्पनिक पात्र और घटनाएँ रहती है। यह जीवन का अत्यन्त विस्तृत और विशद दपर्ण है और साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में इसका क्षेत्र व्यापक होता है। उपन्यास को हम ऐसे कथानक के रूप में ले सकते है जो सरल और शुद्ध अथवा किसी जीवन-दर्शन का माध्यम हो।"

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर का जा सकता है कि उपन्यास आधुनिक युग का अति समादृत साहित्य रूप है। उपन्यास की शैली की स्वाभाविकता उसकी रोचकता बनाये रखने में सहायक होती है। उपन्यास में उपन्यासकार का निजी जीवन दर्शन प्रतिबिम्बित होता है। लेखक की जीवन और जगत की अनुभूति जितनी व्यापक और गहरी होगी उसका औपन्यासिक वर्णन भी उतना ही व्यापक और गम्भीर होगा।

5.3.2 उपन्यास की विषेशताएँ :-

ऊपर आप उपन्यास के स्वरूप और अर्थ को समझ चुके है। अब हम संक्षेप में 'उपन्यास' की विषेशताओं को जानेंगे। विद्वानों ने उपन्यास में निम्नलिखित तथ्यों को प्रस्तुत किया है -

1- उपन्यास यर्थाथ जीवन की कलात्मक अभिव्यक्ति हैं। यर्थाथ से तात्पर्य है कि जीवन जैसा दीखता या अनुभव होता है। इस जाने-पहचाने जीवन के अनुभव को कल्पित घटनाओं तथा पात्रों के माध्यम से उपन्यासकार रूपायित करता है। यह रूपायन कल्पित होते हुए भी मूलतः यर्थाथ है।

2- उपन्यास का मूल तत्व मानव चरित्र हैं। इसमें मनुष्य के चरित्र का बाह्य पक्ष या आचरण पक्ष तो प्रस्तुत होता ही हैं, साथ ही उसके मन की विभिन्न स्थितियों का उद्घाटन भी होता है।

3- उपन्यासकार जीवन की कथा कहकर पाठकों की उत्सुकता जगाता है। बाद में उसी जिज्ञासा का शमन मानव चरित्र के आन्तरिक उद्घाटन तथा परिस्थितियों को प्रकाश में लाकर करता है। इस प्रकार सरस कथा होते हुए भी वह जीवन का गहन गंभीर विश्लेषण करता हैं।

4- उपन्यासकार अपने समकालीन जीवन को दृष्टि में रखकर उसके आधार पर उपन्यास में प्रस्तुत जीवन की व्याख्या और विश्लेषण करता है।

अभ्यास प्रश्न

अब तब आपने इस इकाई में उपन्यास के स्वरूप, अर्थ, परिभाषा और उसकी विशेषताओं का अध्ययन किया है। अब आप निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए और अपने उत्तर को इकाई के अन्त में दिये गए उत्तर से मिलाकर देखिए कि आपका उत्तर सही है या नहीं।

1- नीचे कुछ कथन दिये गए हैं, वे सही है या गलत। बताइए।

क) उपन्यासों को आधुनिक युग का महाकाव्य कहा हैं।

ख) उपन्यास यथार्थ जीवन की कलात्मक अभिव्यक्ति है।

ग) अंग्रेजी 'नॉवेल' और गुजराती 'नवलकथा' ही उपन्यास है।

घ) उपन्यास का मूल तत्व मानव चरित्र नहीं हैं।

2- उपन्यास से आप क्या समझते हैं। उत्तर तीन पंक्ति में दीजिए।

....

....

....

3- उपन्यास के सन्दर्भ में दो-दो भारतीय एवं पश्चिमी विद्वानों के विचारों को लिखिए।

4- एक आदर्श उपन्यास की तीन विशेषताओं को लिखिए।

5.4 उपन्यास के तत्व

अभी तक आपने उपन्यास के स्वरूप और उसकी विषेशताओं को समझा है। मूल्यांकन की दृष्टि से उपन्यास के कुछ तत्व निर्धारित किये गए है। तत्त्वों की दृष्टि से विद्वानों ने उपन्यास के छह तत्त्व माने हैं-

5.4.1 कथानक :-

किसी उपन्यास की मूल कहानी को कथावस्तु कहा जाता है। कथावस्तु तत्व उपन्यास का अनिवार्य तत्व हैं। कथा साहित्य में घटनाओं के संगठन को कथावस्तु या कथानक की संज्ञा दी जाती है। जीवन में अनेक प्रकार की घटनाएँ घटती रहती है। उपन्यासकार अपने उद्देश्य के अनुसार उनमें एक प्रकार की एकता लाता है और अपनी कल्पना के सहारे इन कथानकों की कल्पना की जाती है।

कथासूत्र, मुख्य कथानक, प्रासंगिक कथाएँ या अंतर्कथाएँ, उपकथानक, पत्र, समाचार, लेख तथा डायरी के पन्ने आदि कथानक के उपकरण या संसाधन हैं। जिनका उपन्यासकार अपनी आवश्यकता अनुसार उपयोग करता हैं। अनावश्यक घटनाओं का समावेश कथावस्तु को शिथिल, विकृत और सारहीन बना देता हैं। अतः इस घटना का उदय, विकास और अन्त व्यवस्थित और निश्चित होता हैं। उपन्यास में घटनाक्रम में एकता और संगठन अनिवार्य है यदि इनमें से एक को भी अलग किया तो मूल कथा बिखरी प्रतीत होती है। परन्तु आज के नवीन उपन्यासकारों का मानना है कि सांसारिक जीवन में घटने वाली घटनाओं का कोई भी क्रम नहीं होता, जीवन में घटनाएँ असंबद्ध होकर घटती है इसलिए घटनाओं के प्रवाह को पकड़ा नहीं जा सकता।

इस विचार से प्रभावित हिन्दी उपन्यासकार उपेन्द्रनाथ 'अश्क' का 'गर्म राख' लक्ष्मीकान्त वर्मा का 'खाली कुर्सी की आत्मकथा', धर्मवीर भारती का 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' आदि अनेक उपन्यासों के सामने यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि इनमें घटनाओं का क्रम क्या हो? कथानक का चुनाव इतिहास, पुराण, जीवनी, आदि कहीं से भी किया जा सकता है। आज जीवन से सम्बन्धित कथानक को ही अधिक महत्त्व दिया जाता, क्योंकि उसमें हमारे दैनिक जीवन की स्वाभाविकता रहती हैं। जीवन की विविध अवस्थाओं का चित्रण, विभिन्न पक्षों का

मूल्यांकन एवं मानवीय अनुभूतियों की पूर्ण अभिव्यक्ति कथानक का गुण हैं। उपन्यास में कथानक को प्रस्तुत करने के तीन ढंग प्रचलित हैं-(1) लेखक तटस्थ दर्शक की भाँति उसका वर्णन करता है। (2) कथावस्तु मुख्य या गौण पात्रों से कहलाई जाती है। (3) पात्रों की श्रृखंला के रूप में उसका वर्णन होता है। संक्षेप में कह सकते हैं कि- रोचकता, स्वाभाविकता तथा प्रवाह कथावस्तु के आवश्यक गुण हैं।

5.4.2 चरित्र-चित्रण और पात्र :-

कथानक तत्व के पश्चात् उपन्यास का द्वितीय महत्त्वपूर्ण तत्व चरित्र-चित्रण अथवा पात्र योजना है। जैसा कि अब आप जानते है, उपन्यास का मूल विषय मानव और उसका जीवन होता है। अतः पात्रों के माध्यम से उपन्यासकार सजीवता, सत्यता और स्वभाविकता के साथ जीवन के इन पहलूओं को समाज के समक्ष रखता है। यो तो उपन्यास के सभी तत्व अपना-अपना अलग महत्त्व रखते हैं परन्तु कथानक और पात्र एक-दूसरे की सफलता के लिए अधिक निकट होते हैं। इसलिए इनका पारस्परिक संतुलन अनिवार्य हो जाता है। कथावस्तु के अनुरूप पात्र का चयन होना आवश्यक हैं। इतना ही नहीं वह जिस वर्ग के पात्र का चयन करता है, उसके आंतरिक और बाह्य व्यक्तित्व की सामान्य और सूक्ष्म विषेशताओं, उसकी आकृति, वेशभूषा, वार्तालाप और भाषा-शैली आदि कथावस्तु के अनुरूप होना आवश्यक हैं। अन्यथा दोनों का विरोध रचना को असफल कर देता हैं। इस युग में पात्र सम्बन्धी प्राचीन और नवीन धारणा में पर्याप्त अन्तर आया है। पहले मुख्य पात्र नायक और नायिका पर विशेष बल दिया जाता था। आज अन्य पात्रों को भी महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इसका कारण मनोविज्ञान का क्रान्तिकारी अन्वेषण है।

आज पात्रों के बाहरी और भीतरी व्यक्तित्व का मनावैज्ञानिक विश्लेषण किया जाता है जिससे उनके चरित्र में अधिक स्वाभाविकता और यथार्थता आ जाती हैं। इसके अतिरिक्त आज पात्रों को कठपुतली बनाकर नहीं बल्कि उन्हें स्वतन्त्र व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। पात्रों के चार प्रकार हैं- (1) वर्ग-विशेष के प्रतिनिधि (टाइप) (2) विशिष्ट व्यक्तित्व वाले (3) आर्दशवादी (4) यथार्थवादी। इसे इस प्रकार समझ सकते हैं : प्रेमचन्द के उपन्यास 'गोदान' का 'होरी' पहले प्रकार का पात्र है क्योंकि वह एक विशेष वर्ग को दर्शा रहा है। जबकि 'अज्ञेय' के उपन्यास 'शेखर एक जीवन' का शेखर दूसरे प्रकार का पात्र यानि विशिष्टता लिए हुए है। आज वही उपन्यास श्रेष्ठ माने जाते हैं, जिनके पात्र जीवन की यर्थाथ स्थिति का संवेदनशील और प्रभावपूर्ण प्रस्तुतीकरण करते हैं।

5.4.3 कथोपकथन :-

उपन्यास में यह कथावस्तु के विकास तथा पात्रों के चरित्र-चित्रण में सहायक होता है। इससे कथावस्तु में नाटकीयता और सजीवता आ जाती है। पात्रों की आन्तरिक मनोवृत्तियों के स्पष्टीकरण में भी यह सहायक होता है। इसका विधान पात्रों के चरित्र, स्वभाव, देश, स्थिति, शिक्षा, अशिक्षा, आदि के अनुसार होना चाहिए। पात्रों के वार्तालाप में स्वाभाविकता का होना अत्यन्त आवश्यक हैं।

5.4.4 देशकाल वातावरण :-

पात्रों के चित्रण को पूर्णता और स्वाभाविकता देने के लिए देशकाल या वातावरण का ध्यान रखना जरूरी है। घटना का स्थान समय, तत्कालीन विभिन्न परिस्थितियों का पूर्ण ज्ञान उपन्यासकार के लिए आवश्यक है। ऐतिहासिक उपन्यासों का तो यह प्राण तत्व है। उदाहरणार्थ यदि कोई लेखक चन्द्रगुप्त और चाणक्य को सूट-बूट में चित्रित करे तो उसकी मूर्खता और ऐतिहासिक अज्ञानता का परिचय होगा और रचना हास्यास्पद हो जाऐगी। देशकाल-वातावरण का वर्णन सन्तुलित होना चाहिए, जहाँ तक वह कथा-प्रभाव में आवश्यक हो तथा पाठक को वह काल्पनिक न होकर यर्थाथ लगे। अनावश्यक अंशों की प्रधानता नहीं होनी चाहिए।

5.4.5 भाषा- शैली :-

उपन्यास को अपने भाव एवं विचारों को व्यक्त करने के लिए सरस और सरल भाषा शैली का प्रयोग करना चाहिए। सम्पूर्ण उपन्यास की रचना-शैली एक सी है। प्रारम्भिक सभी उपन्यास रूढ़िगत शैली में ही लिखे गए। तृतीय पुरूष के रूप में वर्णनात्मक शैली ही का प्रयोग प्रायः अधिकांश उपन्यासों में किया गया है।

बाद में कलात्मक प्रयोगों के फलस्वरूप उपन्यासों में जब विकास हुआ तो सबसे अधिक प्रयोग शैली में उपन्यास लिखे गए। किन्तु धीरे-धीरे कथावस्तु में परिवर्तन से आधुनिक साहित्य की नव विधाओं में शैली तत्व का महत्त्व अधिक होने लगा, और सामान्य रूप से कथा शैली-जैसे प्रेमचन्द की रंगभूमि; आत्मकथा शैली- जैसे इलाचन्द जोशी की 'घृणामयी'; पत्र शैली जैसे उग्र का 'चन्द हसीनों के खतूत'; डायरी शैली जैसे 'शोषित दर्पण' प्रचलित हो गई। इसके अतिरिक्त वर्णनात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, फ्लैशबैक शैली, नाटकीय शैली, लोक कथात्मक शैली, कथोपकथन शैली, आदि प्रयोग आधुनिक युगीन उपन्यासों में किया जाता हैं।

5.4.3 उद्देश्य :-

उपन्यास में उद्देश्य या बीज से तात्पर्य-जीवन की व्याख्या अथवा आलोचना से है। प्राचीन काल में उपन्यास की रचना के प्रायः दो मूल उद्देश्य हुआ करते थे-एक तो उपदेश की वृत्ति, जिसके अन्तर्गत नैतिक शिक्षा प्रदान करना था दूसरा केवल कोरा मनोरंजन, जिसका आधार कौतूहल अथवा कल्पना हुआ करता था। आज उपन्यास में जीवन का यर्थाथ चित्रण होता है। इसलिए उपन्यासकार, जीवन के साधारण और असाधारण व्यापारों का मानव-जीवन पर कैसा प्रभाव पड़ता है, इसका आकलन करता हैं। अतः सभी उपन्यासों में कुछ विशेष विचार और सिद्वान्त स्वतः ही आ जाते हैं।

अभ्यास प्रश्न

अब आप निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए और अपने उत्तर को इकाई के अन्त में दिये गए उत्तर से मिलाकर देखिए कि आपका उत्तर सही है या नहीं।

5- नीचे कुछ कथन दिए गए हैं, वे सही है या गलत। बताइए।

क) उपन्यास किसी घटना का प्रतिबिम्ब है।

ख) कथावस्तु के अनुरूप पात्र-चयन होना आवश्यक नहीं हैं।

ग) उपन्यास में घटनाक्रम में एकता और संगठन अनिवार्य है।
घ) उपन्यास की मूल कहानी को कथावस्तु कहा जाता है।
ड़) उपन्यास में देशकाल के ध्यान में नहीं रखा जाता है।
6- नीचे कुछ बहुविकल्पिक प्रश्न दिए हैं। उनके सही उत्तर छाटिए।
क) उपन्यास का मूल आधार होता हैं-
1) देशकाल 2) पात्र 3) शैली 4) कथानक
ख) उपन्यास के तत्व नहीं हैं-
1) कथावस्तु 2) चरित्र-चित्रण 3) कथोपकथन 4) रोचकता
7- उपन्यास का उद्देश्य क्या है। उत्तर तीन पंक्ति में दीजिए।
....
....
....
8- उपन्यास में भाषा-शैली का क्या प्रभाव पड़ता है।
9- उपन्यास की कथावस्तु में किन-किन बातों को सम्मिलित किया जाता है।

5.5 उपन्यास के भेद

उपन्यास के विषय में ऊपर दिये गए परिचय से यह तो आप जान गए होंगे कि उपन्यास में कुछ ऐसे तत्व होते हैं, जो प्रायः सभी में मिलेंगे। किन्तु यह भी सच है कि सभी तत्व समान रूप से नहीं होते। कभी विषय वस्तु की प्रधानता होती है तो किसी में पात्र यानी चरित्र। कहने का तात्पर्य यह है कि उपन्यास में तत्वों की प्रमुखता के आधार पर कई भेद किये जा सकते हैं।
1- तत्वों के आधार पर: घटना प्रधान, चरित्र प्रधान।
2- वर्ण्य विषय के आधार पर: ऐतिहासिक, सामाजिक, साहसिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक इत्यादि।
3- शैली के आधार पर: कथा, आत्मकथा, पत्रात्मक, डायरी आदि।

उपन्यासों का यह वर्गीकरण भ्रम उत्पन्न करता है, साथ ही शैली को छोड़कर दोनों के कई उपरूप समानता लिए हुए है। अतः विद्वानो ने घटनाप्रधान उपन्यास, चरित्रप्रघान उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास, सामाजिक उपन्यास, मनोवैज्ञानिक उपन्यास, आंचलिक उपन्यासों इत्यादि को मुख्य भेद माना है। आगे हम उपन्यास के इन भेदों का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

5.5.1 घटना प्रधान उपन्यास :-

इन उपन्यासों में चमत्कारिक घटनाओं की प्रधानता रहती है। पाठक के कौतूहल और उत्सुकता को निरन्तर जाग्रत बनाए रखने में ही इनकी सफलता मानी जाती है। इन उपन्यासों में यद्यपि घटनाएं ही मुख्य होती हैं परन्तु वास्तविकता की अपेक्षा काल्पनिक तथा चमत्कारपूर्ण जीवन का प्राधान्य रहता है। इनकी कथावस्तु प्रेमाख्यान, पौराणिक कथाएँ, जासूसी तथा तिलिस्म घटनाओं से निर्मित होता है।

5.5.2 चरित्र-प्रधान :-

इन उपन्यासों में घटना के स्थान पर पात्रों की प्रधानता होती है। इनमें पात्रों के चारित्रिक-विकास पर ही पूर्ण ध्यान दिया जाता है। पात्र घटनाओं से पूर्ण स्वतन्त्र होते हैं। वे स्वयं परिस्थिति के निर्माता होते है, न कि परिस्थिति उनकी। पात्रों का चारित्रिक-विकास आरम्भ से अन्त एकरस बने रहते हैं। केवल उपन्यास के विस्तार के साथ-साथ उनके विषय में पाठक के ज्ञान में वृद्धि होती रहती है। इन चरित्रों में परिवर्तन नहीं होता, घटनाएं केवल पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं पर ही प्रकाश डालती है। ये उपन्यास समाज, देश तथा जाति की चारित्रिक विशेषताओं का प्रदर्शन सर्वाधिक प्रभावशाली और संवेदनशील रूप में करते हैं।

हिन्दी में जैनेन्द्र, उग्र, ऋषभचरण जैन, चतुरसेन शास्त्री के उपन्यास इसी वर्ग के हैं। ऐसे उपन्यासों के पाठक कम होते हैं। ये चर्चा का विषय तो बनते हैं परन्तु लोकप्रिय नहीं हो पाते। भाषा, शिल्प आदि की दृष्टि से इन्हें श्रेष्ठ माना जाता है।

5.5.3 ऐतिहासिक उपन्यास :-

ऐतिहासिक उपन्यास में इतिहास की घटना या चरित्र को उजागर किया जाता है। या कहें कि किसी ऐतिहासिक घटना या चरित्र से प्रभावित होकर जब उपन्यासकार उससे सम्बद्ध युग और देश की सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक आदि परिस्थितियों का चित्रण अपनी रचना में करता है तो उसे ऐतिहासिक उपन्यास कहा जाता है। इस कार्य के लिए उसे इतिहास से सम्बन्धित अन्य तथ्यों, वातावरण, तत्कालीन जीवन का सर्वांगीण, आन्तरिक और प्रभावोत्पादकता का ज्ञान होना चाहिए। इन उपन्यासों में इतिहास और कल्पना का पूर्ण योग रहता है। इनसे एक का भी अभाव होने से सफल ऐतिहासिक उपन्यास की रचना नहीं हो सकती।

ऐतिहासिक उपन्यास इतिहासकारों, पुरातत्ववेताओं के द्वारा संग्रहित नीरस तथ्यों को कल्पना द्वारा जीवित और सुन्दर बना देता है, किन्तु रचनात्मकता का आश्रय लेकर उपन्यास लेखक जिस रूप में उसे हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है; विश्वसनीय होने पर हम उसे यथार्थ रूप में स्वीकार कर लेते है। हिन्दी में ऐतिहासिक उपन्यासों की परम्परा का आरम्भ भारतेन्दु युग में किशोरीलाल गोस्वामी रचित कुछ उपन्यासों में मिलता है। आधुनिक युगीन हिन्दी उपन्यासों के ऐतिहासिक उपन्यास लेखकों में डॉ. वृंदावन लाल वर्मा का नाम उल्लेखनीय है। 'गढ कुंडार', 'विराटा की पद्मिनी', 'मृगनयनी', टूटे कांटे', अहिल्याबाई' आदि उनके ऐतिहासिक उपन्यास है। 'झाँसी की रानी' लेखक की ऐतिहासिक रचनाओं में सर्वश्रेष्ठ है।

5.5.4 सामाजिक उपन्यास :-

सामाजिक उपन्यासों में सामयिक युग के विचार आदर्श और समस्याएं चित्रित रहती हैं। सामाजिक समस्याओं का चित्रण इनका मुख्य उद्देश्य रहता है। इन पर राजनैतिक-सामाजिक धारणाओं और मतों का विशेष प्रभाव रहता है। विषयगत विस्तार की दृष्टि से सामाजिक उपन्यासों का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। हिन्दी साहित्य में अधिकांश उपन्यास सामाजिक उपन्यास की श्रेणी में आते हैं। भारतेन्दु युग से प्रारम्भ होने वाली इस औपन्यासिक प्रवृत्ति का प्रसार

परवर्ती युग में विभिन्न रूपों में हुआ है। प्रेमचंद और प्रेमचंद के परवर्ती युग में सामाजिक प्रवृत्ति अनेक रूपों में विकसित हुई। जिसमें मुख्य समस्यामूलक भाव प्रधान एवं आदर्शवादी तथा नीति कथात्मक औपन्यासिक प्रवृत्तियाँ प्रमुख हैं।

5.5.5 मनोवैज्ञानिक उपन्यास :-

आधुनिक युग के विश्व साहित्य पर मनोविश्लेषणवादी विचारधाराओं का पर्याप्त प्रभाव पड़ा। हिन्दी में मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की रचना प्रथम महायुद्ध के पश्चात् हुई। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में कथानक के बाह्य स्वरूप को अधिक महत्व न प्रदान कर चरित्रों के मानसिक और भावनात्मक पक्ष पर सबसे अधिक बल दिया जाता है। इन उपन्यासों में अधिकतर मनुष्य के अवचेतन का ही विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है। इसकी कथावस्तु इसलिए गौण हो जाती है, क्योंकि केवल कथावस्तु प्रस्तुत करना इस प्रकार के उपन्यासों का एकमात्र ध्येय नहीं रहता। वे परिस्थिति विशेष का विश्लेषण करते हैं और यह सिद्ध करने की चेष्टा करते हैं कि एक विशेष पात्र, विशेष परिस्थिति में कोई प्रतिक्रिया किस प्रकार करता है तथा उसका उसके चेतन, अचेतन, अर्धचेतन किस अवस्था से, कैसे और किस प्रकार का संबंध रहा है। इन उपन्यासों में पात्र संख्या कम होती है, क्योंकि पात्र का मनोविश्लेषण अनिवार्य होता है।

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की रचना प्रेमचंद की देन है, परन्तु उनके परवर्ती काल में मनोवैज्ञानिक उपन्यास अधिकाधिक संख्या में प्रणीत हुए। इस परम्परा में, जैनेन्द्र, इलाचन्द जोशी, उपेन्द्र नाथ 'अश्क', सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' तथा बाल मनोविज्ञान उपन्यास लेखक प्रताप नारायण टण्डन के उपन्यासों को रखा गया है।

5.5.6 आंचलिक उपन्यास :-

इधर कुछ वर्षो से हिन्दी में एक नये प्रकार के उपन्यास लिखे जाने आरम्भ हुए, जिन्हें 'आंचलिक उपन्यास' कहा जाता है। इनमें किसी अंचल-विशेष के समग्र जीवन का चित्रण होता है। फणीश्वर नाथ 'रेणु', नागार्जुन, अमृतलाल नागर, उदयशंकर भट्ट, शैलेश मटियानी आदि आंचलिक उपन्यासकारों ने पर्याप्त ख्याति प्राप्त की। इस प्रकार के उपन्यासों का कथा क्षेत्र सीमित होता है। कथाकार अपने प्रदेशांचल के व्यावहारिक जीवन का जीता-जागता स्वरूप प्रस्तुत करता है।

उक्त भेदों के अतिरिक्त उपन्यास का वर्गीकरण शैलीगत आधार पर भी किया जा सकता है। वर्तमान युग में उपन्यास लेखन की अनेक शैलियाँ दिखाई दे रही है। यों तो अधिकतर उपन्यासकार श्रोताओं-पाठकों का ध्यान रखकर पात्रों और दृश्यों का वर्णन निरपेक्ष भाव से करते थे। जिसे वर्णनात्मक शैली कहते है, किन्तु अब मनोविज्ञान के समावेश से अन्य शैलियाँ भी विकसित हुई। इनमें कथा तथा पात्र के विकास के लिए दो या दो से अधिक पात्रों का सम्भाषण, संवादात्मक शैली, उत्तम पुरुष अर्थात् मुख्य पात्र द्वारा आरम्भ से अन्त तक स्वयं कथा कहने की आत्मकथात्मक शैली, और पत्रों के द्वारा चरित्र और कथावस्तु का विकास पत्रात्मक शैली के रूप हुआ है। कुछ लेखकों ने डायरी शैली में भी उपन्यास लिखे हैं।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि हिन्दी उपन्यास साहित्य निरन्तर विकसित होता रहा है। आज भी रूप-विधान और शैली की दृष्टि से इसमें दिन-प्रतिदिन नये प्रयोग देखे जा रहे हैं।

अभ्यास प्रश्न

अब आप निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए और अपने उत्तर को इकाई के अन्त में दिये गए उत्तर से मिलाकर देखिए कि आपका उत्तर सही है या नहीं।

10-किन उपन्यासों में चमत्कारिक घटनाओं की प्रधानता रहती है ?

11-अंचल-विशेष के समग्र जीवन का चित्रण करने वाले उपन्यासों को क्या कहते हैं ?

12-हिन्दी में मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की रचना कब हुई ?

13-'झाँसी की रानी' किस लेखक की ऐतिहासिक रचना है ?

14-भारतेन्दु युग के ऐतिहासिक उपन्यासकार का नाम बताइए।

15- उपन्यास के निम्नलिखित भेदों पर टिप्पणी लिखिए।

घटना प्रधान उपन्यास

समाजिक उपन्यास

ऐतिहासिक उपन्यास

आंचलिक उपन्यास

5.6 सारांश

- उपन्यास कथा-साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है तथा यह अंग्रेजी में 'नॉवेल', बंगला और हिन्दी में उपन्यास के नाम से प्रचलित है।
- इस इकाई को पढ़ने के बाद आप उपन्यास का अर्थ और परिभाषा बता सकते हैं।
- उपन्यास की विषेशता में यर्थाथ जीवन की कलात्मक अभिव्यक्ति, जीवन का गहन गंभीर विश्लेषण इत्यादि आते है। अब आप उपन्यास में उन गुणों के महत्त्व का उल्लेख कर सकेंगे।
- उपन्यास के परम्परागत छः तत्त्व कथानक, पात्र या चरित्र-चित्रण, कथोपकथन या संवाद, देशकाल या वातावरण, शैली एंव उद्देश्य होते हैं।
- अब आप उपन्यास के विभिन्न भेदों की विशेषता भी बता सकते हैं। विषय वस्तु और शैलीगत रूप में हिन्दी उपन्यास के घटना प्रधान, चरित्र प्रधान, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, पत्रात्मक, डायरी शैली इत्यादि प्रकार के भेद होते हैं।

5.7 शब्दावली

- आविर्भाव - उत्पत्ति, उत्पन्न होना।
- परिपक्वता - पक्व का अर्थ है पका हुआ। ऐसी रचना जो पूरी तरह सम्पन्न हो।
- शमन - नष्ट करना या ख़त्म करना।
- ध्येय - लक्ष्य।
- कतिपय - कुछ
- पुरातत्ववेता - प्राचीन इतिहास को जानने वाले।
- अन्वेषण - खोजना।
- कथोपकथन - दो व्यक्तियों के बीच होने वाली बातचीत।

5.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. क) सही ख) सही ग) सही घ) गलत
2. अपने उत्तर को 5.2.1 से मिलाइए।
3. अपने उत्तर को 5.2.1 से मिलाइए।
4. अपने उत्तर को 5.3 में दी गई विशेषताओं से मिलाइए।
5. क) सही ख) गलत ग) सही घ) सही ड़) गलत
6. क) कथानक ख) रोचकता
7. अपने उत्तर को 5.3.3 से मिलाइए।
8. अपने उत्तर को 5.3.5 से मिलाइए।
9. अपने उत्तर को 5.3.1 से मिलाइए।
10. घटनाप्रधान उपन्यास।
11. आंचलिक उपन्यास।
12. प्रथम महायुद्ध के पश्चात।
13. डॉ. वृंदावन लाल वर्मा।
14. किशोरीलाल गोस्वामी
15. अपने उत्तर को 5.4 उपन्यास के भेद से मिलाइए।

5.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची

1- हिन्दी साहित्य कोश (भाग 1), संपा0 डॉ. वर्मा (2000), ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी।

2- राणा, डॉ. बलराज सिंह,(1978) उपन्यासकार जैनेन्द्र के पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, संजय प्रकाशन, दिल्ली।

3- शर्मा, राजनाथ, (1987, 20 संस्करण) साहित्यिक निबंध, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

4- गुप्त, डॉ. सुरेशचन्द्र,''उपन्यास का स्वरूप'', आदर्श हिन्दी निबन्ध (1967) यंग मैन एण्ड कम्पनी, दिल्ली-6।

5- पाल, डॉ. विजय, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र, जयभारती प्रकाशन, दिल्ली।

6- राय, बाबू गुलाब, (2007, 51 संस्करण) हिन्दी साहित्य का इतिहास, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।

7- बाला, डॉ. कु0 शैल, (1973) हिन्दी उपन्यास का प्रारम्भिक विकास, सत्य सदन, बाराबंकी।

8- मिश्र एवं तिवारी डॉ. राजेन्द्र, प्रहलाद, (2003, 1 संस्करण), बीसवीं शताब्दी के चर्चित उपन्यास, तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली।

5.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. उपन्यास के तत्वों पर प्रकाश डालिए।
2. उपन्यास के प्रमुख भेदों पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

इकाई 6 - उपन्यास व कहानी में अन्तर

इकाई की रूपरेखा

6.1 प्रस्तावना
6.2 उद्देश्य
6.3 उपन्यास और कहानी का अन्तर
6.4 सारांश
6.5 शब्दावली
6.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
6.7 संदर्भ ग्रन्थ सूची
6.8 निबन्धात्मक प्रश्न

6.1 प्रस्तावना

इससे पूर्व की इकाईयों को पढ़कर अब तक आप जान चुके हैं कि उपन्यास और कहानी का वर्तमान स्वरूप आधुनिक युग की देन है। कहानी शब्द के लिए 'स्टोरी' संज्ञा का प्रयोग किया जाता है, जिसमें मोटे रूप में प्रायः सभी प्राचीन रूप आ जाते हैं। इसके चिह्न प्राचीनतम् साहित्य में भी मिलते हैं। कथा-साहित्य संसार की सभी भाषाओं में प्राप्त होता है। आरम्भ में सभी कथाएँ एक रूप और एक ही पद्धति से विकसित होने के कारण कथा-साहित्य कहलाने लगी।

उपन्यास और कहानी दोनों ही गद्यमय एवं वर्णन पर आधारित ऐतिहासिक शैली की विधाएँ हैं, जिनमें लेखक संवाद या कथोपकथन का आश्रय लेता है। उपन्यास और कहानी कथा-साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है और हिन्दी साहित्य में इनका पदार्पण बंगला के माध्यम से पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव से हुआ। तत्वगत और स्वरूप की दृष्टि से उपन्यास और कहानी एक दूसरे के अत्यंत निकट हैं। उपन्यास और कहानी दोनों में ही एक समान छः तत्त्व माने गए हैं। इन दोनों में कुछ समानतायें होने के कारण कुछ आलोचकों का मानना है कि उपन्यास को काट-छाँट कर कहानी और कहानी को विचार पूर्वक कह कर उपन्यास बनाया जा सकता है। इस मत को कुछ आलोचक दूसरे शब्दों में कहते हैं कि-''एक ही चीज की कहानी लघु-संस्करण है और उपन्यास वृहद् संस्करण। यह तुलनात्मक कथन केवल आकार को आधार मानकर कहा गया है। यदि इस तथ्य को माने तो कहानी और उपन्यास के बीच तात्विक भेद समाप्त हो जाता है और इन्हें दो स्वतंत्र विधा कहना गलत होगा। परन्तु वास्तविकता यह है कि आज कहानी और उपन्यास कलागत समानता रखते हुए भी एक-दूसरे से पूर्णतः भिन्न विधाएं मानी गई हैं।

इस इकाई में हम कथा साहित्य की दोनों विधाओं कहानी और उपन्यास के बीच स्थित अन्तर को विभिन्न साहित्यिकारों की दृष्टि से जानेंगे और उनका तुलनात्मक अध्ययन करेंगे।

6.2 उद्देश्य

यह पाठ्यक्रम के द्वितीय खण्ड की छठवीं इकाई है। इससे पहले की इकाईयों में आपको उपन्यास और कहानी के स्वरूप, अर्थ-परिभाषा भेद एवं तत्त्वों से परिचित कराया गया है। इस इकाई में आप उपन्यास एवं कहानी के अन्तर को पढ़ेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- उपन्यास और कहानी का अन्तर बता सकेंगे।
- उपन्यास और कहानी के तत्त्वों को अधिक समझ सकेंगे।
- उपन्यास एवं कहानी की विशेषताओं को बता सकेंगे।
- साहित्य में दोनों के स्वतंत्र योगदान को स्पष्ट कर सकेंगे।

6.3 उपन्यास और कहानी का अन्तर

इससे पहले की इकाईयों में कहानी और उपन्यास के बारे में विस्तार से हम चर्चा कर चुके हैं। जिसे आप समझ गए होंगे। इस इकाई में हम दोनों विधाओं की विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए उपन्यास और कहानी के बीच स्थित अन्तर को दर्शायेंगे।

आज कहानी और उपन्यास हिन्दी कथा-साहित्य के महत्वपूर्ण अंग हैं। संस्कृत के आचार्यो ने कथा के अनेक रूपों का वर्णन किया है, साथ ही उनका तात्विक विवेचन भी किया है। पश्चिम के साहित्यकारों ने भी रोमांस को आधार बनाकर इसे गद्य में लिखा गया महाकाव्य माना है। उपन्यास और कहानी दोनों में ही ‘कथा’ तत्व विद्यमान रहता है। अतः प्रारम्भ में लोगों की धारणा थी कि कहानी और उपन्यास में केवल आकारगत भेद है। यह धारणा अब निर्मूल हो चुकी है क्योंकि कभी-कभी एक लघु उपन्यास से कहानी का कथा-विस्तार अधिक होता है। ज्यों-ज्यों कहानी की शिल्पविधि का विकास होता गया, उपन्यास से उसका पार्थक्य भी स्पष्ट झलकने लगा। पश्चिम के प्रसिद्ध आलोचक हडसन ने कहानी को उपन्यास का आने वाला रूप कहकर उपन्यास और कहानी के बीच अभेदता को दर्शाया था। वस्तुतः कहानी और उपन्यास में आकार-प्रकार का भेद तो है ही, इसके साथ ही उनकी विषयवस्तु, शिल्प और शैली में भी इस भेद को स्पष्ट देखा जा सकता है। कहानी कहानी है और उपन्यास उपन्यास। यहाँ पर इस कथन के प्रमाण में कुछ कथाकार, मनीषियों, चिन्तक एवं आलोचकों के विचारों को प्रस्तुत कर रहे हैं, जिन्होंने कहानी और उपन्यास के पृथक-पृथक अस्तित्व को स्वीकार किया है।

उपन्यास सम्राट एवं सशक्त कहानीकार मुंशी प्रेमचंद ने कहानी और उपन्यास के अन्तर को इन शब्दों में स्वीकार किया है- “कहानी (गल्प) एक ऐसी रचना है, जिसमें जीवन के किसी अंश या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विन्यास सब उसी भाव की पुष्टि करते हैं। उपन्यास की भाँति उसमें मानव-जीवन का सम्पूर्ण तथा वृहत् रूप दिखाने का प्रयास नहीं किया जाता और न उसमें उपन्यास की भाँति सभी रसों का सम्मिश्रण होता है। वह ऐसा रमणीय उद्यान नहीं, जिसमें भाँति-भाँति के

फूल, बेल-बूटे सजे हुए हैं, बल्कि एक गमला है, जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रूप में दृष्टिगोचर होता है।"

हजारी प्रसाद द्विवेद्वी के अनुसार, "उपन्यास शाखा-प्रशाखा वाला एक विशाल वृक्ष है, जबकि कहानी एक सुकुमार लता।"

डॉ. श्याम सुन्दर दास इस संबंध में कहते हैं कि ''यह बालिका जो गल्प कहलाती है, उपन्यास की ही औसत जात है, किन्तु कुछ समय से वह अपने पितृ गृह में निवास नहीं करती, उसने नवीन कुल मर्यादा को ग्रहण कर लिया है।''

डॉ. गुलाबराय इन दोनों के अन्तर को स्पष्ट करते हुए कहते हैं-''कहानी अपने पुराने रूप में उपन्यास की अग्रजा है और नये रूप में उसकी अनुजा। कहानी की एकतथ्यता ही उसका जीवन-रस है और वही उसे उपन्यास से पृथक करता है।''

यद्यपि दोनों ही कलात्मक ढंग से मानव-जीवन पर प्रकाश डालते हैं और दोनों के तत्व समान हैं, फिर भी इनमें पर्याप्त अन्तर है। आगे उपन्यास और कहानी के अन्तर पर बिन्दुवार विचार किया जा रहा है -

- कहानी जीवन की एक झलक मात्र प्रस्तुत करती है जबकि उपन्यास सम्पूर्ण जीवन का विशाल और व्यापक चित्र प्रस्तुत करता है। उदाहरणार्थ: प्रेमचन्द की कहानी 'पूस की रात' और उपन्यास 'गोदान' किसान की दयनीय स्थिति पर आधारित है, किन्तु कहानी में खेतिहर हल्कू के जीवन की केवल एक रात का चित्रण है जबकि उपन्यास में होरी के पूरे जीवन और उससे जुड़े जरूरी घटनाओं का चित्र प्रस्तुत किया है।
- कहानी के लिए संक्षिप्तता और संकेतात्मकता आवश्यक तत्व हैं। उपन्यासकार के लिए विवरणपूर्ण, विशद और व्याख्यापूर्ण शैली आवश्यक है।
- कहानीकार एक भाव या प्रभाव-विशेष का चित्रण करता है। उपन्यास पूरी परिस्थिति और गतिशील जीवन की निवृत्ति करता है।
- कहानी में प्रासंगिक कथाओं का अवसर नहीं होता। उपन्यास में प्रासंगिक कथाओं का संगठन आधिकारिक कथा की सपाटता को दूर करने तथा वर्णन में विविधता लाने के लिए आवश्यक होता है। उपन्यास में एक साथ एक से अधिक प्रासंगिक एवं अवान्तर कथाएं विषय और व्यक्ति से सम्बद्ध अन्य घटनाओं के रूप में प्रसंगवश जोड़ी जा सकती हैं। उदाहरणार्थ यदि भगवान श्री राम के जीवन पर उपन्यास लिखा गया तब रावण, हनुमान, अहिल्या, शबरी एवं बाली इत्यादि की कथाएं स्वतः ही जुड़ जाती हैं।
- कहानी में थोड़े समय में महत्त्वपूर्ण बात कहनी होती है। अतः कला की सूक्ष्मता इसमें आवश्यक होती है और वह एक भाव-विशेष का ही चित्रण करने का प्रयास करती है। उपन्यास में सूक्ष्म कला की आवश्यकता नहीं होती वरन इसके लिए लेखक में व्यापक, उदात्त दृष्टिकोण, भाव, रस और परिस्थिति के समग्र रूप में चित्रण की सामर्थ्य आवश्यक है। रस एंव भावों के विविध रूपों का समावेश उपन्यास में हो सकता है।

उदाहरणार्थ गोदान में प्रेम, घृणा, ईर्ष्या, दुख इत्यादि भावों के साथ ही नगरीय एंव ग्रामीण जीवन के समस्त चित्र एक साथ उकेरे गए हैं। होरी के माध्यम से जहाँ ग्रामीण जीवन को दिखाया गया है वहीं उसके पुत्र गोबर के माध्यम से शहरी जीवन का चित्रण भी कुशलता से किया गया है।

- कहानी द्वारा हल्का मनोरंजन ही प्रायः सम्पादित हो पाता है। उपन्यास परिस्थिति और पात्र के पूर्ण चित्रण द्वारा हृदय-मंथन और मनः संस्कार भी करता है। अर्थात उपन्यास में जीवन के विभिन्न पक्षों का चित्रण गभीरतापूर्वक किया जाता है जबकि कहानी विशेष उद्देश्य के लिए या हल्के मनोरंजन के लिए भी रची जा सकती है।
- कहानी में इतिवृत्तात्मकता और अतिशय कल्पना के लिए स्थान नहीं होता। उपन्यास में इतिवृत्तात्मक विवरण पर्याप्त मात्रा में होते हैं, कल्पना का व्यापक प्रसार भी हो सकता है।
- कहानी में चरित्र की झलक रहती है अर्थात चरित्र का उद्घाटन किया जाता है। उपन्यास में चरित्र की झाँकी होती है अर्थात चरित्र को विकसित किया जाता है।
- कहानी में चरित्र-चित्रण की अभिनयात्मक शैली अपनाई जाती है। उपन्यास में चरित्र-चित्रण की विश्लेषात्मक शैली अपनाई जाती है।
- कहानी का आकार छोटा होता है। उपन्यास का आकार कथा-विस्तार के अनुरूप विस्तृत हो सकता है। इसी कारण कई बार उपन्यास नीरस हो जाता है जबकि छोटे आकार के कारण कहानी रोचकता लिए होती है। 'अज्ञेय' का उपन्यास 'शेखर एक जीवनी' में कथा-विस्तार इतना व्यापक है कि उसे दो भागों में लिखा गया है।
- कहानी में पात्रों की संख्या कम होती है, कई बार एक पात्र ही सम्पूर्ण कहानी का कर्ता होता है। उपन्यास में पात्रों की संख्या अधिक होती है एंव मुख्य पात्र के अतिरिक्त अन्य पात्र भी घटना को आगे बढ़ाते हैं।
- कहानी का चरम सीमा के साथ सीधा सम्बन्ध होता है। उपन्यास चरम सीमा की ओर धीरे-धीरे बढ़ता है।

उपन्यास और कहानी के विषय में उपर्युक्त विवेचन को और अधिक स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं- उपन्यास का गौरव जीवन की समग्रता में है, कहानी का संक्षिप्तता में। कहानी में एकपन है-एक घटना, जीवन का एक पक्ष, संवेदना का एक बिन्दु, एक भाव एक उद्देश्य। उपन्यास में बहुविविधता है, अनेकता है।

उपन्यास में प्रासंगिक और अवांतर कथाएं मुख्य कथा को पुष्ट करती हैं। कहानी में प्रायः इनके लिए अवकाश नहीं रहता। इसी तरह कहानी में सीमित पात्र भी होते हैं, उपन्यास में अनेक। माना जाता है कि कहानी में मूलतः एक ही पात्र होता है, अन्य पात्र तो उसके सहायक होते हैं।

अभ्यास प्रश्न

अब आप निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए और अपने उत्तर को इकाई के अन्त में दिये गए उत्तर से मिलाकर देखिए कि आपका उत्तर सही है या नहीं।

1- नीचे कुछ कथन दिये गए हैं, वे सही है या गलत। बताइए।

क) कहानी में किसी घटना को संक्षिप्त रूप में कहा जाता है।

ख) कहानी में प्रासंगिक और अवांतर कथाएं मुख्य कथा को पुष्ट करती हैं।

ग) उपन्यास में एकपन होता है।

घ) कहानी में प्रासंगिक कथाओं का अवसर नहीं होता।

ड़) कहानी में बहुविविधता है, अनेकता है।

2- रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

क) कहानी में .... की झलक रहती है।

ख) उपन्यास में ....मुख्य कथा को पुष्ट करती हैं।

ग) कहानी की .... ही उसका जीवन-रस है।

घ) उपन्यास का स्वरूप ....के समान होता है।

ड़) कहानी का स्वरूप ....के समान होता है।

च) उपन्यास में चरित्र-चित्रण की ....शैली अपनाई जाती है।

छ) कहानी में चरित्र-चित्रण की ....शैली अपनाई जाती है।

3- नीचे कुछ कथन दिये गए है, बताइए वे किसके द्वारा कहे गए है-

क) ''यह बालिका जो गल्प कहलाती है, उपन्यास की ही औसत जात है, किन्तु कुछ समय से वह अपने पितृ गृह में निवास नहीं करती, उसने नवीन कुल ग्रहण कर लिया है।''

ख) "उपन्यास एक शाखा-प्रशाखा वाला विशाल वृक्ष हैं, जबकि कहानी एक सुकुमार लता।"

4- मुंशी प्रेमचंद की कहानी और उपन्यास में अन्तर संबंधी अवधारणा लिखिए।

....

....

....

....

5- कहानी और उपन्यास में निहित मूलभूत अन्तर बताइए। उत्तर दस पंक्तियों में दीजिए।

....

....

....

....

6.4 सारांश

- उपन्यास और कहानी कथा-साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है। तथा हिन्दी में इनका पदार्पण पाश्चात्य प्रभाव से हुआ।
- कहानी में 'प्रभावान्विति' प्रमुख होती है, क्योंकि विषय के एकत्व के साथ कहानी में प्रभावों की एकता का होना भी बहुत आवश्यक हैं। उपन्यास में प्रभावान्विति प्रायः नहीं पाई जाती।
- कहानी में कथानक आवश्यक नहीं होता। कथानक हो भी सकता है, और नहीं भी। उपन्यास में कथानक अनिवार्य रूप से होता है।
- उपन्यास चरम सीमा की ओर धीरे-धीरे बढ़ता है और कहानी का चरम सीमा से सीधा संबन्ध होता है।

6.5 शब्दावली

- तात्विक - आधार, मूलभूत बातों पर विशेष ध्यान दिया गया हो
- इतिवृत्तात्मक - घटनाओं का कालक्रम से किया गया वर्णन।
- अतिशय - जरूरत से ज्यादा करना या होना।
- माधुर्य - वाणी यानि भाषा में मधुरता, मीठा बोलना।
- अग्रजा - जो पहले जन्मी हो (बड़ी बहिन)।
- अनुजा - जिसका जन्म बाद में हुआ हो (छोटी बहिन)।
- संक्षिप्तता - कम शब्दों में आवश्यक बात कहना।
- संकेतात्मकता - कथ्य को संकेतों के रूप में कहना।

6.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. क) सही ख) गलत ग) गलत घ) सही ड़) गलत।
2. क) चरित्र ख) प्रासंगिक कथाएं ग) एकतथ्यता घ) गीतिकाव्य ड़) महाकाव्य च) विश्लेषात्मक छ) अभिनयात्मक।
3. क) डॉ. श्याम सुन्दर दास ख) हजारी प्रसाद द्विवेद्वी।
4. अपने उत्तर को 6.2 से मिलाइए।
5. अपने उत्तर को 6.2 से मिलाइए।

6.7 संदर्भ ग्रन्थ सूची

1- हिन्दी साहित्य कोश (भाग 1), संपा0 डॉ. वर्मा एवं भारती (2000), ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी।

2- राणा, डॉ. बलराज सिंह (1978), उपन्यासकार जैनेन्द्र के पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, संजय प्रकाशन, दिल्ली।

3- शर्मा, राजनाथ, (1987, 20 संस्करण) साहित्यिक निबन्ध, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

4- गुप्त, डॉ. सुरेशचन्द्र, (1967) ''उपन्यास का स्वरूप'', आदर्श हिन्दी निबन्ध यंग मैन एण्ड कम्पनी, दिल्ली-6।

5- पाल, डॉ. विजय, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र, जयभारती प्रकाशन, दिल्ली।

6- राय, बाबू गुलाब, (2007, 51 संस्करण) हिन्दी साहित्य का इतिहास, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।

7- बाला, डॉ. कु0 शैल, (1973) हिन्दी उपन्यास का प्रारम्भिक विकास, सत्य सदन, बाराबंकी।

8- संपा0 प्रो0 हरिमोहन, (2002) ग्यारह कहानियॉं, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

9- मोहन, डॉ. सविता, (1990) समकालीन कहानी कथ्य एवं शिल्प, ग्रन्थायन, अलीगढ़।

6.8 निबन्धात्मक प्रश्न

1. उपन्यास एवं कहानी के साम्य एवं वैषम्य पर प्रकाश डालिए।

इकाई 7 - उसने कहा था : पाठ एवं विवेचन

इकाई की रूपरेखा

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 जीवनी/व्यक्तित्व

7.3.1 कृतित्व –वस्तु पक्ष

7.3.2 भाषा शैली

7.4 'उसने कहा था' : परिचय

7.5 कहानी की विशेषता

7.6 सारांश

7.7 शब्दावली

7.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

7.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

7.10 निबंधात्मक प्रश्न

7.1 प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के इतिहास में चंद्रधर शर्मा गुलेरी का नाम विशिष्ट प्रयोजन में प्रयुक्त होता है। आप लोग इस इकाई में गुलेरी जी की साहित्य साधना एवं उनके जीवन परिचय से अवगत होंगे। चंद्रधर शर्मा गुलेरी बहुमुखी प्रतिभा के लेखक थे। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो वे प्रेमचंद और महाकवि जयशंकर प्रसाद के समकालीन थे। प्रसिद्ध समालोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने गुलेरी जी को 'अमर कथा शिल्पी' की संज्ञा से विभूषित किया है। वास्तव में हिन्दी के साधारण पाठक गुलेरी जी को 'उसने कहा था' जैसी अमर कहानी के लेखक के रूप में ही जानते हैं। जो पाठक तनिक अधिक जिज्ञासु और सचेत हैं उनकी नजर में वे 'कछुआ धर्म' और 'मारेसि मोहि कुठाऊँ' जैसे निबंधों के प्रतिभाशाली लेखक हैं। 'साहित्य के इतिहास' नामक प्रसिद्ध ग्रंथ में शुक्ल जी ने श्री चंद्रधर शर्मा को संस्कृत के प्रकांड प्रतिभाशाली विद्वान के बतौर याद किया है। गुलेरी जी के पांडित्य और प्रतिभा को देखते हुए संभवतया पं. पद्म सिंह शर्मा जी की यह शिकायत बेवजह नहीं लगती कि गुलेरी जी ने अपेक्षा के अनुरूप नहीं लिखा अर्थात कम लिखा। ध्यान देने योग्य तथ्य यहाँ यह है कि केवल 39 वर्ष की थोड़ी-सी उम्र में उन्होंने जितना कुछ लिखा वह इतना स्वल्प भी नहीं है कि गुलेरी जी का मूल्याँकन केवल अनुमान या संभावना के आधार पर किया जाए।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप बता सकेंगे कि –

- हिन्दी साहित्य के संपूर्ण इतिहास में व्याप्त चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की साहित्यिक प्रतिभा के महत्त्व को जान सकेंगे?
- ''उसने कहा था'' कहानी के महत्व से परिचित हो सकेंगे।
- कहानी की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।
- चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन श्रेणीबद्ध ढंग से कर सकेंगे।

7.3 जीवनी/व्यक्तित्व

मूलतः हिमाचल प्रदेश के गुलेर गाँव के वासी ज्योतिर्विद महामहोपाध्याय पंडित शिवराम शास्त्री राजसम्मान पाकर जयपुर (राजस्थान) में बस गए थे। उनकी तीसरी पत्नी लक्ष्मीदेवी ने सन् 1883 में चन्द्रधर को जन्म दिया। घर में बालक को संस्कृत भाषा, वेद, पुराण आदि के अध्ययन, पूजा-पाठ, संध्या-वंदन तथा धार्मिक कर्मकाण्ड का वातावरण मिला और मेधावी चन्द्रधर ने इन सभी संस्कारों और विद्याओं को आत्मसात् किया। आगे चलकर उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा भी प्राप्त की और प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते रहे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम.ए. (प्रथम श्रेणी में और प्रयाग विश्वविद्यालय से बी. ए. (प्रथम श्रेणी में) करने के बाद चाहते हुए भी वे आगे की पढ़ाई परिस्थितिवश जारी न रख पाए। हालाँकि उनके स्वाध्याय और लेखन का क्रम अबाध रूप से चलता रहा। बीस वर्ष की उम्र के पहले ही उन्हें जयपुर की वेधशाला के जीर्णोद्धार तथा उससे सम्बन्धित शोधकार्य के लिए गठित मण्डल में चुन लिया गया था और कैप्टन गैरेट के साथ मिलकर उन्होंने ''जयपुर ऑब्जरवेटरी एण्ड इट्स बिल्डर्स'' शीर्षक अँग्रेजी ग्रन्थ की रचना की।

अपने अध्ययन काल में ही उन्होंने सन् 1900 में जयपुर में नगरी मंच की स्थापना में योग दिया और सन् 1902 से मासिक पत्र 'समालोचक' के सम्पादन का भार भी सँभाला। प्रसंगवश कुछ वर्ष काशी की नागरी प्रचारिणी सभा के सम्पादक मंडल में भी उन्हें सम्मिलित किया गया। उन्होंने देवी प्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला और सूर्य कुमारी पुस्तकमाला का सम्पादन किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने नागरी प्रचारिणी पुस्तकमाला का सम्पादन किया। वे नागरी प्रचारिणी सभा के सभापति भी रहे।

जयपुर के राजपण्डित के कुल में जन्म लेनेवाले गुलेरी जी का राजवंशों से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। वे पहले खेतड़ी नरेश जयसिंह के और फिर जयपुर राज्य के सामन्त-पुत्रों के अजमेर के मेयो कॉलेज में अध्ययन के दौरान उनके अभिभावक रहे। सन् 1916 में उन्होंने मेयो कॉलेज में ही संस्कृत विभाग के अध्यक्ष का पद सँभाला। सन् 1920 में पं. मदन मोहन मालवीय के आग्रह के कारण उन्होंने बनारस आकर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राच्यविद्या विभाग के

प्राचार्य और फिर 1922 में प्राचीन इतिहास और धर्म से सम्बद्ध मनीन्द्र चन्द्र नन्दी पीठ के आचार्य का कार्यभार भी ग्रहण किया। इस बीच परिवार में अनेक दुखद घटनाओं के आघात भी उन्हें झेलने पड़े। सन् 1922 में 12 सितम्बर को पीलिया के बाद तेज बुख़ार से मात्र 39 वर्ष की आयु में उनका देहावसान हो गया।

7.3.1 कृतित्व – वस्तु पक्ष :-

इस थोड़ी-सी आयु में ही गुलेरी जी ने अध्ययन और स्वाध्याय के द्वारा हिन्दी और अँग्रेजी के अतिरिक्त संस्कृत, प्राकृत, बांग्ला, मराठी आदि का ही नहीं जर्मन तथा फ्रेंच भाषाओं का भी ज्ञान हासिल किया था। उनकी रुचि का क्षेत्र भी बहुत विस्तृत था और धर्म, ज्योतिष इतिहास, पुरातत्त्व, दर्शन भाषाविज्ञान शिक्षाशास्त्र और साहित्य से लेकर संगीत, चित्रकला, लोककला, विज्ञान और राजनीति तथा समसामयिक सामाजिक स्थिति तथा रीति-नीति तक फैला हुआ था। उनकी अभिरुचि और सोच को गढ़ने में स्पष्ट ही इस विस्तृत पटभूमि का प्रमुख हाथ था और इसका परिचय उनके लेखन की विषयवस्तु और उनके दृष्टिकोण में बराबर मिलता रहता है।

पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के साथ एक बहुत बड़ी विडम्बना यह है कि उनके अध्ययन, ज्ञान और रुचि का क्षेत्र हालाँकि बेहद विस्तृत था और उनकी प्रतिभा का प्रसार भी अनेक कृतियों, कृतिरूपों और विधाओं में हुआ था, किन्तु आम हिन्दी पाठक ही नहीं, विद्वानों का एक बड़ा वर्ग भी उन्हें अमर कहानी 'उसने कहा था' के रचनाकार के रूप में ही पहचानता है। इस कहानी की प्रखर चकाचौंध ने उनके बाकी वैविध्य भरे सशक्त कृति संसार को मानों ग्रस लिया है। प्राचीन साहित्य, संस्कृति, हिन्दी भाषा, समकालीन समाज, राजनीति आदि विषयों से जुड़ी इनकी विद्वता का जिक्र यदा-कदा होता रहता है, पर 'कछुआ धरम' और 'मारेसि मोहि कुठाऊँ' जैसे एक दो निबन्धों और 'पुरानी हिन्दी' जैसी लेखमाला के उल्लेख को छोड़कर उस विद्वता की बानगी आम पाठक तक शायद ही पहुँची हो। व्यापक हिन्दी समाज उनकी प्रकाण्ड विद्वता और सर्जनात्मक प्रतिभा से लगभग अनजान है।

अपने 39 वर्ष के संक्षिप्त जीवनकाल में गुलेरी जी ने किसी स्वतन्त्र ग्रन्थ की रचना तो नहीं कि किन्तु फुटकर रूप में बहुत लिखा, अनगिनत विषयों पर लिखा और अनेक विधाओं की विशेषताओं और रूपों को समेटते-समंजित करते हुए लिखा। उनके लेखन का एक बड़ा हिस्सा जहाँ विशुद्ध अकादमिक अथवा शोधपरक है, उनकी शास्त्रज्ञता तथा पाण्डित्य का परिचायक है; वहीं, उससे भी बड़ा हिस्सा उनके खुले दिमाग, मानवतावादी दृष्टि और समकालीन समाज, धर्म राजनीति आदि से गहन सरोकार का परिचय देता है। लोक से यह सरोकार उनकी 'पुरानी हिन्दी' जैसी अकादमिक और 'महर्षि च्यवन का रामायण' जैसी शोधपरक रचनाओं तक में दिखाई देता है। इन बातों के अतिरिक्त गुलेरी जी के विचारों की आधुनिकता भी हमसे आज उनके पुनराविष्कार की माँग करती है।

विषय-वस्तु की व्यापकता की दृष्टि से गुलेरी जी का लेखन धर्म पुरातत्त्व, इतिहास और भाषाशास्त्र जैसे गम्भीर विषयों से लेकर 'काशी की नींद' जैसे हलके-फुलके विषयों तक को

समान भाव से समेटता है। विषयों का इतना वैविध्य लेखक के अध्ययन, अभिरुचि और ज्ञान के विस्तार की गवाही देता है, तो हर विषय पर इतनी गहराई से समकालीन परिप्रेक्ष्य में विचार अपने समय और नए विचारों के प्रति उसकी सजगता को रेखांकित करता है। राज ज्योतिषी के परिवार में जन्मे, हिन्दू धर्म के तमाम कर्मकाण्डों में विधिवत् दीक्षित, त्रिपुण्डधारी निष्ठावान ब्राह्मण की छवि से यह रूढ़िभंजक यथार्थ शायद मेल नहीं खाता, मगर उस सामाजिक-राजनीतिक-साहित्यिक उत्तेजना के काल में उनका प्रतिगामी रुढ़ियों के खिलाफ आवाज उठाना स्वाभाविक ही था। यह याद रखना जरूरी है कि वे रूढ़ियों के विरोध के नाम पर केवल आँख मूँदकर तलवार नहीं भाँजते। खण्डन के साथ ही वे उचित और उपयुक्त का मंडन भी करते हैं। किन्तु धर्म, समाज, राजनीति और साहित्य में उन्हें जहाँ कहीं भी पाखण्ड या अनौचित्य नजर आता है, उस पर वे जमकर प्रहार करते हैं। इस क्रम में उनकी वैचारिक पारदर्शिता, गहराई और दूरदर्शिता इसी बात से सिद्ध है कि उनके उठाए हुए अधिकतर मुद्दे और उनकी आलोचना आज भी प्रासंगिक हैं।

उनके लेखन की रोचकता उसकी प्रासंगिकता के अतिरिक्त उसकी प्रस्तुति की अनोखी भंगिमा में भी निहित है। उस युग के कई अन्य निबन्धकारों की तरह गुलेरी जी के लेखन में भी मस्ती तथा विनोद भाव की एक अन्तर्धारा लगातार प्रवाहित होती रहती है। धर्मसिद्धान्त, आध्यात्म आदि जैसे कुछ एक गम्भीर विषयों को छोड़कर लगभग हर विषय के लेखन में यह विनोद भाव प्रसंगों के चुनाव में, भाषा के मुहावरों में, उद्धरणों और उक्तियों में बराबर झंकृत रहता है। जहाँ आलोचना कुछ अधिक भेदक होती है, वहाँ यह विनोद व्यंग्य में बदल जाता है- जैसे शिक्षा, सामाजिक रूढ़ियों तथा राजनीति सम्बन्धी लेखों में। इससे गुलेरी जी की रचनाएँ कभी गुदगुदाकर, कभी झकझोरकर पाठक की रुचि को बाँधे रहती हैं।

मात्र 39 वर्ष की जीवन-अवधि को देखते हुए गुलेरी जी के लेखन का परिमाण और उनकी विषय-वस्तु तथा विधाओं का वैविध्य सचमुच विस्मयकर है। उनकी रचनाओं में कहानियाँ, कथाएँ, आख्यान, ललित निबन्ध, गम्भीर विषयों पर विवेचनात्मक निबन्ध, शोधपत्र, समीक्षाएँ, सम्पादकीय टिप्पणियाँ, पत्र विधा में लिखी टिप्पणियाँ, समकालीन साहित्य- समाज, राजनीति, धर्म, विज्ञान, कला आदि पर लेख तथा वक्तव्य, वैदिक-पौराणिक साहित्य, पुरातत्त्व, भाषा आदि पर प्रबन्ध, लेख तथा टिप्पणियाँ-सभी शामिल हैं।

7.3.2 भाषा शैली :-

गुलेरी जी की शैली मुख्यतः वार्तालाप की शैली है जहाँ वे किस्साबयानी के लहज़े में मानों सीधे पाठक से मुख़ातिब होते हैं। यह साहित्यिक भाषा के रूप में खड़ी बोली को सँवरने का काल था। अतः शब्दावली और प्रयोगों के स्तर पर सामन्जस्य और परिमार्जन की कहीं-कहीं कमी भी नजर आती है। कहीं वे 'पृशिण', 'क्लृप्ति' और 'आग्मीध्र' जैसे अप्रचलित संस्कृत शब्दों का प्रयोग करते हैं तो कहीं 'बेर', 'बिछोड़ा' और 'पैंड़' जैसे ठेठ लोकभाषा के शब्दों का। अंग्रेजी, अरबी-फारसी आदि के शब्द ही नहीं पूरे-के-पूरे मुहावरे भी उनके लेखन में तत्सम या अनूदित रूप में चले आते हैं। भाषा के इस मिले-जुले रूप और बातचीत के लहजे से उनके

लेखन में एक अनौपचारिकता और आत्मीयता भी आ गई है। हाँ गुलेरी जी अपने लेखन में उद्धरण और उदाहरण बहुत देते हैं। इन उद्धरणों और उदाहरणों से आमतौर पर उनका कथ्य और अधिक स्पष्ट तथा रोचक हो उठता है पर कई जगह यह पाठक से उदाहरण की पृष्ठभूमि और प्रसंग के ज्ञान की माँग भी करता है। आम पाठक से प्राचीन भारतीय वाङ्मय, पश्चिमी साहित्य, इतिहास आदि के इतने ज्ञान की अपेक्षा करना ही गलत है। इसलिए यह अतिरिक्त 'प्रसंगगर्भत्व' उनके लेखन के सहज रसास्वाद में कहीं-कहीं अवश्य ही बाधक होता है।

गुलेरी की कहानी कुशलता का रहस्य यह है कि वह दुःख के तह तक जाकर दर्द की पड़ताल करते हैं। जिसका उदाहरण निम्नलिखित है- **रोती-रोती सूबेदारनी ओबरी में चली गई। लहना भी आँसू पोंछता हुआ बाहर आया।**

"वजीरा सिंह, पानी पिला" ... 'उसने कहा था।'

लहना का सिर अपनी गोद में रक्खे वजीरासिंह बैठा है। जब माँगता है, तब पानी पिला देता है। आध घण्टे तक लहना चुप रहा, फिर बोला, 'कौन! कीरतसिंह?'

वजीरा ने कुछ समझकर कहा, 'हाँ।'

'भइया, मुझे और ऊँचा कर ले। अपने पट्ट पर मेरा सिर रख ले।' वजीरा ने वैसे ही किया।

'हाँ, अब ठीक है। पानी पिला दे। बस, अब के हाड़ में यह आम खूब फलेगा। चाचा-भतीजा दोनों यहीं बैठ कर आम खाना। जितना बड़ा तेरा भतीजा है, उतना ही यह आम है। जिस महीने उसका जन्म हुआ था, उसी महीने में मैंने इसे लगाया था।'

वजीरासिंह के आँसू टप-टप टपक रहे थे।

बहरहाल गुलेरी जी की अभिव्यक्ति में कहीं भी जो भी कमियाँ रही हों, हिन्दी भाषा और शब्दावली के विकास में उनके सकारात्मक योगदान की उपेक्षा नहीं की जा सकती। वे खड़ी बोली का प्रयोग अनेक विषयों और अनेक प्रसंगों में कर रहे थे-शायद किसी भी अन्य समकालीन विद्वान से कहीं बढ़कर। साहित्य पुराण-प्रसंग इतिहास, विज्ञान, भाषाविज्ञान, पुरातत्त्व, धर्म, दर्शन, राजनीति, समाजशास्त्र आदि अनेक विषयों की वाहक उनकी भाषा स्वाभाविक रूप से ही अनेक प्रयुक्तियों और शैलियों के लिए गुंजाइश बना रही थी। वह विभिन्न विषयों को अभिव्यक्त करने में हिन्दी की सक्षमता का जीवन्त प्रमाण है। हर सन्दर्भ में उनकी भाषा आत्मीय तथा सजीव रहती है, भले ही कहीं-कहीं वह अधिक जटिल या अधिक हल्की क्यों न हो जाती हो। गुलेरी जी की भाषा और शैली उनके विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम मात्र नहीं थी। वह युग-सन्धि पर खड़े एक विवेकी मानस का और उस युग की मानसिकता का भी प्रामाणिक दस्तावेज है। इसी ओर इंगित करते हुए प्रो. नामवर सिंह का भी कहना है, ''गुलेरी जी हिन्दी में सिर्फ एक नया गद्य या नयी शैली नहीं गढ़ रहे थे बल्कि वे वस्तुतः एक नयी चेतना का निर्माण कर रहे थे और यह नया गद्य नयी चेतना का सर्जनात्मक साधन है।''

अभ्यास प्रश्न

(1) रिक्त स्थान पूर्ति कीजिए –

1. उसने कहा था का प्रकाशन वर्ष................है।

2. गुलेरी जी ने..............पत्र का प्रकाशन किया।
3. ....उसने कहा था का नायक है।
4. ....उसने कहा था की नायिका है।
5. उसने कहा था कि पृष्ठभूमि..............प्रान्त की है।

7.4 उसने कहा था : परिचय

हिन्दी के निराले आराधक श्री चंद्रधर शर्मा गुलेरी की बेजोड़ कहानी 'उसने कहा था' सन् 1915 ई. में सरस्वती में प्रकाशित हुई थी। यों तो हिन्दी की पहली कहानी के रूप में इंशा अल्ला खां की कहानी 'रानी केतकी की कहानी' किशोरी लाल गोस्वामी की 'इंदुमती' और बंग महिला की 'दुलाई वाली' का नाम लिया जाता है। मगर कहानी की कसौटी पर खरा उतरने के कारण 'उसने कहा था' कहानी को ही हिंदी की पहली कहानी होने का गौरव प्राप्त है। हमारे यहाँ प्रेम पद्धति में पुरुष प्रेम का प्रस्ताव करता है और स्त्री स्वीकृति देकर उसे कृतकृत्य बनाती है। इस क्रिया व्यापार में नारी अपनी सलज्जता और गरिमा बनाए रखती है और पुरुष उसे संरक्षण देने में पौरुष की अनुभूति करता है। पुरुष के इसी पौरुषपूर्ण साहसिक प्रयत्न की ओर ही बहुधा नारी आकर्षित होती है। श्री चंद्रशेखर शर्मा गुलेरी जी ने भारतीय प्रेम पद्धति के परंपरागत रूप को 'उसने कहा था' कहानी में अक्षुण्ण बनाए रखा है। इस कहानी में प्रेम का स्वरूप किशोरावस्था के प्रथम दर्शन से आरंभ होकर क्रमशः विकसित होकर संयोगावस्था में पूर्णता न प्राप्त कर वियोगावस्था (त्रासदी) में पूर्ण होता है। अमृतसर के बाजार में एक लड़का और लड़की मिलते हैं। लड़का लड़की से पहला सवाल करता है, 'तेरी कुड़माई हो गई?' और लड़की के नकारात्मक उत्तर पर प्रसन्न हो दूसरे-तीसरे दिन भी यह प्रश्न दोहरा देता है, पर यकायक एक दिन उम्मीद के विपरीत जब लड़के को पता चलता है कि उसकी कुड़माई हो गई है तो वह इस अप्रत्याशित जवाब से क्षुब्ध हो कई ऊल-जुलूल काम कर बैठता है। तीव्र मन से लहना सिंह आघात महसूसते हुए क्या-क्या सोचने-करने लगता है, निज चेतन एवं उपचेतन तथा अचेतन मन की विभिन्न परतों को खोल देने वाला वर्णन गुलेरी जी ने 20वीं सदी के शुरुआती काल में किया है, वह सचमुच इंसानी मन के चेतन उप-चेतन तथा अचेतन मन की विभिन्न परतों को खोल देने वाला ही है। गुलेरी जी के चरित्र चित्रण की ऐसी अनूठी मनोवैज्ञानिकता से पाठक आश्चर्यचकित रह जाता है। लहना सिंह अपने बचपन के प्रेम को पच्चीस साल बाद भी भुला नहीं पाता, तब लगता है सूरदास के 'लरिकाई कौ प्रेम कहौ अलि कैसे छूटत' वाली उक्त अक्षरशः सत्यापित होती है। संभवतः ऐसे अनूठे भावों के सुंदर सुदृढ़ गुंफन के कारण 'उसने कहा था' कहानी ख्याति स्तंभ कहानी बन गई और हिन्दी के समूचे कहानी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए हुए है। इस कहानी में शाश्वत मानव मनोभाव कथ्य का आधार बने हैं।

7.5 कहानी की विशेषता

कहानी की विशेषता यह है कि आम पाठक जिज्ञासु बनकर घटनाओं के प्रति उत्सुक बना रहता है। ''किसने कहा था'', ''क्या कहा था'' और ''क्यों कहा था''। यही तो कहानी के मूल तथ्य से जुड़ा दुर्लभ संवेदन है जो घटनाचक्र के साथ पाठक को दृढ़ता से जोड़े रखता है और उसकी जिज्ञासु प्रवृत्ति को विकसित करता है। बेशक, इस कहानी में दूसरे और पात्र भी हैं, मगर कथ्य की मूल आत्मा केवल लहना सिंह और सूबेदारनी में ही अधिक संवेदित दिखायी देती है। दोनों के मध्य एक ऐसी प्रेम कहानी अपना ताना-बाना बुनती है, जो लहना सिंह के जीवन को आदर्शवादी मूल्यों का नशेमन (नीड़) बना देता है। एक ऐसा अनुपम पात्र जो देखने-सुनने एवं पढ़ने वालों के लिए अनुकरणीय और आदरणीय तो है ही आह्लादक भी लगता है और कहानी मानवीय शाश्वत भावों को प्रकाशित करने वाली कर्तव्य एवं त्याग (बलिदान) की कहानी सिद्ध होती है। इसमें नायक-नायिका (सूबेदारनी)के मधुर रागात्मक मिलन की क्षणिक चमक दोनों के संपूर्ण जीवन तथा व्यक्तित्व को आलोकित करती है - उसने कहा था ? इस कथन को युद्ध क्षेत्र में पड़ा लहना सिंह 25 वर्ष बीत जाने पर भी भूलता नहीं है। वरन् यह उसके लिए प्रेरक शक्ति सिद्ध होती है। उसके आत्मोत्सर्ग त्याग, बलिदान का कारण बनता है। एक मायने में लहना सिंह प्रेम के लिए ही बलिदान करता है।

देश और प्रेम के प्रति कर्तव्य की भावना 'उसने कहा था' कहानी की मूल थीम है। जीवन के अंतिम क्षण में 'कुड़माई' से लेकर 'उसने कहा था' तक तमाम स्मृतियाँ अपना आकार लेती हुई लहना सिंह की आँखों में सपना बनकर तैरती हैं। वजीरा सिंह उसे पानी पिलाता है... लहना सिंह को यों प्रतीत होता है मानों पानी के उस घूँट के साथ जुड़कर अतीत का प्रेम अपार सुख संतोष उसमें अपने आप भर गया हो। कर्तव्य बोध के शिकंजे में कसती जा रही घायल लहना सिंह की जिंदगी का एक-एक क्षण उत्सर्ग की भावना से ओत-प्रोत होकर सच्चे प्रेम का साक्ष्य बन जाता है। या यूं कहें कि घायल शरीर से रिस रहे उसके लहू की एक-एक बूंद सूबेदारनी की माँग के सिंदूर को धूमिल होने और आँचल के दूध को सूखने से बचाती है। अंतिम श्वास तक लहना सिंह की कर्तव्य परायणता जीवित रहती है और मरने के बाद उत्सर्ग से अनुप्राणित लहना सिंह का पावन प्रेम मंदिर की पूजा की भांति अत्यंत पावन बनकर लोकोत्तर आनंद एवं अप्रतिम सौंदर्य से दीप्तिमान हो उठता है। प्रेम की इस पवित्र परिणति में वासना की व्यग्रता तथा मादक चपलता से मुक्त लहना सिंह अमरत्व प्राप्त करता और इस तरह गुलेरी जी अविस्मरणीय बन जाते हैं।

''स्वप्न चल रहा है। सूबेदारनी कह रही है, 'मैंने तेरे को आते ही पहचान लिया। एक काम कहती हूँ। मेरे तो भाग फूट गए। सरकार ने बहादुरी का खिताब दिया है, लायलपुर में ज़मीन दी है, आज नमक-हलाली का मौका आया है।'' पर सरकार ने हम तीमियों की एक घंघरिया पल्टन क्यों न बना दी, जो मैं भी सूबेदार जी के साथ चली जाती? एक बेटा है। फौज में भर्ती हुए उसे एक ही बरस हुआ। उसके पीछे चार और हुए, पर एक भी नहीं जिया। सूबेदारनी रोने लगी। ''अब दोनों जाते हैं। मेरे भाग! तुम्हें याद है, एक दिन टाँगेवाले का घोड़ा दहीवाले की दूकान के

पास बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाये थे, आप घोड़े की लातों में चले गए थे, और मुझे उठा-कर दूकान के तख्ते पर खड़ा कर दिया था। ऐसे ही इन दोनों को बचाना। यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे आँचल पसारती हूँ।"

दो शब्द कहानी की भाषा-शैली पर भी कहना आवश्यक है। ध्यातव्य है कि 1915 ई. में कहानीकार इतने परिनिष्ठित गद्य का स्वरूप उपस्थित कर सकता है जो बहुत बाद तक की कहानी में भी दुर्लभ है। यदि भाषा में कथा की बयानी के लिए सहज चापल्य तथा जीवन-धर्मी गंध है तो चांदनी रात के वर्णन में एक गांभीर्य जहां चंद्रमा को क्षयी तथा हवा को बाणभट्ट की कादम्बरी में आये दन्तवीणोपदेशाचार्य की संज्ञा से परिचित कराया गया है। रोजमर्रा की बोलचाल के शब्दों, वाक्यांशों और वाक्यों तथा लोकगीत का प्रयोग भी कहानी को एक नयी धारा देता है। इस प्रकार अनेक दृष्टियों से "उसने कहा था" हिंदी ही नहीं, भारतीय भाषाओं की ही नहीं अपितु विश्व कहानी साहित्य की अमूल्य धरोहर है। क्या लहना सिंह और बालिका के प्रेम को प्रेम-रसराज श्रृंगार की सीमा का स्त्री-पुरुष के बीच जन्मा प्रेम कहा भी जा सकता है? मृत्यु के कुछ समय पहले लहना सिंह के मानस-पटल पर स्मृतियों की जो रील चल रही है उससे ज्ञात होता है कि अमृतसर की भीड़-भरी सड़कों पर जब बालक लहना सिंह और बालिका (सूबेदारनी) मिलते हैं तो लहना सिंह की उम्र बारह वर्ष है और बालिका की आठ वर्ष। ध्यातव्य है कि 1914-15 ई. का हमारा सामाजिक परिवेश ऐसा नहीं था जैसा आज का। आज के बालक-बालिका रेडियो, टी.वी. तथा अन्य प्रचार माध्यमों और उनके द्वारा परिवार-नियोजन के लिए चलायी जा रही मुहिम से यौन-संबंधों की जो जानकारी रखते हैं, उस समय उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। यह वह समय था जब अधिकतर युवाओं को स्त्री-पुरुष संबंधों का सही ज्ञान नहीं होता था। ऐसे समय में अपने मामा के यहां आया लड़का एक ही महीने में केवल दूसरे-तीसरे दिन कभी सब्जी वाले या दूध वाले के यहां उस बालिका से अकस्मात मिल जाता है तो यह साहचर्यजन्य सहज प्रीति उस प्रेम की संज्ञा तो नहीं पा सकती जिसका स्थायी भाव रति है। इसे बालपन की सहज प्रीति ही कहा जा सकता है जिसका पच्चीस वर्षो के समय तक शिथिल न पडने वाला वह तार यह संवाद है तेरी कुडमाई हो गई? और उत्तर का भोला धृष्ट धत् है। किंतु एक दिन धत् न सुन कर जब बालक लहना सिंह संभावना, आशा के विपरीत यह सुनता है हां, हो गई, कब?, कल, देखते नहीं यह रेशम से कढा हुआ सालू! तो उसकी दुनिया में उथल-पुथल मच जाती है, मानो उसके भाव जगत में एक तूफान आ जाता है, आग-सी लग जाती है।

गुलेरी की कहानी-कला अपने समय इस कहानी-कला से आगे की है। गुलेरी पर भी अपने समय का प्रभाव है-उसकी प्रचलित रूढ़ियों का साफ प्रभाव उनकी पहली कहानी ''सुखमय जीवन'' पर है। यह कहानी वैसी ही है जैसी उस दौर की अन्य कहानियां हैं। यह कहानी नहीं, वृत्तांत भर है-इसमें शिल्प और तकनीक का कोई मौलिक नवोन्मेष नहीं है। लेकिन उन्होंने अपनी अगली कहानी ''उसने कहा था'' में अपने समय को बहुत पीछे छोड़ दिया है। शिल्प और तकनीक का जो उत्कर्ष प्रेमचंद ने अपने जीवन के अंतिम चरण में 1936 ई. के आसपास ''कफन'' और ''पूस की रात'' में अर्जित की, गुलेरी ने इस कहानी में उसे 1915 ई.

में ही साध लिया। यह यों ही संभव नहीं हुआ। इसे संभव किया गुलेरी के असाधारण व्यक्तित्व ने। गुलेरी 1915 ई में महज 32 वर्ष के थे। युवा होने के कारण उनमें नवाचार का साहस था। उम्र-दराज आदमी जिस तरह की दुविधाओं और संकोचों से घिर जाता है, गुलेरी उनसे सर्वथा मुक्त थे। अंग्रेजी कहानी इस समय अपने विकास के शिखर पर थी और उसमें प्रयोगों की भी धूम थी, जिनसे गुलेरी बखूबी वाकिफ थे। कम लोगों को जानकारी है कि गुलेरी उपनिवेशकाल में अंग्रेजों द्वारा सामंतों की शिक्षा के लिए अजमेर में स्थापित विख्यात आधुनिक शिक्षण संस्थान मेयो कॉलेज में अध्यापक थे और आधुनिक अंग्रेजी साहित्य के अच्छे जानकार थे। दरअसल नवाचार के साहस और आधुनिक अंग्रेजी साहित्य की विशेषज्ञता के कारण ही गुलेरी अपने समय से आगे की कहानी लिख पाए। गुलेरी के कौतुहलपूर्ण कथोपकथन से कहानी की प्राण प्रतिष्ठा और भी शास्त्रोक्त हो जाती है-

'तेरे घर कहाँ है?'

'मगरे में; और तेरे?'

'माँझे में; यहाँ कहाँ रहती है?'

'अतरसिंह की बैठक में; वे मेरे मामा होते हैं।'

'मैं भी मामा के यहाँ आया हूँ, उनका घर गुरुबाज़ार में हैं।'

इतने में दुकानदार निबटा, और इनका सौदा देने लगा। सौदा लेकर दोनों साथ-साथ चले। कुछ दूर जा कर लड़के ने मुसकराकार पूछा, ''तेरी कुड़माई हो गई?''

इस पर लड़की कुछ आँखें चढ़ा कर 'धत्' कह कर दौड़ गई, और लड़का मुँह देखता रह गया।

7.6 सारांश

"उसने कहा था" का कथा-विन्यास अत्यंत विराट फलक पर किया गया है। कहानी जीवन के किसी प्रसंग विशेष, समस्या विशेष या चरित्र की किसी एक विशेषता को ही प्रकाशित करती है, उसके संक्षिप्त कलेवर में इससे अधिक की गुंजाइश नहीं होती है। किंतु यह कहानी लहना सिंह के चारित्रिक विकास में उसकी अनेक विशेषताओं को प्रकाशित करती हुई उसका संपूर्ण जीवन-वृत्त प्रस्तुत करती है, बारह वर्ष की अवस्था से लेकर प्रायः सैंतीस वर्ष, उसकी मृत्यु तक की कथा-नायक का संपूर्ण जीवन इस रूप में चित्रित होता है कि कहानी अपनी परंपरागत रूप-पद्धति (फॉर्म) को चुनौती देकर एक महाकाव्यात्मक औदात्य लिये हुए है। वस्तुत: पांच खण्डों में कसावट से बुनी गई यह कहानी सहज ही औपन्यासिक विस्तार से युक्त है किंतु अपनी कहन की कुशलता से कहानीकार इसे एक कहानी ही बनाये रखता है। दूसरे, तीसरे और चौखे खण्ड में विवेच्य कहानी में युद्ध-कला, सैन्य-विज्ञान (क्राफ्ट ऑफ वार) और खंदकों में सिपाहियों के रहने-सहने के ढंग का जितना प्रामाणिक, सूक्ष्म तथा जीवंत चित्रण इस कहानी में हुआ है, वैसा हिंदी कथा-साहित्य में विरल है। लहना सिंह जैसे सीधे-साधे सिपाही, जमादार लहना सिंह की प्रत्युपन्नमति, कार्य करने की फुर्ती, संकट के समय अपने साथियों का नेतृत्व,

जर्मन लपटैन (लेफ्टिनेंट) को बातों-बातों में बुद्धू बना कर उसकी असलियत जान लेना, यदि एक ओर इस चरित्र को इस सबसे विकास मिलता है तो दूसरी ओर पाठक इस रोचक-वर्णन में खो-सा जाता है। भाई कीरत सिंह की गोद में सिर रख कर प्राण त्यागने की इच्छा, वजीरा सिंह को कीरत सिंह समझने में लहना सिंह एक त्रासद प्रभाव पाठक को देता है। मृत्यु से पूर्व का यह सारा दृश्यविधान अत्यंत मार्मिक बन पड़ा है। वातावरण का अत्यंत गहरे रंगों में सृजन गुलेरी जी की अपनी विशेषता है। कहानी का प्रारंभ अमृतसर की भीड़-भरी सड़कों और गहमागहमी से होता है, युद्ध के मोर्चे पर खाली पडे फौजी घर, खंदक का वातावरण, युद्ध के पैंतरे इन सबके चित्र अंकित करता हुआ कहानीकार इस स्वाभाविक रूप में वातावरण की सृष्टि करता है कि वह हमारी चेतना, संवेदना का अंग ही बन जाता है।

7.7 शब्दावली

- नवाचार - नवीन विचार
- चापल्य - चंचलता
- पटभूमि - पृष्ठभूमि

7.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

(1) 1. 1915
2. समालोचक
3. लहना सिंह
4. सूबेदारनी
5. पंजाब

7.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पब्लिकेशन।
2. सिंह, नामवर, कहानी नयी कहानी, लोकभारती प्रकाशन।

7.10 निबंधात्मक प्रश्न

1. चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' की कहानी कुशलता का शास्त्रीय विवेचन करें।
2. चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालें।
3. ''उसने कहा था'' कहानी की सफलता को अपने शब्दों में व्यख्यायित करें।

इकाई 8 - उसने कहा था : पाठ एवं मूल्यांकन

इकाई की रूपरेखा

8.1 प्रस्तावना
8.2 उद्देश्य
8.3 मूलपाठ
8.4 मूल्यांकन
8.5 सारांश
8.6 शब्दावली
8.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
8.8 संदर्भ ग्रंथ सूची
8.9 निबंधात्मक प्रश्न

8.1 प्रस्तावना

इस इकाई में चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की प्रसिद्ध एवं कालजयी कहानी ''उसने कहा था'' के मूलपाठ का अध्ययन किया जा रहा है। यह कहानी अपने काल के साथ-साथ युवा होती गई है। सन् 1915 में प्रकाशित यह कहानी साहित्याकाश में अपना एक विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया है। गुलेरी जी की साहित्य साधना ''उसने कहा था'' में स्पष्टतः परिलक्षित होती है। प्रथम-दृष्टि-प्रेम तथा साहचर्यजन्य प्रेम दोनों का ही इस प्रेमोदय में सहकार है। बालापन की यह प्रीति इतना अगाध विश्वास लिए है कि 25 वर्षों के अंतराल के पश्चात भी प्रेमिका को यह विश्वास है कि यदि वह अपने उस प्रेमी से, जिसने बचपन में कई बार अपने प्राणों को संकट में डाल कर उसकी जान बचायी है, यदि आंचल पसार कर कुछ मांगेगी तो वह मिलेगा अवश्य; और दूसरी ओर प्रेमी का "उसने कहा था" की बात रखने के लिए प्राण न्योछावर कर वचन निभाना उसके अद्भुत बलिदान और प्रेम पर सर्वस्व अर्पित करने की एक बेमिसाल कहानी है।

8.2 उद्देश्य

- चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कालजयी कहानी ''उसने कहा था'' का मूलपाठ से आप परिचित होंगे।
- ''उसने कहा था'' कहानी की समीक्षा आप कर सकेंगे।
- कहानी के तत्वों से आप परिचित हो सकेंगे।

- पंजाबी पृष्ठभूमि का ज्ञान आप प्राप्त कर सकेंगे।
- विभिन्न शब्दावलियों से परिचित हो सकेंगे।

8.3 मूलपाठ

बड़े-बड़े शहरों के इक्के-गाड़िवालों की जवान के कोड़ों से जिनकी पीठ छिल गई है, और कान पक गए हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि अमृतसर के बम्बूकार्ट वालों की बोली का मरहम लगाएँ। जब बड़े-बड़े शहरों की चौड़ी सड़कों पर घोड़े की पीठ चाबुक से धुनते हुए, इक्केवाले कभी घोड़े की नानी से अपना निकट-सम्बन्ध स्थिर करते हैं, कभी राह चलते पैदलों की आँखों के न होने पर तरस खाते हैं, कभी उनके पैरों की अंगुलियों के पोरे को चींघकर अपने-ही को सताया हुआ बताते हैं, और संसार-भर की ग्लानि, निराशा और क्षोभ के अवतार बने, नाक की सीध चले जाते हैं, तब अमृतसर में उनकी बिरादरी वाले तंग चक्करदार गलियों में, हर-एक लड्ढी वाले के लिए ठहर कर सब्र का समुद्र उमड़ा कर 'बचो खालसाजी।' 'हटो भाई जी। 'ठहरना भाई जी। ''आने दो लाला जी।" 'हटो बाछा।' -- कहते हुए सफेद फेटों, खच्चरों और बत्तकों, गन्नें और खोमचे और भारेवालों के जंगल में से राह खेते हैं। क्या मजाल है कि 'जी' और 'साहब' बिना सुने किसी को हटना पड़े। यह बात नहीं कि उनकी जीभ चलती नहीं, पर मीठी छुरी की तरह महीन मार करती हुई।

यदि कोई बुढ़िया बार-बार चितौनी देने पर भी लीक से नहीं हटती, तो उनकी बचनावली के ये नमूने हैं - 'हट जा जीणे जोगिए'; 'हट जा करमा वालिए'; 'हट जा पुतां प्यारिए'; 'बच जा लम्बी वालिए।' समष्टि में इनके अर्थ हैं, कि तू जीने योग्य है, तू भाग्योंवाली है, पुत्रों को प्यारी है, लम्बी उमर तेरे सामने है, तू क्यों मेरे पहिये के नीचे आना चाहती है? बच जा।

ऐसे बम्बूकार्टवालों के बीच में होकर एक लड़का और एक लड़की चौक की एक दूकान पर आ मिले। उसके बालों और इसके ढीले सुथने से जान पड़ता था कि दोनों सिक्ख हैं। वह अपने मामा के केश धोने के लिए दही लेने आया था, और यह रसोई के लिए बड़ियाँ। दुकानदार एक परदेसी से गुँथ रहा था, जो सेर-भर गीले पापड़ों की गड्डी को गिने बिना हटता न था।

'तेरे घर कहाँ है?'

'मगरे में; और तेरे?'

'माँझे में; यहाँ कहाँ रहती है?'

'अतरसिंह की बैठक में; वे मेरे मामा होते हैं।'

'मैं भी मामा के यहाँ आया हूँ, उनका घर गुरुबाज़ार में हैं।'

इतने में दुकानदार निबटा, और इनका सौदा देने लगा। सौदा लेकर दोनों साथ-साथ चले। कुछ दूर जा कर लड़के ने मुसकराकार पूछा, ''तेरी कुड़माई हो गई?''

इस पर लड़की कुछ आँखें चढ़ा कर 'धत्' कह कर दौड़ गई, और लड़का मुँह देखता रह गया। दूसरे-तीसरे दिन सब्ज़ीवाले के यहाँ, दूधवाले के यहाँ अकस्मात दोनों मिल जाते। महीना-भर यही हाल रहा। दो-तीन बार लड़के ने फिर पूछा, 'तेरी कुड़माई हो गई?' और उत्तर में वही 'धत्' मिला। एक दिन जब फिर लड़के ने वैसे ही हँसी में चिढ़ाने के लिए पूछा तो लड़की, लड़के की संभावना के विरुद्ध बोली, ''हाँ हो गई।''

''कब?''

''कल, देखते नहीं, यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू।''

लड़की भाग गई। लड़के ने घर की राह ली। रास्ते में एक लड़के को मोरी में ढकेल दिया, एक छावड़ीवाले की दिन-भर की कमाई खोई, एक कुत्ते पर पत्थर मारा और एक गोभीवाले के ठेले में दूध उड़ेल दिया। सामने नहा कर आती हुई किसी वैष्णवी से टकरा कर अन्धे की उपाधि पाई। तब कहीं घर पहुँचा।

''राम-राम, यह भी कोई लड़ाई है। दिन-रात खन्दकों में बैठे हड्डियाँ अकड़ गईं। लुधियाना से दस गुना जाड़ा और मेंह और बर्फ़ ऊपर से। पिंडलियों तक कीचड़ में धँसे हुए हैं। ज़मीन कहीं दिखती नहीं; - घंटे-दो-घंटे में कान के परदे फाड़नेवाले धमाके के साथ सारी खन्दक हिल जाती है और सौ-सौ गज धरती उछल पड़ती है। इस गैबी गोले से बचे तो कोई लड़े। नगरकोट का जलजला सुना था, यहाँ दिन में पचीस जलजले होते हैं। जो कहीं खन्दक से बाहर साफा या कुहनी निकल गई, तो चटाक से गोली लगती है। न मालूम बेईमान मिट्टी में लेटे हुए हैं या घास की पत्तियों में छिपे रहते हैं।''

''लहनासिंह, और तीन दिन हैं। चार तो खन्दक में बिता ही दिए। परसों 'रिलीफ' आ जाएगी और फिर सात दिन की छुट्टी। अपने हाथों झटका करेंगे और पेट-भर खाकर सो रहेंगे। उसी फिरंगी मेम के बाग में - मखमल का-सा हरा घास है। फल और दूध की वर्षा कर देती है। लाख कहते हैं, दाम नहीं लेती। कहती है, तुम राजा हो, मेरे मुल्क को बचाने आए हो।''

''चार दिन तक पलक नहीं झँपी। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ा कर मार्च का हुक्म मिल जाय। फिर सात जर्मनों को अकेला मार कर न लौटूँ, तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो। पाजी कहीं के, कलों के घोड़े - संगीन देखते ही मुँह फाड़ देते हैं, और पैर पकड़ने लगते हैं। यों अंधेरे में तीस-तीस मन का गोला फेंकते हैं। उस दिन धावा किया था - चार मील तक एक जर्मन नहीं छोड़ा था। पीछे जनरल ने हट जाने का कमान दिया, नहीं तो...''

''नहीं तो सीधे बर्लिन पहुँच जाते! क्यों?'' सूबेदार हज़ारसिंह ने मुसकराकर कहा, 'लड़ाई के मामले जमादार या नायक के चलाये नहीं चलते। बड़े अफसर दूर की सोचते हैं। तीन सौ मील का सामना है। एक तरफ़ बढ़ गए तो क्या होगा?''

''सूबेदार जी, सच है,'लहनासिंह बोला, 'पर करें क्या? हड्डियों-हड्डियों में तो जाड़ा धँस गया है। सूर्य निकलता नहीं, और खाई में दोनों तरफ़ से चम्बे की बावलियों के से सोते झर रहे हैं। एक धावा हो जाय, तो गरमी आ जाय।''

''उदमी, उठ, सिगड़ी में कोले डाल। वजीरा, तुम चार जने बालटियाँ लेकर खाई का पानी बाहर फेंकों। महासिंह, शाम हो गई है, खाई के दरवाज़े का पहरा बदल ले।'' यह कहते हुए सूबेदार सारी खन्दक में चक्कर लगाने लगे।

वजीरासिंह पलटन का विदूषक था। बाल्टी में गँदला पानी भर कर खाई के बाहर फेंकता हुआ बोला, ''मैं पाधा बन गया हूँ। करो जर्मनी के बादशाह का तर्पण!'' इस पर सब खिलखिला पड़े और उदासी के बादल फट गए।

लहनासिंह ने दूसरी बाल्टी भर कर उसके हाथ में देकर कहा, ''अपनी बाड़ी के खरबूजों में पानी दो। ऐसा खाद का पानी पंजाब-भर में नहीं मिलेगा।''

''हाँ, देश क्या है, स्वर्ग है। मैं तो लड़ाई के बाद सरकार से दस धुमा ज़मीन यहाँ माँग लूँगा और फलों के बूटे लगाऊँगा।''

''लाड़ी होरा को भी यहाँ बुला लोगे? या वही दूध पिलानेवाली फरंगी मेम...''

''चुप कर। यहाँ वालों को शरम नहीं।''

''देश-देश की चाल है। आज तक मैं उसे समझा न सका कि सिख तम्बाखू नहीं पीते। वह सिगरेट देने में हठ करती है, ओठों में लगाना चाहती है, और मैं पीछे हटता हूँ तो समझती है कि राजा बुरा मान गया, अब मेरे मुल्क के लिये लड़ेगा नहीं।''

''अच्छा, अब बोधसिंह कैसा है?''

''अच्छा है।''

''जैसे मैं जानता ही न होऊँ ! रात-भर तुम अपने कम्बल उसे उढ़ाते हो और आप सिगड़ी के सहारे गुज़र करते हो। उसके पहरे पर आप पहरा दे आते हो। अपने सूखे लकड़ी के तख्तों पर उसे सुलाते हो, आप कीचड़ में पड़े रहते हो। कहीं तुम न माँदे पड़ जाना। जाड़ा क्या है, मौत है, और 'निमोनिया' से मरनेवालों को मुरब्बे नहीं मिला करते।''

''मेरा डर मत करो। मैं तो बुलेल की खड्ड के किनारे मरूँगा। भाई कीरतसिंह की गोदी पर मेरा सीर होगा और मेरे हाथ के लगाये हुए आँगन के आम के पेड़ की छाया होगी।''

वजीरासिंह ने त्योरी चढ़ाकर कहा, ''क्या मरने-मारने की बात लगाई है? मरें जर्मनी और तुरक! हाँ भाइयों, कैसे?''

दिल्ली शहर तें पिशोर नुं जांदिए,
कर लेणा लौंगां दा बपार मडिए;
कर लेणा नादेड़ा सौदा अड़िए -
(ओय) लाणा चटाका कदुए नुँ।
क बणाया वे मज़ेदार गोरिये,
हुण लाणा चटाका कदुए नुँ।।

कौन जानता था कि दाढ़ियावाले, घरबारी सिख ऐसा लुच्चों का गीत गाएँगे, पर सारी खन्दक इस गीत से गूँज उठी और सिपाही फिर ताज़े हो गए, मानों चार दिन से सोते और मौज ही करते रहे हों।

दोपहर रात गई है। अन्धेरा है। सन्नाटा छाया हुआ है। बोधासिंह खाली बिसकुटों के तीन टिनों पर अपने दोनों कम्बल बिछा कर और लहनासिंह के दो कम्बल और एक बरानकोट ओढ़ कर सो रहा है। लहनासिंह पहरे पर खड़ा हुआ है। एक आँख खाई के मुँह पर है और एक बोधासिंह के दुबले शरीर पर। बोधासिंह कराहा।

''क्यों बोधा भाई, क्या है?''

''पानी पिला दो।''

लहनासिंह ने कटोरा उसके मुँह से लगा कर पूछा, 'कहो कैसे हो? ''पानी पी कर बोधा बोला, कँपनी छुट रही है। रोम-रोम में तार दौड़ रहे हैं। दाँत बज रहे हैं।''

''अच्छा, मेरी जरसी पहन लो!''

''और तुम?''

''मेरे पास सिगड़ी है और मुझे गर्मी लगती है। पसीना आ रहा है।''

''ना, मैं नहीं पहनता। चार दिन से तुम मेरे लिए...''

''हाँ, याद आई। मेरे पास दूसरी गरम जरसी है। आज सबेरे ही आई है। विलायत से बुन-बुनकर भेज रही हैं मेमें, गुरु उनका भला करें।'' यों कह कर लहना अपना कोट उतार कर जरसी उतारने लगा।

''सच कहते हो?''

''और नहीं झूठ?'' यों कह कर नहीं करते बोधा को उसने जबरदस्ती जरसी पहना दी और आप खाकी कोट और जीन का कुरता भर पहन-कर पहरे पर आ खड़ा हुआ। मेम की जरसी की कथा केवल कथा थी।

आधा घण्टा बीता। इतने में खाई के मुँह से आवाज़ आई, ''सूबेदार हज़ारासिंह।''

''कौन लपटन साहब? हुक्म हुज़ूर!'' कह कर सूबेदार तन कर फौजी सलाम करके सामने हुआ।

''देखो, इसी समय धावा करना होगा। मील भर की दूरी पर पूरब के कोने में एक जर्मन खाई है। उसमें पचास से ज़ियादह जर्मन नहीं हैं। इन पेड़ों के नीचे-नीचे दो खेत काट कर रास्ता है। तीन-चार घुमाव हैं। जहाँ मोड़ है वहाँ पन्द्रह जवान खड़े कर आया हूँ। तुम यहाँ दस आदमी छोड़ कर सब को साथ ले उनसे जा मिलो। खन्दक छीन कर वहीं, जब तक दूसरा हुक्म न मिले, डटे रहो। हम यहाँ रहेगा।''

''जो हुक्म।''

चुपचाप सब तैयार हो गए। बोधा भी कम्बल उतार कर चलने लगा। तब लहनासिंह ने उसे रोका। लहनासिंह आगे हुआ तो बोधा के बाप सूबेदार ने उँगली से बोधा की ओर इशारा किया। लहनासिंह समझ कर चुप हो गया। पीछे दस आदमी कौन रहें, इस पर बड़ी हुज़्ज़त हुई। कोई रहना न चाहता था। समझा-बुझाकर सूबेदार ने मार्च किया। लपटन साहब लहना की सिगड़ी के पास मुँह फेर कर खड़े हो गए और जेब से सिगरेट निकाल कर सुलगाने लगे। दस मिनट बाद उन्होंने लहना की ओर हाथ बढ़ा कर कहा, 'लो तुम भी पियो।'

आँख मारते-मारते लहनासिंह सब समझ गया। मुँह का भाव छिपा कर बोला, 'लाओ साहब।' हाथ आगे करते ही उसने सिगड़ी के उजाले में साहब का मुँह देखा। बाल देखे। तब उसका माथा ठनका। लपटन साहब के पट्टियों वाले बाल एक दिन में ही कहाँ उड़ गए और उनकी जगह कैदियों से कटे बाल कहाँ से आ गए?'

शायद साहब शराब पिए हुए हैं और उन्हें बाल कटवाने का मौका मिल गया है? लहनासिंह ने जाँचना चाहा। लपटन साहब पाँच वर्ष से उसकी रेजिमेंट में थे।

'क्यों साहब, हमलोग हिन्दुस्तान कब जाएँगे?'

'लड़ाई ख़त्म होने पर। क्यों, क्या यह देश पसन्द नहीं?'

'नहीं साहब, शिकार के वे मज़े यहाँ कहाँ? याद है, पारसाल नकली लड़ाई के पीछे हम आप जगाधरी जिले में शिकार करने गए थे -

हाँ-हाँ -वहीं जब आप खोते पर सवार थे और और आपका खानसामा अब्दुल्ला रास्ते के एक मन्दिर में जल चढ़ने को रह गया था? बेशक पाजी कहीं का - सामने से वह नील गाय निकली कि ऐसी बड़ी मैंने कभी न देखी थीं। और आपकी एक गोली कन्धे में लगी और पुट्ठे में निकली। ऐसे अफ़सर के साथ शिकार खेलने में मज़ा है। क्यों साहब, शिमले से तैयार होकर उस नील गाय का सिर आ गया था न? आपने कहा था कि रेजमेंट की मैस में लगाएँगे। हाँ पर मैंने वह विलायत भेज दिया - ऐसे बड़े-बड़े सींग! दो-दो फुट के तो होंगे?'

'हाँ, लहनासिंह, दो फुट चार इंच के थे। तुमने सिगरेट नहीं पिया?'

'पीता हूँ साहब, दियासलाई ले आता हूँ' कह कर लहनासिंह खन्दक में घुसा। अब उसे सन्देह नहीं रहा था। उसने झटपट निश्चय कर लिया कि क्या करना चाहिए।

अंधेरे में किसी सोने वाले से वह टकराया।

'कौन? वजीरसिंह?'

'हाँ, क्यों लहना? क्या कयामत आ गई? ज़रा तो आँख लगने दी होती?'

'होश में आओ। कयामत आई और लपटन साहब की वर्दी पहन कर आई है।'

'क्या?'

'लपटन साहब या तो मारे गए हैं या कैद हो गए हैं। उनकी वर्दी पहन कर यह कोई जर्मन आया है। सूबेदार ने इसका मुँह नहीं देखा। मैंने देखा और बातें की है। सोहरा साफ उर्दू बोलता है, पर किताबी उर्दू। और मुझे पीने को सिगरेट दिया है?'

'तो अब!'

'अब मारे गए। धोखा है। सूबेदार होरा, कीचड़ में चक्कर काटते फिरेंगे और यहाँ खाई पर धावा होगा। उठो, एक काम करो। पल्टन के पैरों के निशान देखते-देखते दौड़ जाओ। अभी बहुत दूर न गए होंगे।

सूबेदार से कहो एकदम लौट आयें। खन्दक की बात झूठ है। चले जाओ, खन्दक के पीछे से निकल जाओ। पत्ता तक न खड़के। देर मत करो।'

'हुकुम तो यह है कि यहीं-'

'ऐसी तैसी हुकुम की! मेरा हुकुम... जमादार लहनासिंह जो इस वक्त यहाँ सब से बड़ा अफ़सर है, उसका हुकुम है। मैं लपटन साहब की ख़बर लेता हूँ।'

'पर यहाँ तो तुम आठ है।'

'आठ नहीं, दस लाख। एक-एक अकालिया सिख सवा लाख के बराबर होता है। चले जाओ।'

लौट कर खाई के मुहाने पर लहनासिंह दीवार से चिपक गया। उसने देखा कि लपटन साहब ने जेब से बेल के बराबर तीन गोले निकाले। तीनों को जगह-जगह खन्दक की दीवारों में घुसेड़ दिया और तीनों में एक तार-सा बाँध दिया। तार के आगे सूत की एक गुत्थी थी, जिसे सिगड़ी के पास रखा। बाहर की तरफ़ जाकर एक दियासलाई जला कर गुत्थी पर रखने...

बिजली की तरह दोनों हाथों से उल्टी बन्दुक को उठा कर लहनासिंह ने साहब की कुहनी पर तान कर दे मारा। धमाके के साथ साहब के हाथ से दियासलाई गिर पड़ी। लहनासिंह ने एक कुन्दा साहब की गर्दन पर मारा और साहब 'आँख! मीन गौट्ट' कहते हुए चित्त हो गए। लहनासिंह ने तीनों गोले बीन कर खन्दक के बाहर फेंके और साहब को घसीट कर सिगड़ी के पास लिटाया। जेबों की तलाशी ली। तीन-चार लिफ़ाफ़े और एक डायरी निकाल कर उन्हें अपनी जेब के हवाले किया।

साहब की मूर्छा हटी। लहनासिंह हँस कर बोला, 'क्यों लपटन साहब? मिजाज़ कैसा है? आज मैंने बहुत बातें सीखीं। यह सीखा कि सिख सिगरेट पीते हैं। यह सीखा कि जगाधरी के जिले में नील गायें होती हैं और उनके दो फुट चार इंच के सींग होते हैं। यह सीखा कि मुसलमान खानसामा मूर्तियों पर जल चढ़ाते हैं।

और लपटन साहब खोते पर चढ़ते हैं। पर यह तो कहो, ऐसी साफ़ उर्दू कहाँ से सीख आए? हमारे लपटन साहब तो बिन 'डेम' के पाँच लफ्ज़ भी नहीं बोला करते थे।'

लहना ने पतलून के जेबों की तलाशी नहीं ली थी। साहब ने मानो जाड़े से बचने के लिए, दोनों हाथ जेबों में डाले।

लहनासिंह कहता गया, 'चालाक तो बड़े हो पर माँझे का लहना इतने बरस लपटन साहब के साथ रहा है। उसे चकमा देने के लिए चार आँखें चाहिए। तीन महिने हुए एक तुरकी मौलवी मेरे गाँव आया था। औरतों को बच्चे होने के ताबीज़ बाँटता था और बच्चों को दवाई देता था। चौधरी के बड़ के नीचे मंजा बिछा कर हुक्का पीता रहता था और कहता था कि जर्मनीवाले बड़े पंडित हैं। वेद पढ़-पढ़ कर उसमें से विमान चलाने की विद्या जान गए हैं। गौ को नहीं मारते। हिन्दुस्तान में आ जाएँगे तो गोहत्या बन्द कर देंगे। मंडी के बनियों को बहकाता कि डाकखाने से रुपया निकाल लो। सरकार का राज्य जानेवाला है। डाक-बाबू पोल्हूराम भी डर गया था। मैंने मुल्ला जी की दाढ़ी मूड़ दी थी। और गाँव से बाहर निकल कर कहा था कि जो मेरे गाँव में अब पैर रक्खा तो...'

साहब की जेब में से पिस्तौल चला और लहना की जाँघ में गोली लगी। इधर लहना की हैनरी मार्टिन के दो फायरों ने साहब की कपाल-क्रिया कर दी। धड़ाका सुन कर सब दौड़ आए। बोधा चिल्लाया, 'क्या है?'

लहनासिंह ने उसे यह कह कर सुला दिया कि 'एक हड़का हुआ कुत्ता आया था, मार दिया' और, औरों से सब हाल कह दिया। सब बन्दूकें लेकर तैयार हो गए। लहना ने साफा फाड़ कर घाव के दोनों तरफ़ पट्टियाँ कस कर बाँधी। घाव मांस में ही था। पट्टियों के कसने से लहू निकलना बन्द हो गया।

इतने में सत्तर जर्मन चिल्लाकर खाई में घुस पड़े। सिक्खों की बन्दूकों की बाढ़ ने पहले धावे को रोका। दूसरे को रोका। पर यहाँ थे आठ (लहनासिंह तक-तक कर मार रहा था - वह खड़ा था, और, और लेटे हुए थे) और वे सत्तर। अपने मुर्दा भाइयों के शरीर पर चढ़ कर जर्मन आगे घुसे आते थे। थोड़े से मिनिटों में वे...

अचानक आवाज़ आई 'वाहे गुरु जी की फतह? वाहे गुरु जी का खालसा!!' और धड़ाधड़ बन्दूकों के फायर जर्मनों की पीठ पर पड़ने लगे। ऐन मौके पर जर्मन दो चक्की के पाटों के बीच में आ गए। पीछे से सूबेदार हज़ारसिंह के जवान आग बरसाते थे और सामने लहनासिंह के साथियों के संगीन चल रहे थे। पास आने पर पीछे वालों ने भी संगीन पिरोना शुरू कर दिया।

एक किलकारी और... 'अकाल सिक्खाँ दी फौज आई! वाहे गुरु जी दी फतह! वाहे गुरु जी दा खालसा! सत श्री अकालपुरुख!!!' और लड़ाई ख़तम हो गई। तिरेसठ जर्मन या तो खेत रहे थे या कराह रहे थे। सिक्खों में पन्द्रह के प्राण गए। सूबेदार के दाहिने कन्धे में से गोली आरपार निकल गई। लहनासिंह की पसली में एक गोली लगी। उसने घाव को खन्दक की गीली मट्टी से पूर लिया और बाकी का साफा कस कर कमरबन्द की तरह लपेट लिया। किसी को ख़बर न हुई कि लहना को दूसरा घाव - भारी घाव लगा है।

लड़ाई के समय चाँद निकल आया था, ऐसा चाँद, जिसके प्रकाश से संस्कृत-कवियों का दिया हुआ 'क्षयी' नाम सार्थक होता है। और हवा ऐसी चल रही थी जैसी वाणभट्ट की भाषा में 'दन्तवीणोपदेशाचार्य' कहलाती। वजीरासिंह कह रहा था कि कैसे मन-मन भर फ्रांस की भूमि मेरे बूटों से चिपक रही थी, जब मैं दौड़ा-दौड़ा सूबेदार के पीछे गया था। सूबेदार लहनासिंह से सारा हाल सुन और काग़ज़ात पाकर वे उसकी तुरत-बुद्धि को सराह रहे थे और कह रहे थे कि तू न होता तो आज सब मारे जाते।

इस लड़ाई की आवाज़ तीन मील दाहिनी ओर की खाई वालों ने सुन ली थी। उन्होंने पीछे टेलीफोन कर दिया था। वहाँ से झटपट दो डाक्टर और दो बीमार ढोने की गाडियाँ चलीं, जो कोई डेढ़ घण्टे के अन्दर-अन्दर आ पहुँची। फील्ड अस्पताल नज़दीक था। सुबह होते-होते वहाँ पहुँच जाएँगे, इसलिए मामूली पट्टी बाँधकर एक गाड़ी में घायल लिटाए गए और दूसरी में लाशें रक्खी गई। सूबेदार ने लहनासिंह की जाँघ में पट्टी बँधवानी चाही। पर उसने यह कह कर टाल दिया कि थोड़ा घाव है सबेरे देखा जायेगा। बोधासिंह ज्वर में बर्रा रहा था। वह गाड़ी में लिटाया गया। लहना को छोड़ कर सूबेदार जाते नहीं थे। यह देख लहना ने कहा, 'तुम्हें बोधा की कसम है, और सूबेदारनी जी की सौगन्ध है जो इस गाड़ी में न चले जाओ।'

'और तुम?'

'मेरे लिए वहाँ पहुँचकर गाड़ी भेज देना, और जर्मन मुरदों के लिए भी तो गाड़ियाँ आती होंगी। मेरा हाल बुरा नहीं है। देखते नहीं, मैं खड़ा हूँ? वजीरासिंह मेरे पास है ही।'
'अच्छा, पर...'

'बोधा गाड़ी पर लेट गया? भला। आप भी चढ़ जाओ। सुनिये तो, सूबेदारनी होरां को चिट्ठी लिखो, तो मेरा मत्था टेकना लिख देना। और जब घर जाओ तो कह देना कि मुझसे जो उसने कहा था वह मैंने कर दिया।'

गाड़ियाँ चल पड़ी थीं। सूबेदार ने चढ़ते-चढ़ते लहना का हाथ पकड़ कर कहा, 'तैने मेरे और बोधा के प्राण बचाये हैं। लिखना कैसा? साथ ही घर चलेंगे। अपनी सूबेदारनी को तू ही कह देना। उसने क्या कहा था?'
'अब आप गाड़ी पर चढ़ जाओ। मैंने जो कहा, वह लिख देना, और कह भी देना।'
गाड़ी के जाते लहना लेट गया। 'वजीरा पानी पिला दे, और मेरा कमरबन्द खोल दे। तर हो रहा है।'

मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ़ हो जाती है। जन्म-भर की घटनायें एक-एक करके सामने आती हैं। सारे दृश्यों के रंग साफ़ होते हैं। समय की धुन्ध बिल्कुल उन पर से हट जाती है।

लहनासिंह बारह वर्ष का है। अमृतसर में मामा के यहाँ आया हुआ है। दहीवाले के यहाँ, सब्ज़ीवाले के यहाँ, हर कहीं, उसे एक आठ वर्ष की लड़की मिल जाती है। जब वह पूछता है, तेरी कुड़माई हो गई? तब 'धत्' कह कर वह भाग जाती है। एक दिन उसने वैसे ही पूछा, तो उसने कहा, 'हाँ, कल हो गई, देखते नहीं यह रेशम के फूलोंवाला सालू" सुनते ही लहनासिंह को दुरूख हुआ। क्रोध हुआ। क्यों हुआ?
'वजीरासिंह, पानी पिला दे।'

पचीस वर्ष बीत गए। अब लहनासिंह नं ७७ रैफल्स में जमादार हो गया है। उस आठ वर्ष की कन्या का ध्यान ही न रहा। न-मालूम वह कभी मिली थी, या नहीं। सात दिन की छुट्टी लेकर ज़मीन के मुकदमें की पैरवी करने वह अपने घर गया। वहाँ रेजिमेंट के अफसर की चिट्ठी मिली कि फौज लाम पर जाती है, फौरन चले आओ। साथ ही सूबेदार हज़ारासिंह की चिट्ठी मिली कि मैं और बोधसिंह भी लाम पर जाते हैं। लौटते हुए हमारे घर होते जाना। साथ ही चलेंगे। सूबेदार का गाँव रास्ते में पड़ता था और सूबेदार उसे बहुत चाहता था। लहनासिंह सूबेदार के यहाँ पहुँचा।

जब चलने लगे, तब सूबेदार बेढे में से निकल कर आया। बोला, 'लहना, सूबेदारनी तुमको जानती हैं, बुलाती हैं। जा मिल आ।' लहनासिंह भीतर पहुँचा। सूबेदारनी मुझे जानती हैं? कब से? रेजिमेंट के क्वार्टरों में तो कभी सूबेदार के घर के लोग रहे नहीं। दरवाज़े पर जा कर 'मत्था टेकना' कहा। असीस सुनी। लहनासिंह चुप।
मुझे पहचाना?'
'नहीं।'

''तेरी कुड़माई हो गई -धत् -कल हो गई- देखते नहीं, रेशमी बूटोंवाला सालू -अमृतसर में -"
भावों की टकराहट से मूर्छा खुली। करवट बदली। पसली का घाव बह निकला।
''वजीरा, पानी पिला।" 'उसने कहा था।'

स्वप्न चल रहा है। सूबेदारनी कह रही है, 'मैंने तेरे को आते ही पहचान लिया। एक काम कहती हूँ। मेरे तो भाग फूट गए। सरकार ने बहादुरी का खिताब दिया है, लायलपुर में ज़मीन दी है, आज नमक-हलाली का मौका आया है। पर सरकार ने हम तीमियों की एक घंघरिया पल्टन क्यों न बना दी, जो मैं भी सूबेदार जी के साथ चली जाती? एक बेटा है। फौज में भर्ती हुए उसे एक ही बरस हुआ। उसके पीछे चार और हुए, पर एक भी नहीं जिया।" सूबेदारनी रोने लगी। ''अब दोनों जाते हैं। मेरे भाग! तुम्हें याद है, एक दिन टाँगेवाले का घोड़ा दहीवाले की दूकान के पास बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाये थे, आप घोड़े की लातों में चले गए थे, और मुझे उठा-कर दूकान के तख्ते पर खड़ा कर दिया था। ऐसे ही इन दोनों को बचाना। यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे आँचल पसारती हूँ।"

रोती -रोती सूबेदारनी ओबरी में चली गई। लहना भी आँसू पोंछता हुआ बाहर आया।

''वजीरा सिंह, पानी पिला" ... 'उसने कहा था।'

लहना का सिर अपनी गोद में रक्खे वजीरासिंह बैठा है। जब माँगता है, तब पानी पिला देता है। आध घण्टे तक लहना चुप रहा, फिर बोला, 'कौन! कीरतसिंह?'

वजीरा ने कुछ समझकर कहा, 'हाँ।'

'भइया, मुझे और ऊँचा कर ले। अपने पट्ट पर मेरा सिर रख ले।' वजीरा ने वैसे ही किया।

'हाँ, अब ठीक है। पानी पिला दे। बस, अब के हाड़ में यह आम खूब फलेगा। चाचा-भतीजा दोनों यहीं बैठ कर आम खाना। जितना बड़ा तेरा भतीजा है, उतना ही यह आम है। जिस महीने उसका जन्म हुआ था, उसी महीने में मैंने इसे लगाया था।'

वजीरासिंह के आँसू टप-टप टपक रहे थे।

कुछ दिन पीछे लोगों ने अख़बारों में पढ़ा... फ्रान्स और बेलजियम... 68 वीं सूची... मैदान में घावों से मरा... नं 77 सिख राइफल्स जमादार लहनासिंह।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश : सत्य/असत्य का चुनाव कीजिए।

1. उसने कहा था का प्रकाशन सन् 1915 में हुआ था।
2. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने नागरी प्रचारिणी पत्रिका का संपादन किया था।
3. 'पुरानी हिंदी' के लेखक गुलेरी जी हैं।
4. उसने कहा था की पृष्ठभूमि पंजाब प्रान्त से जुड़ी हुई है।
5. गुलेरी जी को कई भाषाओं का ज्ञान था।

8.4 मूल्यांकन

पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने "उसने कहा था" कहानी की रचना कर न केवल हिंदी कहानी अपितु विश्व कथा-साहित्य को समृद्ध किया है। वास्तविकता यह है कि उनकी प्रसिद्धि "उसने कहा था" के द्वारा ही हुई। "उसने कहा था" प्रेम, शौर्य और बलिदान की अद्भुत प्रेम-कथा है। प्रथम विश्व युद्ध के समय में लिखी गई यह प्रेम कथा कई मायनों में अप्रतिम है। प्रथम-दृष्टि-प्रेम तथा साहचर्यजन्य प्रेम दोनों का ही इस प्रेमोदय में सहकार है। बालापन की यह प्रीति इतना अगाध विश्वास लिए है कि 25 वर्षो के अंतराल के पश्चात भी प्रेमिका को यह विश्वास है कि यदि वह अपने उस प्रेमी से, जिसने बचपन में कई बार अपने प्राणों को संकट में डाल कर उसकी जान बचायी है, यदि आंचल पसार कर कुछ मांगेगी तो वह मिलेगा अवश्य। "उसने कहा था" का कथा-विन्यास अत्यंत विराट फलक पर किया गया है। कहानी जीवन के किसी प्रसंग विशेष, समस्या विशेष या चरित्र की किसी एक विशेषता को ही प्रकाशित करती है, उसके संक्षिप्त कलेवर में इससे अधिक की गुंजाइश नहीं होती है। किंतु यह कहानी लहना सिंह के चारित्रिक विकास में उसकी अनेक विशेषताओं को प्रकाशित करती हुई उसका संपूर्ण जीवन-वृत्त प्रस्तुत करती है, बारह वर्ष की अवस्था से लेकर प्रायः सैंतीस वर्ष, उसकी मृत्युपर्यंत, तक की कथा-नायक का संपूर्ण जीवन इस रूप में चित्रित होता है कि कहानी अपनी परंपरागत रूप-पद्धति (फॉर्म) को चुनौती देकर एक महाकाव्यात्मक औदात्य ग्रहण कर लेती है। वस्तुतः पांच खण्डों में कसावट से बुनी गई यह कहानी सहज ही औपन्यासिक विस्तार से युक्त है किंतु अपनी कहन की कुशलता से कहानीकार इसे एक कहानी ही बनाये रखता है। दूसरे, तीसरे और चौखे खण्ड में विवेच्य कहानी में युद्ध-कला, सैन्य-विज्ञान (क्राफ्ट ऑफ वार) और खंदकों में सिपाहियों के रहने-सहने के ढंग का जितना प्रामाणिक, सूक्ष्म तथा जीवंत चित्रण इस कहानी में हुआ है, वैसा हिंदी कथा-साहित्य में विरल है।

लहना सिंह जैसे सीधे-साधे सिपाही, जमादार लहना सिंह की प्रत्युपन्नमति, कार्य करने की फुर्ती, संकट के समय अपने साथियों का नेतृत्व, जर्मन लपटैन (लेफ्टिनेंट) को बातों-बातों में बुद्धू बना कर उसकी असलियत जान लेना, यदि एक ओर इस चरित्र को इस सबसे विकास मिलता है तो दूसरी ओर पाठक इस रोचक-वर्णन में खो-सा जाता है। भाई कीरत सिंह की गोद में सिर रख कर प्राण त्यागने की इच्छा, वजीरा सिंह को कीरत सिंह समझने में लहना सिंह एक त्रासद प्रभाव पाठक को देता है। मृत्यु से पूर्व का यह सारा दृश्यविधान अत्यंत मार्मिक बन पड़ा है।

वातावरण का अत्यंत गहरे रंगों में सृजन गुलेरी जी की अपनी विशेषता है। कहानी का प्रारंभ अमृतसर की भीड़-भरी सड़कों और गहमागहमी से होता है, युद्ध के मोर्चे पर खाली पड़े फौजी घर, खंदक का वातावरण, युद्ध के पैंतरे इन सबके चित्र अंकित करता हुआ कहानीकार इस स्वाभाविक रूप में वातावरण की सृष्टि करता है कि वह हमारी चेतना, संवेदना का अंग ही बन जाता है।

8.5 सारांश

यह देशज वातावरण से ओतप्रोत कहानी चंद्रधर शर्मा की अनुपम कृति सिद्ध हुई है। इस कहानी ने देशप्रेम के साथ-साथ प्रेयसी के प्रति प्रतिबद्धता का अनूठा संगम है। देश की रक्षा के साथ प्रेम के निशानी की रक्षा करने की अतुलनीय सीख यह कहानी देती है। कहानी में कौतूहलता, संघर्ष एवं दुःखान्त है। कहानी को पढ़कर पाठक का निश्चित ही हृदय पसीज जाता है। इस कहानी को पढ़ने के पश्चात् आप जान चुके होंगे कि –

- कहानी कहने की शैली
- आदर्श प्रेम के लिए त्याग
- राष्ट्रप्रेम के लिए प्राणोत्तसर्ग की भावना
- युद्ध कालीन परिस्थितियों का ध्यान
- पंजाबी लोक रीति का ज्ञान

8.6 शब्दावली

- बम्बूकार्ट - रंगरूट
- कुड़माई - शादी
- बर्रा - आग की गर्मी
- गंदला - गंदा

8.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. सत्य 2. सत्य 3. सत्य 4. सत्य 5. सत्य

8.8 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिंह, विजय पाल, सं0, कथा एकादशी।
2. शुक्ल, रामचन्द्र – हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा।

8.9 निबंधात्मक प्रश्न

1. कहानी ''उसने कहा था'' का अभिप्राय अपने शब्दों में लिखिये।
2. लहनासिंह का चरित्र चित्रण कीजिए।
3. ''उसने कहा था'' की भाषा शैली पर प्रकाश डालिये।